
₹25
हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कादम्बिनी
अप्रैल 2017

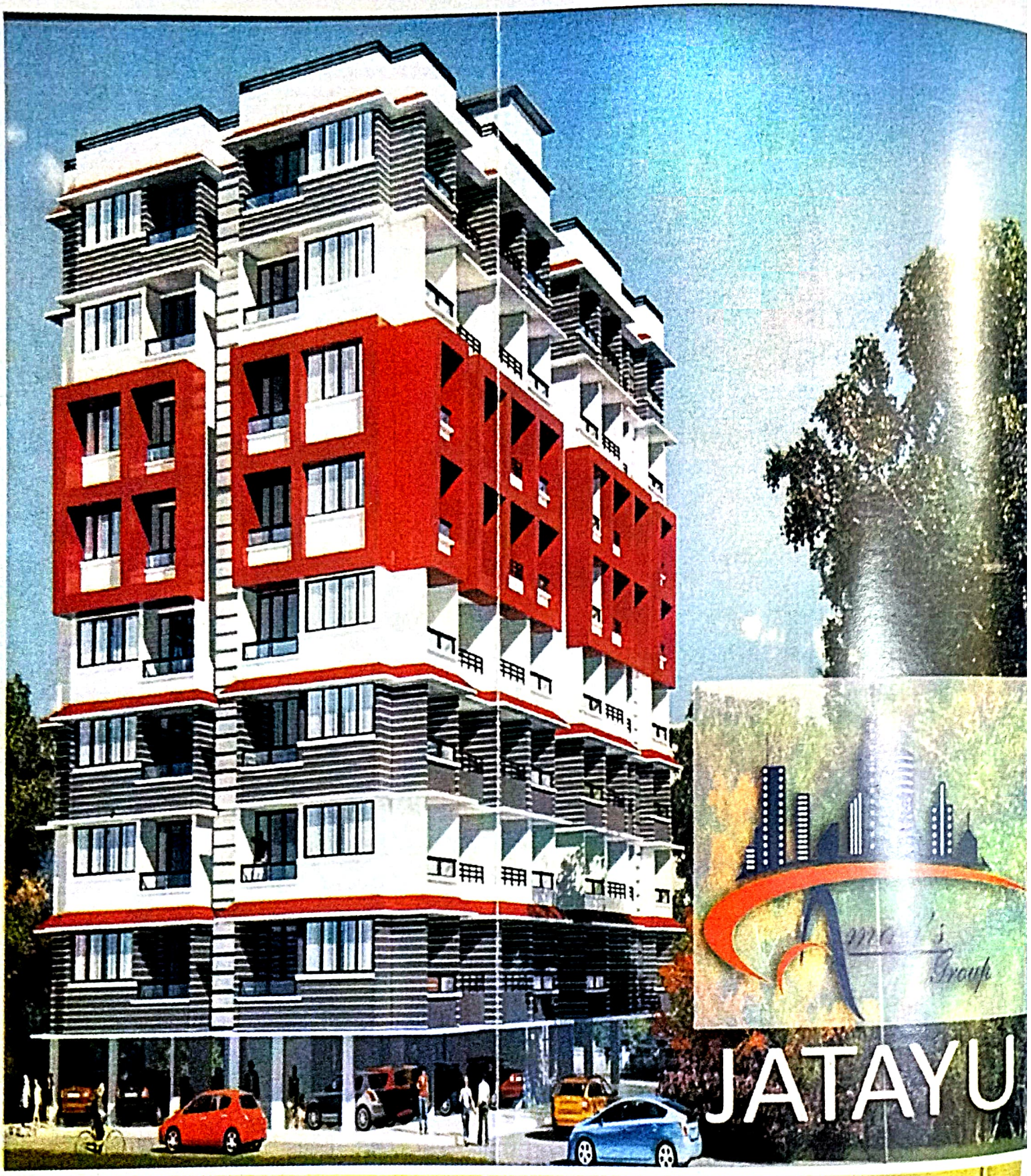

Aman's Group

Shop No.3- 4, Ground Floor, Karma Empress Bldg., Near K.T.C Bus Stand, Vasco-da-Gama, Goa.

Ph: 0832 2500823 / 2514134 Cell: 9326127351 / 9823577351

Sales: 9637888409 Email: amanbuilders4u@gmail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 26 अंक 10 अप्रैल 2017

जो मुसीबत तुम्हें पहुंची वह तो तुम्हारे अपने हाथों की कमाई से पहुंची और बहुत कुछ तो वह माफ़ कर देता है । **–क़ुरआन**

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

मज़लूमों[1] की आहो-फ़ुग़ां[2] पर बरहम[3] क्यों हो जाते हो
शौक़ नहीं रोने का हमको, तुम ही तो रुलवाते हो

हम भी तो इन्सान हैं आख़िर, हम से ये नफ़रत कैसी ?
सबसे लिपट कर मिलने वालो, हम से क्यों कतराते हो

हमसायों[4] से, हमवतनों से लाशें पूछा करती हैं
प्यार की बातें करने वालो, क़ातिल[5] क्यों बन जाते हो

पीते थे जब तक पीते थे, छोड़ी तो बस छोड़ ही दी
तुम भी बहकना छोड़ो यारो, हमको क्यों बहकाते हो

हम तो चलो जज़्बाती ठहरे, अपनी कहो दानिशमन्दो[6] !
ठेस अना[7] को जब लगती है, तुम पागल हो जाते हो

हमने तुम्हारे हाथों से भी सर पे कफ़न बंधवाया था
तुम भी सुर्ख़-सवेरे वालो[8] दरबारी हो जाते हो

देखो ये पिन्दारे-तक़वा[9] ठीक नहीं है मौलाना !
शेअ्रो-अदब का ज़िक्र छिड़े तो चीं-ब-जबीं[10] हो जाते हो

कोमल-कोमल ग़ज़लों में तूफ़ानों के पैग़ाम 'हफ़ीज़'
मीठी-मीठी बातों से भी तुम तो आग लगाते हो ।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

1. पीड़ितों 2. विलाप, रोने-धोने 3. नाराज़, अप्रसन्न 4. पड़ोसियों 5. हत्यारे 6. अक़लमन्दो, बुद्धिमानो 7. स्वाभिमान, अहं 8. साम्यवादी, कम्युनिस्ट 9. धर्मनिष्ठा पर गर्व 10. अप्रसन्न, नाखुश



कहां क्या है ?

	–हफ़ीज़ मेरठी	
ग़ज़ल		3
क़ुरआन ज्योति		5
अल्लाह से अच्छी आशा (हदीस मंजरी)		6
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का निष्कलंक जीवन (संपादकीय)		7
रब की पहचान (आपके पत्र)		10
क़ुरआन में एकेश्वरवाद की शिक्षा (आस्था)	–संपादन प्रभाग	13
हज़रत ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)		
	–तालिब हाशमी	17
इस्लाम की धारणाएं और शिक्षाएं (सवाल-जवाब)		21
देश को अब नैतिक क्रांति की ज़रूरत (दृष्टिकोण)	–शबाना अली	24
दोहे	–रोहित यादव	25
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की न्याय प्रणाली (विशेष आयोजन)		
	–अब्दुल अज़ीज़	26-27
प्रकाश स्तंभ हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) (विशेष आयोजन)		
	–विद्या प्रकाश	29
अंतिम निर्णय (कहानी)	–राजेन्द्र परदेसी	31
रिक्शा वाला (कहानी)	–मुहम्मद शमशाद	34
नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में योगदान (ज्ञान-विज्ञान और मुसलमान)		
	–डॉ॰ मुहम्मद अहमद	36
मूल्य आधारित राजनीति की आवश्यकता (ज्वलंत सामयिक)		
	–अबू नस्र फ़ारूक़	37
ग़ज़ल	–भानुमित्र	39
टीपू का तोपख़ाना क्यों हटाया जा रहा है ?	–इमरान क़ुरैशी	40
हलब-सीरिया का बदनसीब शहर	–समीउल्लाह मलिक	41
इस्लाम के सुखद अनुभव (आपबीती)	–सारा जोज़फ़	43
महाबचत और छूट की लूट (अर्थ उपभोक्ता)	–चांद ख़ां रहमानी	45
हिन्दी ग़ज़ल के हीरे	–संकलित	46
वायु प्रदूषण की भेंट चढ़ती ज़िन्दगी (पर्यावरण)	–रीता सिंह	47
आश्चर्यजनक किन्तु सत्य (बालवीथी)	–जागृति श्रीवास्तव	49

कुरआन ज्योति

(21) लोगों का हाल यह है कि मुसीबत के बाद जब हम उनको रहमत का मज़ा चखाते हैं तो तुरंत ही वे हमारी निशानियों के मामले में चालबाज़ियां शुरू कर देते हैं ।[29] इनसे कहो, "अल्लाह अपनी चाल में तुमसे ज़्यादा तेज़ है । उसके फ़रिश्ते तुम्हारी सब मक्कारियों को लिख रहे हैं ।"[30]

(22) वह अल्लाह ही है जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी (थल-जल) में चलाता है । चुनांचे जब तुम नावों में सवार होकर अनुकूल वायु पर हर्ष कर रहे होते हो और फिर यकायक प्रतिकूल वायु का ज़ोर होता है और हर ओर से मौजों के थपेड़े लगते हैं और यात्री समझ लेते हैं कि तूफ़ान में घिर गए, उस समय सब अपने दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस करके उससे दुआएं मांगते हैं कि "अगर तूने हमें इस बला से निजात दे दी तो हम कृतज्ञ दास बनेंगे ।"[31]

–क़ुरआन, 10 : 21,22

---

29. यह फिर उसी अकाल की ओर संकेत है जिसका उल्लेख आयत 11-12 में हो चुका है । अर्थ यह है कि तुम निशानी आख़िर किस मुंह से मांगते हो । अभी जो अकाल तुम पर गुज़रा है, उसमें तुम अपने उन माबूदों (उपास्यों) से निराश हो गये थे जिन्हें तुमने अल्लाह के यहां अपना सिफ़ारिशी ठहरा रखा था और जिनके बारे में कहा करते थे कि अमुक आस्ताने की नियाज़ तो अचूक वाण है और अमुक दरगाह पर चढ़ावा चढ़ाने की देर है कि मुराद पूरी होती है । तुमने देख लिया कि इन तथाकथित उपास्यों के हाथ में कुछ नहीं है और सारे अधिकारों का स्वामी केवल अल्लाह है । इसी कारण तो अंततः तुम अल्लाह ही से दुआएं मांगने लगे थे । क्या यह पर्याप्त निशानी न थी कि तुम्हें उस शिक्षा के सत्य पर होने का विश्वास हो जाता जो मुहम्मद (सल्ल॰) तुमको दे रहे हैं ? मगर इस निशानी को देखकर तुमने क्या किया ? ज्यों ही कि अकाल दूर हुआ और रहमत की वर्षा ने तुम्हारी विपदा का अंत कर दिया, तुमने उस बला के आने और फिर उसके दूर होने के बारे में हज़ार क़िस्म की बातें बनानी शुरू कर दीं ताकि तौहीद के मानने से बच सको और अपने शिर्क पर जमे रह सको । अब जिन लोगों ने अपनी अन्तरात्मा को इस स्तर पर ख़राब कर लिया हो, उन्हें आख़िर कौन-सी निशानी दिखायी जाए ? और उसके दिखाने का लाभ क्या है ?

30. अल्लाह की चाल से तात्पर्य यह है कि अगर तुम सच्चाई को नहीं मानते और उसके अनुसार अपना रवैया ठीक नहीं करते तो वह तुम्हें इस विद्रोहपूर्ण रवैये पर चलते रहने की छूट दे देगा । तुम्हें जीते जी अपनी रोज़ी और अपनी नेमत देता रहेगा जिससे तुम्हारा जीवन-मद यूं ही तुम्हें मस्त किये रखेगा और इस मस्ती के दौरान में जो कुछ तुम करोगे, वह सब अल्लाह के फ़रिश्ते ख़ामोशी के साथ बैठे लिखते रहेंगे, यहां तक कि अचानक मौत का पैग़ाम आ जाएगा और तुम अपने करतूतों का हिसाब देने के लिए धर लिए जाओगे ।

31. यह तौहीद के सत्य पर होने की निशानी हर मनुष्य के मन (नफ़्स) में मौजूद है । जब तक परिस्थितियां संसाधन अनुकूल रहते हैं, इन्सान अल्लाह को भूला और दुनिया की ज़िन्दगी पर फूला रहता है । जहां संसाधनों ने छोड़ा और वे सब सहारे, जिनके बल पर वह जी रहा था, टूट गये, फिर कट्टे-से-कट्टे मुशरिक और घोर नास्तिक के दिल से भी यह गवाही उबलनी शुरू हो जाती है कि इस समस्त कारण-जगत पर किसी ईश्वर का कन्ट्रोल है और वह है एक ही ग़ालिब और शक्तिशाली अल्लाह ।

(देखिये सूरा-6 अल-अनआम, टिप्पणी 29)

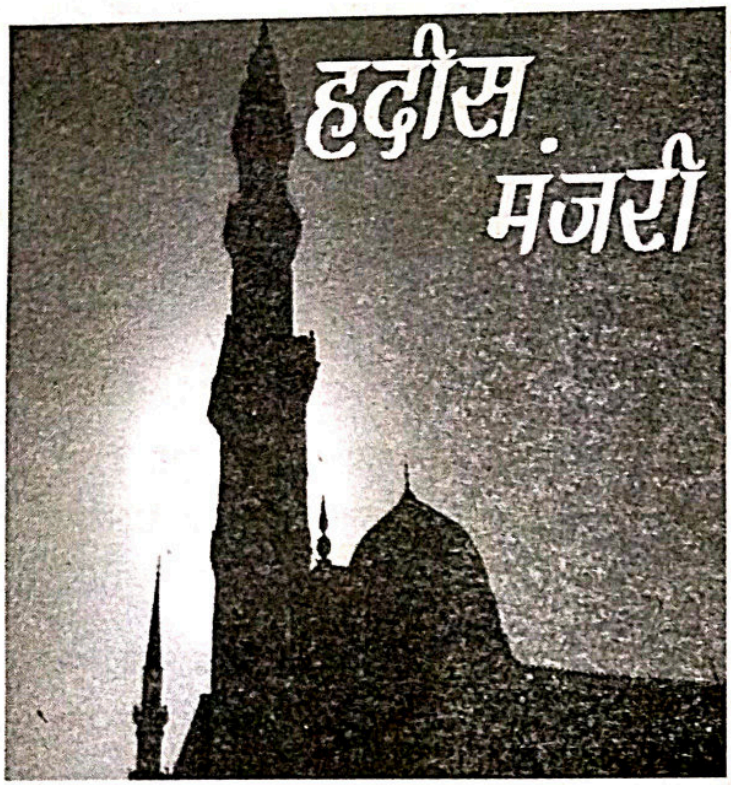

अल्लाह से अच्छी आशा

एक रिवायत में है : "अल्लाह तआला की सौ दयालुताएं हैं जिनमें से उसने केवल एक दयालुता जिन्न, मनुष्य, चौपायों और जीव-जन्तुओं में उतारी जिसके कारण वे परस्पर ममता दिखलाते और एक-दूसरे पर दया करते हैं । इसी के कारण वनपशु अपने बच्चे की ओर झुकता है । और निन्यानवे दयालुता को अल्लाह तआला ने रख छोड़ा है, उनसे वह क़ियामत के दिन अपने बन्दों पर दया करेगा ।" —बुख़ारी, मुस्लिम

मुस्लिम ने इसे हज़रत सलमान अल-फ़ारसी (रज़ि॰) से भी रिवायत है । कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "अल्लाह तआला की सौ रहमतें हैं । उनमें से एक दयालुता तो वह है जिसके द्वारा प्राणी परस्पर एक-दूसरे पर दया करते हैं और निन्यानवे दयालुता क़ियामत के दिन के लिए है ।"

और एक रिवायत में है : "जिस दिन अल्लाह तआला ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, उसी दिन उसने सौ दयालुता पैदा की । प्रत्येक दयालुता का विस्तार आसमान और ज़मीन के अन्तराल के बराबर है । फिर उनमें से एक दयालुता तो उसने ज़मीन में रखी जिसके कारण माता अपने बच्चे पर और वनपशु और पक्षी भी एक-दूसरे पर ममता दिखलाते हैं । जब क़ियामत का दिन होगा, तो इस दयालुता को सम्मिलित करके वह उसे पूर्ण कर देगा ।"

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) अपने रब से—जो बड़ी बरकत वाला और उच्च है—रिवायत करते हैं । आपने कहा : "बन्दा गुनाह करता है और कहता है कि ऐ अल्लाह, मेरे गुनाह को क्षमा कर दे, तो अल्लाह—जो बड़ी बरकत वाला और उच्च है—कहता है : मेरे बन्दे ने गुनाह किया और वह जानता है कि उसका कोई रब है जो गुनाह को क्षमा करता है और गुनाह पर पकड़ता भी है । फिर वह दुबारा गुनाह करता है और कहता है : ऐ मेरे रब, मेरे गुनाह को क्षमा कर दे, तो अल्लाह तआला कहता है : मेरे बन्दे ने गुनाह किया और वह जानता है कि उसका कोई रब है जो गुनाह को क्षमा करता है और गुनाह पर पकड़ता भी है । फिर वह बन्दा गुनाह कर बैठता है और कहता है : ऐ मेरे रब, मेरे गुनाह को क्षमा कर दे, तो अल्लाह तआला कहता है : मेरे बन्दे ने गुनाह किया और वह जानता है कि उसका कोई रब है जो गुनाह को क्षमा करता है और गुनाह पर पकड़ता भी है । मैंने अपने बन्दे को क्षमा कर दिया अब वह जो चाहे करे । (अर्थात जब तक वह गुनाह करके क्षमा मांगता रहेगा, मैं उसे क्षमा करता रहूंगा । इसलिए कि तौबा करने से पहले के गुनाह मिट जाते हैं ।) —बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "उसकी सौगन्ध, जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर तुम लोग गुनाह न करते, तो अल्लाह तआला तुमको ले जाता (हटा देता) और ऐसे लोगों को ले आता जो गुनाह करते और फिर अल्लाह तआला से क्षमा-याचना करते और अल्लाह उन्हें क्षमा करता ।" —मुस्लिम

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का निष्कलंक जीवन

दो-तीन दिन पहले जब मैं आज के सबसे बड़े संचार-साधन इंटरनेट पर कुछ चीज़ें सर्च कर रहा था, तभी ऐसी सामग्रियां भी प्राप्त हुईं, जो न तो सत्य थीं और न ही किसी भी दृष्टि से उपयोगी, बल्कि धृष्टता यह थी कि विश्व के महानतम व्यक्तित्व हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र जीवनी को जान-बूझकर कलंकित करने वाली थीं । यह ऐसे महानतम व्यक्तित्व के चरित्र-हनन का निंदनीय कोशिश थी, जिसकी सदा भर्त्सना ही की जाएगी । वास्तव में यह एक निकृष्ट प्रकार की दुर्भावना ही है, जो आज के भौतिकवादी समाज में अक्सर उभर कर आती है । ऐसे लोग अपनी मानसिकता को निर्लज्ज भाव से अमानवीय ही बनाए रखते हैं । ये सत्यता और तथ्यों से अपने को परे रखकर अपना ख़ास उल्लू सीधा करते रहते हैं और अपनी अंतरात्मा का सौदा करते रहते हैं । यही स्पष्ट सत्य और तथ्य है कि इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जीवन ही सच्ची मानवता का मार्गदर्शक और उद्धारक है । आप (सल्ल०) के जीवन का गहन अध्ययन करने के पश्चात गांधी जी ने लिखा कि "इस्लाम अपने अति विशाल युग में भी अनुदार नहीं था, बल्कि सारा संसार उसकी प्रशंसा कर रहा था । उस समय, जबकि पश्चिमी दुनिया अंधकारमय थी, पूर्व क्षितिज का एक उज्ज्वल सितारा चमका, जिससे विकल संसार को प्रकाश और शान्ति प्राप्त हुई । इस्लाम झूठा मज़हब नहीं है । हिन्दुओं को भी इसका उसी तरह अध्ययन करना चाहिए, जिस तरह मैंने किया है । फिर वे भी मेरे ही समान इससे प्रेम करने लगेंगे । मैं पैग़म्बरे-इस्लाम की जीवनी का अध्ययन कर रहा था । जब मैंने किताब का दूसरा भाग भी ख़त्म कर लिया, तो मुझे दुख हुआ कि इस महान प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के जीवन का अध्ययन करने के लिए अब मेरे पास कोई और किताब बाक़ी नहीं । अब मुझे पहले से भी ज़्यादा विश्वास हो गया है कि यह तलवार की शक्ति न थी, जिसने इस्लाम के लिए विश्व क्षेत्र में विजय प्राप्त की, बल्कि यह इस्लाम के पैग़म्बर का अत्यंत सादा जीवन, आपकी निःस्वार्थता, प्रतिज्ञा-पालन और निर्भयता थी । यह आपका अपने मित्रों और अनुयायियों से प्रेम करना और ईश्वर पर भरोसा रखना था । यह तलवार की शक्ति नहीं थी, बल्कि वे विशेषताएं और गुण थें, जिनसे सारी बाधाएं दूर हो गयी और आप (सल्ल०) ने समस्त कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर ली । मुझसे किसी ने कहा था कि दक्षिणी अफ़्रीक़ा में जो यूरोपियन आबाद हैं, इस्लाम के प्रचार से कांप रहे हैं, उसी इस्लाम से जिसने मोरक्कों में रोशनी फैलाई और संसारवासियों को भाई-भाई बन जाने का सुखद-संवाद सुनाया । निस्संदेह दक्षिणी अफ़्रीक़ा के यूरोपियन इस्लाम से नहीं डरते हैं, बल्कि वास्तव में वे इस बात से डरते हैं कि अगर अफ़्रीक़ा के आदिवासियों ने इस्लाम क़बूल कर लिया तो वे श्वेत जातियों से बराबरी का अधिकार मांगने लगेंगे । आप उनको डरने दीजिए । अगर भाई-भाई बनना पाप है, तो यह पाप होने दीजिए । अगर वे इस बात से परेशान हैं कि उनका नस्ली बड़प्पन, क़ायम न रह सकेगा तो उनका डरना उचित है, क्योंकि मैंने देखा है कि अगर एक जूलों ईसाई हो जाता है तो वह फिर भी सफ़ेद रंग के ईसाइयों के बराबर नहीं हो सकता । किन्तु जैसे ही वह इस्लाम ग्रहण करता है, बिल्कुल उसी वक़्त वह उसी प्याले में पानी पीता है और उसी प्लेट में खाना खाता है, जिसमें कोई और मुसलमान पानी पीता और खाना खाता है । तो वास्तविक बात यह है जिससे यूरोपियन कांप रहे

हैं। ('जगत महर्षि', पृष्ठ 2) वर्तमान में भी संभवतः यही स्थिति है। जितना ही इस्लाम और इस्लाम के अंतिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर अनुचित आक्षेप किया जाता है, उतना ही संसारवासी इनकी ओर प्रवृत्त होते हैं, क्योंकि वे इस वास्तविक, व्यावहारिक व ऐतिहासिक तथ्य से भली-भांति परिचित ही नहीं, पूर्ण विश्वास करते हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का आगमन ही सभी मनुष्यों के कल्याण हेतु हुआ था। सार्वभौमिकता के परिप्रेक्ष्य में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के, भारतवासियों का भी पैग़म्बर होने की धारणा तक़ाज़ा करती हैं कि आप (सल्ल०) के समकालीन भारत पर एक संक्षिप्त दृष्टि अवश्य डाली जाए, और चूंकि आपकी पैग़म्बरी का ध्येय एवं आप (सल्ल०) के ईशदूतत्व का लक्ष्य मानव-व्यक्तित्व, मानव-समाज के आध्यात्मिक व सांसारिक हर क्षेत्र में सुधार, परिवर्तन, निखार व क्रान्ति लाना था, इसलिए यह दृष्टि भारतीय समाज के राजनैतिक, सामाजिक व धार्मिक सभी पहलुओं पर डाली जाए।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) द्वारा अरब प्रायद्वीप में इस्लाम के पुनः अभ्युदय का काल सातवीं शताब्दी ईसवी का प्रारंभिक काल है। भारत, भारतवर्ष या हिन्दुस्तान नामक एक देश न था, न ही इसका कोई एक शासक। अलग-अलग क्षेत्रों में 'पल्लव' और 'चालुक्य' आदि वंशों के शासकों-हर्ष वर्धन, महेन्द्र वर्मन और पुलकेशिन का राज्य था। इनमें सत्ता व शासन के लिए बराबर लड़ाइयां होती रहती थी। पराजय के पुनर्विजय-प्राप्ति के लिए वाह्य-देशों से सैनिक सहायता भी ली जाती थी। सत्ताधारी वर्ग के धर्म या धर्म-परिवर्तन का व्यापक प्रभाव शासित वर्ग ग्रहण करता था। उत्तर-पश्चिमी प्रांत में बौद्ध धर्म का ह्रास हो रहा था। कश्मीर से मथुरा तक और मध्य-प्रांत, पूर्वी तथा दक्षिणी प्रांत में ब्राह्मणों का प्रभाव बढ़ रहा था। जैन धर्म प्रभावहीन हो चुका था और जैनियों ने ब्राह्मणों से समझौता करके उनका न केवल राजनैतिक व सांसारिक प्रभुत्व स्वीकार कर लिया था, बल्कि बड़े-बड़े लोगों का धर्म-परिवर्तन भी कराया जाने लगा था। जैन धर्म के अनुयायी महेन्द्र वर्मन (शासन काल 600-630 ई०) ने शैव धर्म ग्रहण कर लिया। उसने महाबलिपुरम के प्रसिद्ध मन्दिर समेत कई शैव-मन्दिर बनवाए, और जैन धर्म का बचा-खुचा अस्तित्व भी लगभग समाप्त हो गया। दूसरी ओर ह्रासोन्मुख बौद्ध धर्म पर ब्राह्मणवाद का ऐसा प्रबल प्रभाव पड़ा कि बौद्ध धर्म के मूर्तिपूजा-विरोधी अनुयायी, मूर्तिपूजा को अपने धर्म का ख़ास अंग बना बैठे। बौद्ध जहां जाते वहां गौतम बुद्ध की मूर्तिपूजा न करने की मूल-शिक्षा के विरुद्ध उनकी मूर्तियों स्थापित करते और उनकी पूजा-अर्चना करने लगते। एक प्रसिद्ध हिन्दू चिंतक सी०वी० वैद्य के अनुसार, "इस युग में हिन्दू धर्म और बौद्ध धर्म दोनों ही मूर्तिपूजा के समर्थक थे, बल्कि शायद बौद्ध धर्म मूर्तिपूजा में हिन्दू धर्म से भी आगे बढ़ गया था।" हिन्दू धर्म में वेदों द्वारा स्थापित एकेश्वरवाद ऋग्वेद काल के अंत तक पहुंचते-पहुंचते 'अनेक-देवतावादी एकेश्वरवाद' में बदल चुका था। कुछ विद्वानों के अनुसार, वैदिक देवताओं की संख्या 33 तक और कुछ के अनुसार 3339 तक हो गयी थी जो पौराणिक काल में बढ़कर 33 करोड़ तक पहुंच गयी थी, देवताओं की मूर्तियों के साथ-साथ पशु, नक्षत्र, नदी आदि भी पूज्य हो गये थे। हर्ष वर्धन के काल में शिव की पूजा आम हो गयी थी और विष्णु के अनेक अवतारों की मूर्तिपूजा प्रचलित हो गयी थी। हर्ष वर्धन के पूर्वजों ने समाज में वर्ण-व्यवस्था की जड़ फिर से मज़बूत करके ऊंच-नीच श्रेष्ठ-अश्रेष्ठ और छूतछात आदि को जो बढ़ावा दिया था, वह हर्ष वर्धन काल (606-647 ई०) में भी जारी रहा। इस काल में भारत की यात्रा करने वाला चीनी यात्री फाह्यान लिखता है, 'शूद्र तो गये-गुज़रे हैं ही, लेकिन शूद्रों में चंडाल सबसे अधम समझे जाते थे। वे राजाज्ञानुसार शहर में प्रवेश करते समय लकड़ी से ढोल बजाकर अपने आने की सूचना देते थे, ताकि लोग हट जाए और उनका स्पर्श बचाकर चले।" सातवीं सदी के एक अन्य चीनी भारत-यात्री ह्वेनसांग के अनुसार, "शूद्रों के पश्चात पंचम जाति के लोगों-क़साइयों, मछुआरों, जल्लादों और भंगियों के मकानों पर अलग-अलग निशान बने रहते थें और ये लोग नगर के बाहर रहते थे, उच्च वर्ग का कोई आदमी रास्ते में मिल जाता तो ये आंखें बचाकर बाईं ओर को चले जाते और जल्दी से अपने घर में घुस जाते थे।" इस काल में स्त्रियों की दशा अति दयनीय था। रोमिला थापर के अनुसार, "...उत्तर भारत के कई स्थानों पर सती प्रथा ज़ोर पकड़ती जा रही थी तो दक्षिण भारत में देवदासी प्रथा। ...अनेक मंदिरों की देव-दासियां निर्लज्जतापूर्वक शोषित वेश्याएं बन गयी और मन्दिर के अधिकारी उनकी आय प्राप्त करने लगे।" हज़रत मुहम्मद

(सल्ल॰) के काल से बहुत पहले से ही भारत और अरब के बीच व्यावसायिक संबंध क़ायम थे । प्रसिद्ध विद्वान और अनुसंधानकर्ता सैयद सुलैमान नदवी के शब्दों में, "अरब व्यावसायी आज से हज़ारों वर्ष पूर्व भारत के तटीय क्षेत्रों में आते-जाते थे, और वहां की वस्तुओं को मिस्र और ओम्मान के मार्ग से यूरोप तक पहुंचाते थे और वहां की वस्तुओं को भारत के द्वीपों में लाते थें । इस प्रकार के व्यावसायिक सामान को चीन और जापान तक ले जाते थे ।"

मार्कोपोलो और वास्को डि गामा के समय तक भारत का व्यावसाय अरबों के हाथ में था । भारत से सन्दल, काफूर, लोंग, जायफल, कबाबचीनी, नारियल, सोंठ अदरक, नील, अजवाइन, केला, सुपारी, रूई के कपड़े, सन और बांस आदि चीज़ें बेचने के लिए अरब ले जाई जाती थी । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के काल में भी यह व्यापार जारी था । भारत के कुछ लोग अरब के पूर्वी तटों और समीपवर्ती इलाक़ों में रहते थे । अरबों से उनके संबंध अच्छे थे । उनके बीच किसी लड़ाई-झगड़े की घटना इतिहास में नहीं मिलती । हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) और आपके साथी हिन्दुस्तान और यहां के लोगों के बारे में जानकारी रखते थे, और आप (सल्ल॰) के पैग़म्बर बनाए जाने के बाद आपके पैग़ाम से यहां के लोग भी अवगत होने लगे थे । जिस अरब समाज में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को ईश्वर ने अपना रसूल बनाया था, उसमें और समकालीन भारतीय समाज में अनेक समानताएं पाई जाती थी । भारत एक धार्मिक भू-स्थल था । यहां के लोगों में एक ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास था । वे उसे सृष्टि, मनुष्यों व अन्य जीवधारियों का स्रष्टा समझते थे । यही स्थिति अरब प्रायद्वीप में थी । वहां के लोग एक अल्लाह के वजूद के क़ायल थे । अल्लाह को ही सृष्टि, मानवजाति एवं समस्त जीवों को पैदा करने वाला मानते थे । यहां तक कि उनके नामों-उदाहरणत: 'अब्दुल्लाह' (अल्लाह का बन्दा) जैसे नाम से भी वे अपने और अल्लाह के बीच मूलभूत संबंध का प्रदर्शन करते थे । अरबवासी अल्लाह के साथ दूसरों को साझीदार बना चुके थे । वे फ़रिश्तों, जिन्नों और पूर्वजों की मूर्तियों की पूजा करते थे । कभी एकेश्वरवाद के केन्द्र-स्वरूप बनाए गये 'काबा' में और उसके आस-पास, उन्होंने लगभग 360 मूर्तियां स्थापित कर रखी थी और उनकी पूजा करते, उनके नाम पर बलि देते और उन पर चढ़ावे चढ़ाते तथा उनसे सहायता मांगते थें । मूर्तिपूजा की ठीक यही स्थिति और एक-ईश्वर के साथ अनेकानेक देवताओं, नक्षत्रों एवं जीवधारी-अजीवधारी वस्तुओं को साझीदार बनाने का चलन भारत में भी चरम सीमा पर था । वैदिक धर्म के साथ-साथ भारत में बौद्ध धर्म और जैन धर्म के मानने वाले भी थे । इसी प्रकार अरब में 'बहुदेववादी एकेश्वरवाद' को मानने वाले 'मुशरिकों' के साथ-साथ अहले-किताब अर्थात यहूदी और ईसाई भी रहते थे । भारत में तीर्थों, यज्ञों और बलि का प्रचलन था । अरब में भी हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) द्वारा स्थापित हज, उमरा और क़ुरबानी के बिगड़े हुए रूप प्रचलित थे । स्त्री की दशा अरब में अच्छी न थी । वह केवल काम-वासना का साधन समझी जाती थी । समाज में उसका कोई गौरवपूर्ण स्थान न था । बेटियों को किशोरावस्था में माता-पिता द्वारा मार दिये जाने और ज़िन्दा दफ़्न कर देने का रिवाज था । भारत में भी स्त्री का यौन-शोषण होता था, देवदासी प्रथा के रूप में वेश्यावृति का प्रचलन में भी यौन-शोषण होता था, देवदासी प्रथा के रूप में वेश्यावृति का प्रचलन था । तंत्र-साधना के अंतर्गत नारी का यौन अपमान होता था । समाज, भारत में उच्च वर्ग और तुच्छ वर्ग में बंटा हुआ था । शूद्रों की दशा अति दयनीय थी । दासों और दासियों के रूप में पुरुष, स्त्री ख़रीदे-बेचे जाते थे । अरब समाज में गुलामी की प्रथा पूरे ज़ोर पर थी । पुरुषों, स्त्रियों को अन्य जीवन-सामग्री की तरह बेचा, ख़रीदा और काम में लाया जाता था । गुलामों और बांदियों की दशा अत्यंत दयनीय थी । समाज में उनकी हैसियत बिल्कुल पशुओं जैसी थी । यह उस पूरे परिस्थिति का संक्षिप्त अवलोकन हैं जिसमें, और जिसे अरब में पूर्णतया बदलकर रख देने में समर्थ हो जाने वाले हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अल्लाह ने एक सुधारक व क्रान्तिकारी पैग़म्बर बनाकर भेजा था और आप (सल्ल॰) केवल 23 वर्षों में यह क्रान्ति ले आये । मानवता-उद्धार की यही वह प्रक्रिया थी जिसके दर्शन विश्व-इतिहास में होते हैं कि संसार के विभिन्न भागों समेत भारत में भी बड़ी जनसंख्या आप (सल्ल॰) का पैग़ाम स्वीकार करके उसे सीने से लगाती रही और सिद्ध करती रही कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) सबके उद्धारक हैं ।

रब की पहचान

ईश्वर को अरबी भाषा में अल्लाह, फ़ारसी में खुदा और अंग्रेज़ी में गॉड कहा जाता है । ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी सारे संसारों का मालिक और पालनहार है । वह स्वयंभू, स्वत: विद्यमान है । उसे किसी चीज़ की हाजत नहीं । हमारी समस्या यह है कि हम ईश्वर को ठीक से जानते नहीं, अगर जानते-पहचाते हैं तो मानते नहीं और अगर मानते हैं तो सही मूल्यांकन नहीं कर पाते हैं । हम अक्सर ईश्वर का अनेक साझीदार बना लेते हैं जिसे वह सख़्त नापसंद करता है । उसका साझीदार बनाना ऐसा अपराध है जो क्षमा योग्य नहीं है ।

इस संसार में जो कुछ है सूर्य उसका सबब है । इतना ही नहीं संपूर्ण सौरमंडल सूर्य से ही प्रभावित है । इससे सूर्य की विशालता और महानता स्पष्ट है । सूर्य की तुलना ब्रह्मांड से की जाए तो सूर्य की हैसियत रेगिस्तान में रेत के एक कण समान है । आसमान में रातों की दीपावली के दीपों के समान टिमटिमाते अनगिनत तारे वास्तव में सभी सर्यू हैं, जिनका अपना-अपना सौरमंडल है । ईश्वर की पहचान होनी चाहिए ।

ईश्वर वह है जो संपूर्ण ब्रह्मांड का रचयिता है, उसे थामे हुए है, आश्रय दिये हुए हैं । उसके सिवा कोई पूज्य नहीं । वह न सोता है और न उसे ऊंघ लगती है । ज़मीन और आसमान में जो कुछ है उसी का है । उसके यहां कोई उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश नहीं कर सकता । जो ज़ाहिर है और जो ओझल है वह सब जानता है । जब तक बता नहीं देता किसी को कोई जानकारी नहीं होती । उसकी हुकूमत ज़मीन और आसमानों पर है जिसकी निगहबानी करते वह थकता नहीं है । वह सर्वश्रेष्ठ है ।

(कुरआन, 2:255)

तो ईश्वर हर चीज़ पर कुदरत रखता है । वही जिलाता है वही मारता है । वही रोज़ी देता है । वह ऊंची से ऊंची आवाज़ें और धीमी से धीमी आवाज़ें सुनता है, वह सभी भाषाओं और दिलों का हाल जानता है । केवल वही पूजनीय है दूसरा कोई नहीं । उसी में सूर्य, चांद, सितारे, ग्रह, उपग्रह, पृथ्वी आदि को निश्चित कार्यों परं लगा रखा है । क्या मजाल की कोई एक क्षण के लिए भी अपने कार्य से टस से मस हो जाए ।

ईश्वर सारे ज्ञानों का मालिक है । उसके द्वारा स्थापित सिद्धांतों को सुलझाने में मनुष्य लगा हुआ है पर सफलता अधूरी है (ईश्वर ने अपनी निशानियां चारों ओर फैला रखी हैं, मगर हम समझते नहीं । दो गज़ ज़मीन में हमारे ही लगाये पौधों में मिर्ची तीखी, ईख मीठी, टमाटर खट्टा मज़ा देते हैं । आख़िर इसका नियंत्रण एक ईश्वर ही तो करता है । अत: ईश्वर की पहचान अनिवार्य है ।

हिन्दू धर्म ग्रंथों में ईश्वर की स्तुति इस प्रकार की गयी है–

न देवो विद्यते काष्ठे, न पाषाणे न मृणमये ।
भावे ही विद्यते, देवस्तमद भावे ही कारणम ।।

अर्थात देवता न तो लकड़ी में रहते हैं, न पत्थर में रहते हैं और न ही मिट्टी में रहते हैं । देवता मनुष्य की भावना में रहते हैं और यही भावना देवत्व प्राप्ति का कारण होता है ।

सूरदास जी, तुलसीदास जी और कबीरदास जी हिन्दी साहित्य जगत के महत्वपूर्ण स्तंभ है तथा सभी अपने तौर से एक ईश्वर के उपासक हैं । कबीरदास जी ने हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही समुदायों पर कटाक्ष करते हुए निम्न व्यंग्य किया है–

पाहन पूजे हरि मिलें तो मैं पूजूं पहाड़ ।
ताते से चाकी भली पीस खाय संसार ।।
कांकर पाथर जोरि कै मस्जिद दयो बनाये ।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे का बहिरा भया खुदाय ।।

ईश्वर जब इतनी ख़ूबियों का मालिक है, तब जब धीमी से धीमी आवाज़ें सुनता है तो मस्जिद बनाकर हांक लगाने की क्या ज़रूरत है । यह प्रश्न जवाब तलब है ।

इस्लाम में प्रार्थना कहीं भी की जा सकती परंतु सामूहिक प्रार्थना की बड़ी महत्ता है । एक हदीस के अनुसार सामूहिक नमाज़ जो मस्जिद में अदा की जाती है । उसमें 27

गुना अधिक पुण्य है । विदित हो कि मदीना की मस्जिद नबवी में यह बढ़कर 50 हज़ार गुना अधिक और मक्का के काबा में एक लाख गुना अधिक हो जाता है । अतएव सामूहिक नमाज़ के लिए एक साफ़-सुथरे पवित्र स्थान की आवश्यकता हुई । पांचों वक़्त की नमाज़ की सूचना लोगों तक पहुंचाने के लिए अज़ान का तरीक़ा अपनाया गया । अज़ान में अल्लाह को नहीं पुकारा जाता है बल्कि लोगों को नमाज़ पढ़ने के लिए बुलाया जाता है । अज़ान के बोलों का हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है–

"अल्लाह महान है" (चार बार)। "मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं" (दो बार) "मैं गवाही देता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के रसूल हैं" (दो बार) "नमाज़ की ओर आओ" (दो बार) "भलाई की ओर आओ" (दो बार)। "अल्लाह महान है" (दो बार) "अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं", दो बार।

फ़ज्र (भोर) की नमाज़ के लिए जब अज़ान दी जाती है तो उसमें "आओ भलाई की ओर" के बाद दो बार यह भी बोलते हैं–"नमाज़ नींद से बेहतर है"।

अंत में मैं यही आग्रह करूंगा कि–

"वास्तव में मनुष्य घाटे में है । सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किये और एक-दूसरे को हक़ की ताकीद की और एक-दूसरे को धैर्य की ताकीद की ।" (क़ुरआन, 103:2-3)

अब्दुर्रहीम अंसारी

पूर्व एन्डी॰जे॰, हाजीपुर, वैशाली (बिहार)

घर-परिवार

मासिक पत्रिका 'कान्ति' फ़रवरी 2017 का आलेख "बड़े बुजुर्गों की उपेक्षा नहीं" रचयिता सीता राम गुप्ता का मैंने अध्ययन किया । तथा मैं उनके विचारों का पुर्णतया समर्थक हूं ।

अधिकांश का मानना है कि वृद्धवस्था एक अभिषाप है, परंतु मेरे व्यक्तिगत विचार से वृद्धावस्था परिवार के समस्त सदस्यों को पुरातन भारतीय सभ्यता व संस्कृति की ओर अग्रसर कर नैतिकता व उच्च चरित्र का अटूट प्रेरक अंग है । आदर्श परिवार ही आदर्श समाज का प्रतिबिंब है । इसी से उन्नत राष्ट्र का निर्माण होता है । वृद्ध, व्यक्ति चाहे किसी भी परिवार में हो, चाहे पुरुष व महिला बिरले में ही आज संयुक्त परिवार की ओर अग्रसर होना होगा । वृद्ध व्यक्ति का नैतिक कर्तव्य यह हो जाता है कि अपने दिल में प्रेम, करुणा व मित्रता की भावना क़ायम करके अपने स्वास्थ्य का समुचित ध्यान रखे । वृद्ध व्यक्ति का सम्मान होना प्रत्येक परिवार में अति आवश्यक है ।

क़रीब एक वर्ष से अधिक हुए यहां भीलवाड़ा नगर में वरिष्ठ नागरिक मंच की स्थापना हुई, जिसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि वृद्ध व्यक्ति को परिवार में सम्मान मिले, परिवार के प्रत्येक सदस्य में सहिष्णुता व सहनशीलता की भावना हो, प्रत्येक क्षेत्र में वृद्ध व्यक्ति को अनावश्यक परेशानी का सामना नहीं करना पड़े ।

नौकरी से रिटायर होने के पश्चात वृद्ध व्यक्ति को कुछ न कुछ कार्य करते रहना चाहिए । विशेष रूप से अपने शुभ कार्यों से अपने परिवार व समाज को उचित शिक्षा निर्देश में सहायक हो । सामाजिक सुधार के कार्य भी करते रहना चाहिए जिससे युवा पीढ़ी भी आपके प्रोत्साहन से अपने-अपने कार्य में जुटी रहती हैं ।

इसलिए कह सकते हैं कि वृद्धावस्था आदर्श परिवार व समाज की नींव है । वृद्ध व्यक्ति झूठे मान-सम्मान को अधिक महत्व नहीं दे । उनका कर्तव्य है कि स्वयं प्रात:काल उठकर के परिवार के सम्मुख मुस्कराये तथा अपने सदस्यों को नि:स्वार्थ भाव से कार्य करने को प्रोत्साहित करे ।

समाज के अनुसार वृद्ध व्यक्ति को ढलना होगा । सदस्यों को अच्छे संस्कार देने हेतु किसी न किसी प्रकार से प्रयत्न करना होगा । अपना व्यवहार ऐसा हो जिससे कि परिवार व समाज के अधिकांश सदस्य अपना समुचित आदर करें । अपने व्यवहार को कसौटी पर उतारकर परिवार व समाज का उचित मार्गदर्शन करें ताकि परिवार व समाज भविष्य में आदर्श बन सके । इसलिए आदर्श परिवार व समाज वृद्धावस्था का बेहतरीन मित्र हैं ।

संयुक्त परिवार में जहां सदस्यों में प्रेम और अपनत्व की भावना सदा बनी रहती है वहीं एक सुदृढ़ता का एहसास भी होता है । स्नेह की भावना उमड़ने के साथ-साथ कार्य भी अच्छा होता है । समय भी कम लगता है । ख़र्च में कमी आती है । वृद्धावस्था की उत्तम चारित्रिक व्यवस्थाएं भी संयुक्त परिवार को बढ़ाने में अग्रसर है ।

रामस्वरूप झैवर

9-10 शास्त्रीनगर, विस्तार, भीलवाड़ा (राज॰)

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)
Mumbai (Maharashtra)

Chairman : Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

क़ुरआन में एकेश्वरवाद की शिक्षा

■ संपादन प्रभाग

निगाहें उसको नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है, वह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी और हर चीज़ से अवगत है। (6:103)

कहो, वह अल्लाह है, यकता। अल्लाह सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मुहताज हैं। न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है। और कोई उसका समकक्ष नहीं है। (112:1-4)

अल्लाह, वह जीवन्त नित्य सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत् को संभाले हुए है, उसके सिवा, कोई प्रभु-पूज्य नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊंघ लगती है। आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी का है। कौन है जो उसके यहां उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके? जो कुछ लोगों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है और उसके ज्ञान में से कोई चीज़ उनके ज्ञान की पकड़ में नहीं आ सकती यह और बात है कि किसी चीज़ का ज्ञान वह स्वयं ही उनको देना चाहे। उसका राज्य आकाशों और धरती पर छाया हुआ है और उनकी देख-रेख उसके लिए कोई थका देनेवाला कार्य नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है। (2:255)

अल्लाह की तसबीह की है हर उस चीज़ ने जो धरती और आकाशों में है, और वही प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है। धरती और आकाशों के राज्य का मालिक वही है, जीवन प्रदान करता है और मृत्यु देता है, और उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। वही प्रथम भी है और अन्तिम भी है, और गोचर भी है और अगोचर भी, और उसे हर चीज़ का ज्ञान है। वही है जिसने आकाशों और धरती को छह दिनों में पैदा किया और फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसके ज्ञान में है जो कुछ धरती में प्रवेश करता है और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है। वह तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो। जो काम भी तुम करते हो उसे वह देख रहा है। वही धरती और आकाशों के राज्य का मालिक है और सारे मामले फ़ैसले के लिए उसी की ओर रुजू किए जाते हैं। वही रात को दिन में और दिन को रात में दाख़िल करता है, और दिलों के छुपे हुए रहस्य तक जानता है।(57:1-6)

वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, परोक्ष और प्रत्यक्ष हर चीज़ का जाननेवाला, वही अत्यन्त करुणामय और दयावान है। वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं। वह सम्राट है अत्यन्त गुणवान, शान्ति स्वरूप, शरणदाता, संरक्षक, प्रभुत्त्वशाली, अपना आदेश बलपूर्वक लागू करनेवाला और बड़ा ही होकर रहनेवाला। अल्लाह की महिमा के प्रतिकूल है वह 'शिर्क' (बहुदेववाद) जो ये लोग कर रहे हैं। वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना का बनानेवाला और उसको क्रियान्वित करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। उसके लिए उत्तम नाम हैं। हर चीज़, जो आकाशों और धरती में है, उसकी तसबीह कर रही है, और वह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है। (59:22-24)

हमने तुम्हें पैदा किया है, फिर क्यों सच नहीं मानते? कभी तुमने विचार किया, यह वीर्य जो तुम डालते हो, इससे बच्चा तुम बनाते हो या उसके बनानेवाले हम हैं? हमने तुम्हारे बीच मृत्यु को बांटा है, और हमारे बस से यह बाहर नहीं है कि हम तुम्हारे रूप बदल दें और किसी ऐसे रूप में तुम्हें पैदा कर दें, जिसको तुम नहीं जानते। अपनी पहली पैदाइश को तो तुम जानते ही हो, फिर क्यों शिक्षा ग्रहण नहीं करते ?

कभी तुमने सोचा, यह बीच जो तुम बोते हो, इनसे खेतियां तुम उगाते हो या उनके उगानेवाले हम हैं? हम चाहें तो इन खेतियों को भुस बनाकर रख दें और तुम तरह-तरह की बातें बनाते रह जाओ कि हम पर तो उलटा डांड़ पड़ गया, बल्कि हमारे तो नसीब ही फूटे हुए हैं। कभी तुमने आंखें खोलकर देखा, यह पानी जो तुम पीते हो, इसे तुमने पैदा किया है, या इसके पैदा करने वाले हम हैं? हमने उसको अनुस्मारक और ज़रूरतमंदों के लिए जीवन-सामग्री बनाया है।

अतः अपने महान् प्रभु के नाम की तसबीह करो। (56:57-74)

रात्रि के आवरण को फाड़कर वह प्रभात निकालता है । उसी ने रात को विश्राम का समय बनाया है । उसी ने चन्द्रमा और सूर्य के उदय और अस्त होने का हिसाब ठहराया है । ये सब उसी बलशाली सामर्थ्यवान और सर्वज्ञ के ठहराए हुए अंदाज़े हैं । और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारों को भूमि और समुद्र के अंधकारों में मार्ग मालूम करने का साधन बनाया । देखो, हमने निशानियां खोलकर बयान कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो ज्ञान रखते हैं । और वही है जिसने एक जीव से पैदा किया, फिर हर एक के लिए एक ठहरने का स्थल है और एक सौंपे जाने का स्थान । यह निशानियां हमने स्पष्ट कर दी हैं, उन लोगों के लिए जो समझबूझ रखते हैं और वही है जिसने आकाश से पानी बरसाया, फिर उसके द्वारा हर प्रकार की वनस्पति उगाई, फिर उससे हरे-भरे खेत और वृक्ष पैदा किए, फिर उनसे तले-ऊपर चढ़े हुए दाने निकाले और खजूर के गाभों से गुच्छे पैदा किए जो बोझ के कारण झुके पड़ते हैं । और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ लगाए, जिनके फल एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं और विशेषताएँ अलग-अलग भी हैं । ये वृक्ष जब फलते हैं तो इनमें फल आने और फिर उनके पकने की दशा को तनिक ध्यान-दृष्टि से देखो, इन चीज़ों में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं । इस पर भी लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का साझीदार ठहरा दिया, हालांकि वह उनका सृष्टा है और बेजाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियां रच दीं, हालांकि वह निर्लिप्त और उच्च है उन बातों से जो ये लोग कहते हैं । (6:96-100)

अतः 'तसबीह' करो अल्लाह की जबकि तुम संध्या करते हो और जब सुबह करते हो । आकाशों और धरती में उसी के लिए प्रशंसा है । और (तसबीह करो उसकी) तीसरे पहर और जबकि तुम पर ज़ुहर का समय आता है । वह जीवित को मुर्दे में से निकालता है और मुर्दे को जीवित में से निकाल लाता है और धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है । इसी तरह तुम लोग भी (मृत्यु की दशा से) निक़ाल लिए जाओगे ।

उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया । फिर सहसा तुम मानव हो कि (धरती में) फैलते चले जा रहे हो ।

और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही जाति से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और तुहारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी । निस्संदेह, इसमें बहुत-सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं ।

और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती की सृष्टि और तुम्हारी भाषाओं और तुम्हारे रंगों की भिन्नता है । निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियां हैं, बुद्धिमान लोगों के लिए ।

और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन का सोना और तुम्हारा उसके अनुग्रह (आजीविका) को तलाश करना है । निश्चय ही इसमें बहुत-सी निशानियां हैं, उन लोगों के लिए जो (ध्यानपूर्वक) सुनते हैं ।

और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है भय के साथ भी और लोभ के साथ भी । और आकाश से पानी बरसाता है, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवन प्रदान करता है । निस्संदेह, इसमें बहुत-सी निशानियां हैं, उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं ।

और उसकी निशानियों में से यह है कि आकाश और धरती उसके आदेश से क़ायम हैं । फिर ज्यों ही कि उसने तुम्हें धरती से पुकारा, बस एक ही पुकार में सहसा तुम निकल आओगे । आकाशों और धरती में जो भी हैं उसके बन्दे हैं । सब के सब उसकी आज्ञा के अधीन हैं । वही है जो सृष्टि का आरंभ करता है, फिर वही उसकी पुनरावृत्ति करेगा और यह उसके लिए अधिक सरल है । आकाशों और धरती में उसका गुण सर्वोच्च है और वह प्रभुत्त्वशाली और तत्त्वदर्शी है । -30:17-27

हमने मनुष्य को मिट्टी के सत से बनाया, फिर उसे एक सुरिक्षत जगह टपकी हुई बूंद के रूप में परिवर्तित किया, फिर उस बूंद को लोथड़े का रूप दिया, फिर लोथड़े को बोटी बना दिया, फिर बोटी की हड्डियां बनाई, फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया, फिर उसे एक दूसरा ही सृजन बना खड़ा किया । अतः बड़ी बरकतवाला है अल्लाह, सब कारीगरों से अच्छा कारीगर । फिर इसके उपरान्त तुमको अवश्य मरना है, फिर पुनरुज्जीवन के दिन निश्चय ही तुम उठाए जाओगे ।

और तुम्हारे ऊपर हमने सात मार्ग बनाए, सृष्टि-कार्य से हम कुछ अनभिज्ञ न थे । (23:12-17)

यह हमारी कार्यकुशलता है कि आकाश में हमने बहुत

से सुदृढ़ क़िले बनाए, उनको देखनेवालों के लिए (तारों से) सुसज्जित किया, और प्रत्येक फिटकारे हुए शैतान से उनको सुरक्षित कर दिया । कोई शैतान उनमें राज नहीं पा सकता, यह और बात है कुछ सुन-गुन ले ले । और जब वह सुन-गुन लेने की कोशिश करता है तो एक प्रदीप्त अग्निशिखा उसका पीछा करती है ।

हमने धरती को फैलाया, उसमें पहाड़ जमाए, उसमें हर प्रकार की वनस्पति ठीक-ठीक नपे-तुले परिमाण के साथ उगाई और उसमें आजीविका के सामान जुटाए, तुम्हारे लिए भी और सृष्टि के उन बहुत-से प्राणियों के लिए भी जिनके दाता तुम नहीं हो । कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों, और जिस चीज़ को भी हम उतारते हैं एक निश्चित मात्रा में उतारते हैं । उर्वर हवाओं को हम ही भेजते हैं, फिर आकाश से पानी बरसाते हैं, और उस पानी से तुम्हें सिंचित करते हैं । इस दौलत के कोषधिकारी तुम नहीं हो । जीवन और मृत्यु हम देते हैं, और हम ही सबके उत्तराधिकारी होनेवाले हैं । पहले जो लोग तुम में से गुज़रे हैं उनको भी हमने देख रखा है, और तत्पश्चात् आनेवाले भी हमारी दृष्टि में हैं । निश्चय ही तुम्हारा प्रभु इन सबको इकट्ठा करेगा, वह तत्त्दर्शी भी है और सर्वज्ञ भी ।

हमने मानव को सड़ी हुई मिट्टी के सुखे गारे से बनाया । और उससे पहले जिन्नों को हम आग की लपट से पैदा कर चुके थे । –15:16-27

और क्या ये लोग अल्लाह की पैदा की हुई किसी चीज़ को भी नहीं देखते कि उसकी छाया किस प्रकार अल्लाह के समक्ष सजदा करते हुए दाएं और बाएं गिरती है? सब के सब इस प्रकार विनम्रता एवं निम्नता दर्शा रहे हैं । धरती और आकाशों में जितने भी जीवधारी हैं और जितने फ़रिश्ते, सब अल्लाह के आगे सजदे में हैं । वे कदापि उद्दण्डता नहीं दिखाते अपने प्रभु से जो उनके ऊपर है, डरते हैं और जो कुछ आदेश दिया जाता है उसी के अनुसार कार्य करते हैं।

अल्लाह का आदेश है कि "दो प्रभु-पूज्य न बना लो, प्रभु तो बस एक ही है", अतः तुम मुझी से डरो । उसी का है वह सब जो आसमानों में है और जो कुछ धरती में है, और विशुद्ध धर्म उसी का (सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में) चल रहा है । फिर क्या अल्लाह को छोड़कर तुम किसी और का डर रखोगे? (16:48-52)

अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है । (ब्रह्माण्ड में) उसके प्रकाश की उपमा ऐसी है जैसे एक ताक़ (आला) में चिराग़ रखा हुआ हो, चिराग़ एक फ़ानूस में हो, फ़ानूस का हाल यह हो कि जैसे मोती की तरह चमकता हुआ तारा, और यह चिराग़ ज़ैतून के एक ऐसे बरकतवाले वृक्ष के तेल से प्रदीप्त किया जाता हो जो न पूर्वी हो न पश्चिमी, जिसका तेल आप-ही-आप भड़का पड़ता हो चाहे आग उसको न लगे, (इस प्रकार) प्रकाश-पर-प्रकाश (बढ़ने के सभी साधन एकत्र हो गए हों) । अल्लाह अपने प्रकाश की ओर जिसका चाहता है पथप्रदर्शन करता है, वह लोगों को उपमाओं से बात समझाता है, वह हर चीज़ से भली-भांति परिचित है । (उसके प्रकाश की ओर पथप्रदर्शन पानेवाले) उन घरों में पाए जाते हैं जिन्हें ऊंचा करने का, और जिनमें अपने नाम की याद की अल्लाह ने अनुज्ञा दी है । उनमें ऐसे लोग प्रातःकाल और संध्या समय उसकी तसबीह करते हैं जिन्हें व्यापार और क्रय-विक्रय अल्लाह की याद से और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात (दान) देने में ग़ाफ़िल नहीं करता । वे उस दिन से डरते रहते हैं जिसमें दिल उलटने और आंखें पथरा जाने की नौबत आ जाएगी, (और वे यह सब कुछ इसलिए करते हैं) ताकि अल्लाह उनके अच्छे से अच्छे कर्मों का बदला उनको दे और उन्हें और अधिक अपने अनुग्रह से प्रदान करे, अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है । (इसके विपरीत) जिन्होंने इन्कार किया उनके कर्मों की मिसाल ऐसी है जैसे चटियल मैदान में मरीचिका कि प्यासा उसको पानी समझे हुए था किन्तु जब वहां पहुंचा तो कुछ न पाया, बल्कि वहां उसने अल्लाह को विद्यमान पाया, जिसने उसका पूरा-पूरा हिसाब चुका दिया, और अल्लाह को हिसाब लेते देर नहीं लगती । या फिर उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक गहरे समुद्र में अंधकार के ऊपर बादल, अंधकार पर अंधकार छाया हुआ है, आदमी अपना हाथ निकाले तो उसे भी न देखने पाए । जिसे अल्लाह प्रकाश न प्रदान करे उसके लिए फिर कोई प्रकाश नहीं ।

क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह की तसबीह कर रहे हैं वे सब जो आकाशों और धरती में हैं और वे पक्षी जो पंख फैलाए उड़ रहे हैं? हर एक अपनी नमाज़ और तसबीह का ढंग जानता है, और ये सब जो कुछ करते हैं अल्लाह उसे जानता होता है । आकाशों और धरती का राज्य अल्लाह ही के लिए है और उसी की ओर पलटना है ।

क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह बादल को धीरे-धीरे चलाता है, फिर उसके टुकड़ों को परस्पर जोड़ता है, फिर उसे समेट कर एक स्थूल मेख बना देता है, फिर तो तुम देखते हो कि उसके खोल में से वर्षा की बूंदें टपकी चली आती हैं । और वह आकाश से, उन पहाड़ों की बदौलत जो उसमें ऊंचे उठे हुए हैं, ओले बरसाता है, फिर जिसे चाहता है उनकी हानि पहुंचाता है और जिसे चाहता है उनसे बचा लेता है । उसकी बिजली की चमक निगाहों को चौंधियाई हुई किए देती है । रात और दिन का उलट फेर वही कर रहा है । इसमें एक शिक्षा है आंखवालों के लिए ।

और अल्लाह ने हर जीव-धारी को एक प्रकार के पानी से पैदा किया । कोई पेट के बल चल रहा है, तो कोई दो टांगों पर और कोई चार टांगों पर । जो कुछ वह चाहता है पैदा करता है, उसे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है ।

हमने स्पष्ट रूप से सत्य को बतानेवाली आयतें उतार दी हैं, आगे सीधे मार्ग की ओर पथप्रदर्शन अल्लाह ही जिसे चाहता है प्रदान करता है ।

ये लोग कहते हैं कि हम ईमान लाए, अल्लाह और रसूल पर और हमने आज्ञापालन स्वीकार किया, किन्तु इसके पश्चात् इनमें से एक गिरोह (आज्ञापालन से) मुंह मोड़ जाता है । (24:35-47)

अत्यन्त करुणामय (अल्लाह) ने इस कुरआन की शिक्षा दी है । उसी ने मनुष्य को पैदा किया और उसे बोलना सिखाया । सूर्य और चन्द्रमा एक हिसाब के पाबन्द हैं और तारे और वृक्ष सब सजदा करते हैं । आकाश को उसने ऊंचा किया और तुला स्थापित कर दी । इससे अपेक्षित यह है कि तुम तुला में विघ्न उत्पन्न न करो, न्याय के साथ ठीक-ठीक तौलो और तराज़ू में डण्डी न मारो ।

धरती को उसने सब ख़िलक़त के लिए बनाया । उसमें हर प्रकार के बहुत से स्वादिष्ट फल हैं । खजूर के वृक्ष हैं जिनके फल वेष्टनों में लिपटे हुए हैं । तरह-तरह के अनाज हैं, जिनमें भूसा भी होता है और दाना भी । बताओ, तुम अपने प्रभु की किन-किन नेमतों को झुठलाओगे?

मनुष्य को उसने ठीकरी जैसे सूखे सड़े गारे से बनाया और जिन्न को आग की लपट से पैदा किया । बताओ, तुम अपने प्रभु के किन-किन सामर्थ्य-चमत्कारों को झुठलाओगे ?

दोनों पूर्व और दोनों पश्चिम, सबका प्रभु, सबका मालिक और पालनहार वही है बताओ, तुम अपने प्रभु की किन-किन सामर्थ्यों को झुठलाओगे?

दोनों समुद्रों को उसने छोड़ दिया कि परस्पर मिल जाएं, फिर भी उनके बीच एक परदा बाधक है जिसे वे पार नहीं करते । बताओ, तुम अपने प्रभु की सामर्थ्य के किन-किन चमत्कारों को झुठलाओगे? इन समुद्रों से मोती और मूंगे निकलते हैं । बताओ, तुम अपने प्रभु के सामर्थ्य की किन-किन कुशलतओं को झूठलाओगे?

और ये जहाज़ उसी के हैं जो समुद्र में पहाड़ों की तरह ऊंचे उठे हुए हैं । बताओ, तुम अपने प्रभु के किन-किन उपकारों झुठलाओगे ?

हर चीज़ 'जो इस धरती में है' नाशवान है और केवल तेरे प्रभु का प्रतापवान एवं उदार स्वरूप ही शेष रहनेवाला है । बताओ, तुम अपने प्रभु की किन-किन कुशलताओं को झुठलाओगे? धरती और आकाशों में जो भी है सब अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की उसी मांग कर रहे हैं । नित वह नई शान में है । बताओ, तुम अपने प्रभु के किन-किन प्रशस्त गुणों को झुठलाओगे?

हे धरती के बोझो, शीघ्र ही हम तुमसे पूछताछ के लिए निवृत्त हुए जाते हैं, (फिर देख लेंगे कि) तुम अपने प्रभु के किन-किन उपकारों झुठलाते हो । हे जिन्न और मनुष्य के गिरोह, यदि तुम धरती और आकशों की सीमाओं से निकलकर भाग सकते हो तो भाग देखो । नहीं भाग सकते । इसके लिए बड़ा ज़ोर चाहिए । अपने प्रभु के किन-किन सामर्थ्यों को तुम झुठलाओगे ? (भागने की कोशिश करोगे तो) तुम पर अग्नि-ज्वाला और धुआं छोड़ दिया जाएगा । जिसका तुम मुक़ाबला न कर सकोगे, बताओ, तुम अपनी प्रभु की किन-किन सामर्थ्यों का इन्कार करोगे ?

फिर (क्या बनेगी उस समय) जब आकाश फटेगा और लाल चमड़े की तरह लाल हो जाएगा? बताओ, (उस समय) तुम अपने प्रभु की किन-किन सामर्थ्यों को झुठलाओगे? (55:1-38)

अल्लाह ने स्वयं इस बात की गवाही दी है कि उसके सिवा कोई ईश नहीं है और फ़रिश्ते और सब ज्ञानवान भी सच्चाई और न्याय के साथ इस पर गवाह हैं कि उस बलशाली गहरी समझवाले के सिवा वास्तव में कोई ईश नहीं है । (3:18)

हज़रत ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

जब हज़रत अली (रज़ि॰) अपने ख़िलाफ़त के दौर में (सन 37 हिजरी में) मदीना मुनव्वरा छोड़कर कूफ़ा चले आये तो उनकी बेटी हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) और उनके पति हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि॰) भी कूफ़ा आ बसे। कूफ़ा में हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) पूरी एकाग्रता के साथ पढ़ने-पढ़ाने के काम में जुट गयीं। कूफ़ा की महिलाएं उनके पास आतीं, उनसे क़ुरआन मजीद पढ़तीं, आयतों की व्याख्या सुनतीं और अपनी समस्याओं का समाधान पूछतीं।

एक बार हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) कुछ महिलाओं के सामने सूरह कहफ़ की व्याख्या कर रही थीं। तभी हज़रत अली (रज़ि॰) वहां पहुंच गये। और अपनी बेटी की व्याख्या सुनने लगे। जब हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) व्याख्या कर चुकीं तो अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि॰) ने कहा :

"मेरी प्यारी बेटी, मैंने तुम्हारा बखान सुना और मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि तुम अल्लाह के कलाम का मतलब इतने अच्छे ढंग से बयान कर सकती हो।"

जल्द ही हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) के इल्म व फ़ज़्ल की चर्चा दूर-दूर तक फैल गयी। यह उनके जीवन का बेहतरीन दौर था। लेकिन अफ़सोस कि सुख और चैन की यह अवधि बहुत छोटी साबित हुई।

17 रमज़ान सन 40 हिजरी में हज़रत अली (रज़ि॰) कूफ़ा की मस्जिद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने सजदे में थे कि एक ख़ारजी अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम ने उन पर घातक हमला किया और अपनी ज़हर से बुझाई हुई तलवार से भरपूर वार किया और अमीरुल मोमिनीन को बुरी तरह घायल कर दिया। इब्न मुलजिम को मुसलमानों ने गिरफ़्तार कर लिया।

17 रमज़ान सन 40 हिजरी में हज़रत अली (रज़ि॰) कूफ़ा की मस्जिद में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामने सजदे में थे कि एक ख़ारजी अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम ने उन पर घातक हमला किया और अपनी ज़हर से बुझाई हुई तलवार से भरपूर वार किया और अमीरुल मोमिनीन को बुरी तरह घायल कर दिया। इब्न मुलजिम को मुसलमानों ने गिरफ़्तार कर लिया।

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने उसे देखा तो ग़ुस्से से बेताब हो उठीं और उसे संबोधित करते हुए कहा : "ऐ ख़ुदा के दुश्मन, तूने अमीरुल मोमिनीन को घायल कर डाला !!"

इब्न मुलजिम ने कहा : "अमीरुल मोमिनीन को नहीं, तुम्हारे बाप को।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने कहा : "अल्लाह ने चाहा तो उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा।"

इब्न मुलजिम बहुत ही बेशर्मी से बोला : "तो फिर चीख़-पुकार क्यों करती हो ? ख़ुदा की क़सम, मैंने कई दिनों तक अपनी तलवार को ज़हर पिलाया है।"

उसी ज़हरीली तलवार के घाव से अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली (रज़ि॰) को शहादत नसीब हुई। अपने पिता की मौत से उन पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा। लेकिन अभी उनके भाग्य में कुछ और भी सदमे झेलने बाक़ी थे। सन 49 हिजरी (या सन 50 हिजरी) में उनके बड़े भाई हज़रत हसन (रज़ि॰) भी शहीद कर दिये गये। उस समय हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) अपने पति और बच्चों के साथ मदीना मुनव्वरा में थीं।

ज़िलहिज्जा सन 60 हिजरी में सैयदना इमाम हुसैन (रज़ि॰) ने कूफ़ा वालों की दावत पर अपने परिजनों एवं अनुयायियों की एक छोटी-सी जमाअत के साथ मक्का से कूफ़ा की ओर कूच किया। हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) भी अपने दो बच्चों के साथ उस क़ाफ़िले में शामिल हो गयीं। हज़रत

अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि॰) स्वयं तो उस क़ाफ़िले में शामिल न हो सके लेकिन उन्होंने अपनी पत्नी और बच्चों को उनके साथ जाने की अनुमति दे दी ।

10 मुहर्रम सन 61 हिजरी को करबला की हृदयविदारक घटना घटी जिसमें हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) की आंखों के सामने उनके बेटे, भतीजे, भाई और अनेक रिश्तेदारों को सीरियाई सेना से लड़ते और एक-एक करके शहीद होते देखा । इस अवसर पर हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने जिस हौसले, साहस और धैर्य व संयम का सबूत दिया, इतिहास में उसकी मिसाल नहीं मिलती ।

कहा जाता है कि 9 और 10 मुहर्रम के बीच की रात में जब हज़रत इमाम हुसैन (रज़ि॰) की तलवार साफ़ की जाने लगी तो उन्होंने कुछ शेर पढ़े । हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) क़रीब ही थीं । उन्होंने जब इसे सुना तो रुहांसी हो उठी और अनायास ही बोल उठीं ।

"ऐ काश ! आज का दिन देखने के लिए मैं ज़िन्दा न होती । हाय, मेरे नाना, मेरी मां, मेरे बाप और मेरे भाई हसन सब मुझ को छोड़कर चले गये । ऐ मेरे भाई ! अल्लाह के बाद हमारा सहारा अब आप ही हैं, हम आपके बिना कैसे ज़िन्दा रहेंगे ?"

इमाम हुसैन (रज़ि॰) ने कहा, "ज़ैनब, धैर्य से काम लो ।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने रोते हुए कहा : "मेरे भाई, आपके बदले में मैं अपनी जान देना चाहती हूं ।"

"ऐ बहन, सब्र कर । ऐ बहन तुम्हें ख़ुदा की क़सम है कि यदि मैं हक़ की राह में काम आ जाऊं तो मेरे मातम में गरेबान न फ़ाड़ना, चेहरा न नोचना और बैन न करना ।

10 मुहर्रम को पहले हज़रत अ़ली अकबर बिन हुसैन (रज़ि॰) शहीद हुए । फिर अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अक़ील (रज़ि॰), अहमद बिन हसन (रज़ि॰), अबू बक्र अब्दुल्लाह बिन हसन (रज़ि॰), जाफ़र बिन अक़ील (रज़ि॰), उमर बिन अली (रज़ि॰), उस्मान बिन अली (रज़ि॰) आदि एक-एक करके शहीद हो गये ।

अब केवल 7 लोग बचे थे । हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने अपने दोनों बच्चों औन (रज़ि॰) और मुहम्मद (रज़ि॰) को लड़ने के लिए भेजने की अनुमति चाही । हज़रत हुसैन (रज़ि॰) को कुछ हिचकिचाहट थी लेकिन हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) के आग्रह के सामने उनकी कुछ न चली । दोनों नवजवान रण भूमि में गये और लड़ते-लड़ते शहादत का जाम पी लिया ।

फिर तो सभी लोग शहीद हो गये और हज़रत हुसैन (रज़ि॰) अकेले बच गये । ज़ैनुल आबिदीन (रज़ि॰) बीमार थे । उनको अल्लाह और ज़ैनब (रज़ि॰) के हवाले करके सब्ते रसूल (सल्ल॰) अपने आख़िरी सफ़र पर रवाना हो गये । लड़ते-लड़ते ज़ख़्मों से चूर हो गये । तभी हिस्सीन बिन नुमैर ने एक भाला फेंका जो उनके गर्दन में जा लगा

इदारे की हिन्दी प्रकाशन

दअ्वतुल क़ुरआन

तफ़सीर

शम्स पीरज़ादा (रह॰)

हिन्दी अनुवाद

मुहम्मद नसरुल्लाह

जिल्द-1
(पारा 1 से पारा 10 तक) सूरह फ़ातिहा ता सूरह तौबा ₹350/-

जिल्द-2
(पारा 11 से पारा 20 तक) सूरह यूनुस ता सूरह अनकबूत ₹350/-

जिल्द-3
(पारा 21 से पारा 30 तक) सूरह रूम ता सूरह नास ₹ 480/-

- मौज़ूअ और ज़ईफ़ हदीसों का चलन 9/-
- क्या क़ुरआन को समझ कर पढ़ना ज़रूरी नहीं? 10/-
- तलाक़ कब और कैसे? 6/-
- सुनो अपने रब (पालनहार की) 14/-
- पारा अम्म 120/-

इदारा दअ्वतुल क़ुरआन
59-मुहम्मद अली रोड, मुंबई-400003
फ़ोन : 23465005

और मुंह से ख़ून का फ़व्वारा फूट पड़ा । अपने चुल्लू में थोड़ा-सा ख़ून लेकर आसमान की तरफ़ उछाला और फ़रमाया :

"ऐ अल्लाह, जो कुछ तेरे हबीब के नवासे के साथ किया जा रहा है, तुझी से उसकी फ़रियाद करता हूं ।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने दूर से अपने भाई को इस हाल में देखा तो बेताब होकर एक टीले पर चढ़ गयीं और सीरियाई सेना के सरदार अम्र बिन साअ्द को पुकार कर कहा :

"ऐ अम्र बिन साअ्द ! क्या क़ियामत है कि अबू अब्दुल्लाह की हत्या की जा रही है और तुम देख रहे हो ।"

अम्र बिन साअ्द, आप (सल्ल॰) के मामूज़ाद भाई साअ्द बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि॰) का बेटा था । सत्ता की लालच ने उसकी आंख पर परदा डाल रखा था, लेकिन हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) की ललकार सुनकर उसका सिर शर्म से झुक गया । लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी । सीरियाई सैनिकों ने करबला के शहीदों के शरीरों को घोड़ों की टापों से रौंद डाला । हज़रत हुसैन (रज़ि॰) का सिर काट कर नीज़े पर चढ़ाया और फिर अह्ले बैअ्त के ख़ेमे की ओर बढ़े ।

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) उनके सामने खड़ी हो गयीं और कहा : "ख़ुदा की क़सम, जब तक मैं ज़िन्दा हूं उस बीमार को कोई क़त्ल नहीं कर सकता ।"

उनका इरादा देखकर वह अपने इरादे से बाज़ आ गया ।

12 मुहर्रमुल हराम को सेना में हुसैनी क़ाफ़िला के बचे-खुचे लोगों को क़ैद करके कूफ़ा की ओर चल पड़े । क़ैदियों में महिलाओं के साथ नन्हा और बीमार आबिद भी शामिल था । जब यह क़ाफ़िला कूफ़ा में दाख़िल हुआ तो कूफ़ा के लोग हज़ारों की संख्या में जमा हो गये । बेवफ़ा कूफ़ियों की भीड़ को देखकर शेरे ख़ुदा हज़रत अली (रज़ि॰) की बेटी बिफर पड़ीं और उनको संबोधित करते हुए कहा :

"ऐ कूफ़ियो, ऐ मक्कारो, ऐ वादे से फिर जाने वालो, अल्लाह करे तुम्हारी आंखें हमेशा रोती रहें । तुम्हारी मिसाल उन औरतों के समान है जो ख़ुद की सूत कातती और फिर उसे टुकड़े-टुकड़े कर देती है । तुमने ख़ुद ही मेरे भाई के हाथ पर बैअ्त किया और ख़ुद ही तोड़ डाला । तुम्हारे दिलों में खोट और कीना है । तुम्हारे स्वभाव में झूठ और दग़ाबाज़ी है । ख़ुशामद, शेखी और ज़ुबान से फिर जाना तुम्हारे प्रकृति में है । तुमने जो कुछ आगे भेजा है वह बहुत बुरा है । तुमने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के नवासे को जो जन्नत में जवानों के सरदार हैं की हत्या की है । ख़ुदा का क़हर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है ।

ऐ कूफ़ा वालो ! तुमने बहुत गुनाह किया है । याद रखो तुम्हारा रब नाफ़रमानों की ताक में है । उसके हां देर है अंधेर नहीं ।"

दूसरे दिन क़ैदियों को कूफ़ा के गवर्नर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के दरबार में पेश किया गया । हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) बहुत ही ख़स्ताहाल थीं । इब्न ज़ियाद ने पूछा : "यह औरत कौन है ?"

एक लौंडी ने जवाब दिया : "ज़ैनब बिन्त अली (रज़ि॰)।"

इब्न ज़ियाद ने कहा : "ख़ुदा का शुक्र है जिसने तुम्हें रुसवा किया ।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने जवाब दिया : "ख़ुदा का शुक्र है जिसने अपने रसूल (सल्ल॰) के ज़रिया हमें इज़्ज़त बख़्शी । अल्लाह ने चाहा तो फ़ासिक़ रुसवा होंगे और झुटलाये जाएंगे ।"

इब्न ज़ियाद ने कहा : "तुम ने देखा तुम्हारे भाइयों और उसके साथियों का क्या हश्र हुआ ?"

"अल्लाह तआला ने उन्हें शहादत का दर्जा अता किया ।"

उसने झल्लाकर कहा, "बनू हाशिम के सबसे सरकश आदमी के क़त्ल से मेरा दिल ठंडा हो गया ।"

फिर उसकी नज़र हज़रत ज़ैनुल आबिदीन (रज़ि॰) पर पड़ी तो पूछा : "लड़के तुम कौन हो ?"

"अली बिन हुसैन (रज़ि॰) ।"

उसने अम्र बिन सअद से पूछा : "इसकी हत्या क्यों नहीं की ?"

"वह बीमार है ।"

इब्न ज़ियाद ने कहा, "उसे मेरे सामने मार डालो ।"

हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) ने कहा : "यदि उसकी हत्या करनी है तो मुझे भी मार डाल ।"

बहरहाल कुछ दिन तक वहां रुकने के बाद इब्न ज़ियाद ने क़ैदियों को यज़ीद के पास दमिश्क़ भेज दिया ।

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

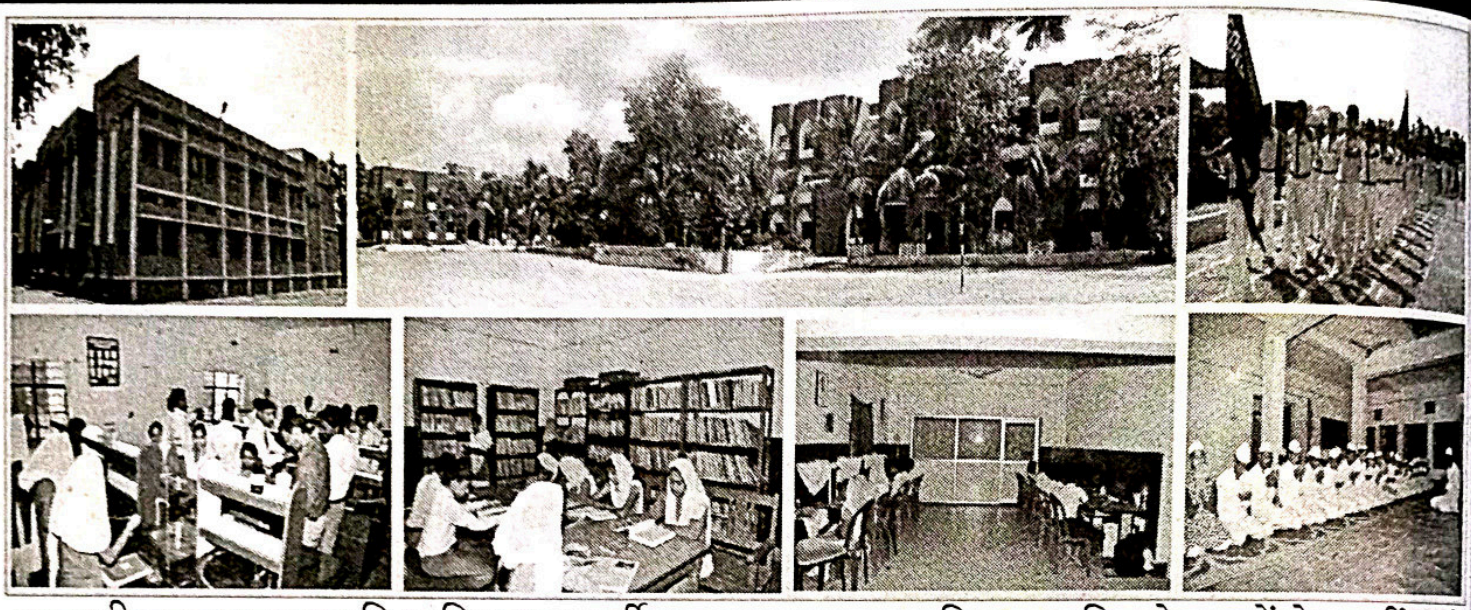

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम	साद राशिद ख़ान नदवी	वकील अहमद
एम ए , बी एड ए (अलीग)	फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ	एम एस सी., बी एड
निदेशक	छात्रावास अधिक्षक	प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

इस्लाम की धारणाएं और शिक्षाएं

■ इस्लाम के उद्भव, उसकी प्रमुख धारणाओं और शिक्षाओं को विस्तार के साथ बताने का कष्ट करें ?

संजय कुमार शर्मा
टी॰एन॰बी॰ कॉलेज कैम्पस
भागलपुर (बिहार)

जवाब : ईश्वर ने इन्सान को पैदा किया है, लेकिन उसे पैदा करके यूं ही नहीं छोड़ दिया कि मनमाना जीवन व्यतीत करे और स्वच्छंदता की राह अपनाए । ईश्वर की यह दयादृष्टि रही कि उसने इन्सानों की रहनुमाई और मार्गदर्शन के लिए अपने संदेष्टा, पैग़म्बर और रसूल भेजे और यह सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर समाप्त कर दिया गया । संसार में जितने भी धर्म उनमें से हर एक का नाम या तो किसी विशेष व्यक्ति के नाम पर रखा गया है या उस जाति व क़ौम के नाम पर जिसमें वह धर्म पैदा हुआ । परंतु इस्लाम की विशेषता यह है कि उसका नाम एक विशेष गुण को प्रकट करता है, जो ''इस्लाम'' शब्द के अर्थ में पाया जाता है । इस नाम से स्वयं विदित है कि यह किसी व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज नहीं है, न किसी विशेष जाति व क़ौम तक सीमित है । इसका संपर्क व्यक्ति, देश या जाति से नहीं । इसका उद्देश्य लोगों में केवल इस्लाम का गुण करना है । प्रत्येक काल, युग, क़ौम और जाति के जिन सच्चे और नेक लोगों में यह गुण पाया गया है वे सब मुस्लिम थे, मुस्लिम हैं और भविष्य में भी होंगे । इस दृष्टि से इस्लाम सनातन धर्म है ।

अरबी भाषा में इस्लाम का अर्थ हुक्म मानना, आत्म समर्पण और आज्ञापालन । इस्लाम धर्म का नाम ''इस्लाम'' इसलिए रखा गया है कि यह अल्लाह के आदेशों का अनुवर्तन और उसका आज्ञापालन है । जो ईश्वरीय आदेशों का पालन करता है, वह मुस्लिम है ।

● यद्यपि इस्लाम का अर्थ केवल अल्लाह का आज्ञापालन है, परंतु ईश्वर को सत्ता, गुण और उसकी इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत करने का तरीक़ा और 'आख़िरत' (परलोक) के दंड और पुरस्कार का यथार्थ ज्ञान केवल ईश्वर के पैग़म्बर ही के द्वारा प्राप्त हो सकता है, इसलिए इस्लाम धर्म की वास्तविक परिभाषा यह हुई कि पैग़म्बर की शिक्षा पर ईमान लाना और उसके बताये हुए तरीक़े पर अल्लाह की बन्दगी करना 'इस्लाम' है । जो व्यक्ति पैग़म्बर के रास्ते को छोड़कर सीधे ईश्वर के आज्ञापालन और उसके आदेशों के पालन करने का दावा करे वह 'मुस्लिम' नहीं है ।

● प्राचीन काल में अलग-अलग जातियों के लिए अलग-अलग पैग़म्बर आये थे और एक ही जाति में एक के बाद दूसरे कई पैग़म्बर आया करते थे । उस समय हर जाति के लिए 'इस्लाम' उस धर्म का नाम था जो ख़ास उसी जाति के पैग़म्बर या पैग़म्बरों ने सिखाया, यद्यपि इस्लाम की वास्तविकता हर देश में और हर युग में एक ही थी, परंतु धर्म-विधान (शरीअतें) अर्थात 'क़ानून' और 'इबादत' (उपासना) के तरीक़े कुछ भिन्न थे । इसलिए एक अनुसरण ज़रूरी न था, यद्यपि 'ईमान' सब पर लाना ज़रूरी था ।

● हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) जब पैग़म्बर बनाकर भेजे गये, तो आपके द्वारा इस्लाम की शिक्षा को पूर्ण कर दिया गया और संपूर्ण संसार के लिए एक ही धर्म-विधान (शरीअत) भेजा गया । आपकी 'नुबूवत' (पैग़म्बरी) किसी विशेष जाति या देश के लिए नहीं, बल्कि आदम की समस्त संतानों के लिए है और हमेशा के लिए है । 'इस्लाम' के जो धर्म-विधान (शरीअतें) पिछले पैग़म्बरों ने प्रस्तुत किये थे, वे सब हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के आने के पश्चात मंसूख़ (निरस्त) कर दिये गये और अब क़ियामत तक न कोई नबी (पैग़म्बर) आने वाला है, और न कोई दूसरा धर्म-विधान (शरीअतें) ईश्वर की ओर से उतरने वाला है । अतः अब 'इस्लाम' केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के अनुसरण का नाम है । आपकी नुबूवत (पैग़म्बरी) को मानना और आपके विश्वास पर उन सब बातों को मानना जिन पर ईमान लाने की आपने शिक्षा दी है और आपके समस्त

आदेशों को ईश्वरीय आदेश समझकर उनका पालन करना 'इस्लाम' है । अब कोई और ऐसा व्यक्ति ईश्वर की ओर से आने वाला नहीं है जिसको मानना मुस्लिम (ईश्वर की आज्ञाकारी) होने के लिए आवश्यक हो और जिसे न मानने से मनुष्य 'काफ़िर' हो जाता हो ।

आइए, अब हम आपको बताएं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने किन-किन बातों पर 'ईमान' लाने की शिक्षा दी है, वे कैसी सच्ची बातें हैं और उनको मानने से मनुष्य का पद कितना ऊंचा हो जाता है ।

अल्लाह पर ईमान

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सबसे पहली और सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा यह है : 'ला इलाह इल्लल्लाह'। अल्लाह के सिवा कोई 'इलाह' (पूज्य) नहीं ।

यह 'कलाम' (उक्ति) इस्लाम की आधारशिला है । जो चीज़ मुस्लिम को एक 'काफ़िर, एक मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) और एक नास्तिक (Atheist) से अलग करती है वह यही है । इसी 'कलमे' के मानने और न मानने से मनुष्य के बीच महान अंतर हो जाता है । इसको मानने वाले एक समुदाय (Community) बन जाते हैं और न मानने वाले दूसरा गिरोह । इसके मानने वालों के लिए संसार से लेकर 'आख़िरत' (परलोक) तक उन्नति, सफलता और प्रतिष्ठा है और न मानने वालों के लिए नैराश्य, अपमान और तिरस्कार ।

अल्लाह के फ़रिश्तों पर ईमान

अल्लाह पर ईमान के बाद दूसरी चीज़ जिस पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने 'ईमान' लाने का आदेश दिया है वह फ़रिश्तों का अस्तित्व है, और बड़ा लाभ इस शिक्षा का यह है कि इससे 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) की धारणा को 'शिर्क' (Polytheism) की समस्त आशंकाओं से मुक्ति मिल जाती है ।

'मुश्रिकों' (बहुदेववादियों) ने ईश्वरत्व में सृष्टि की दो प्रकार की चीज़ों को सम्मिलित किया है एक प्रकार तो उनका है जिनका भौतिक (Material) अस्तित्व है और जो दीख पड़ती हैं, जैसे सूर्य चन्द्रमा और तारे, आग और पानी और मनुष्यों में महान लोग इत्यादि । दूसरा प्रकार उनका है जिनका अस्तित्व भौतिक नहीं है बल्कि वे निगाहों से ओझल हैं और परोक्ष रूप से विश्व का प्रबंध कार्य कर रही हैं, जैसे कोई हवा चलाने वाली और कोई पानी बरसाने वाली और कोई प्रकाश संचित करने वाली । इनमें से पहले प्रकार की चीज़ें तो मनुष्य की आंखों के सामने मौजूद हैं । इसलिए उनके ईश्वर होने का निषेध स्वयं 'ला इलाह इल्लल्लाह' के शब्दों ही से हो जाता है, परंतु दूसरे प्रकार की चीज़ें अप्रत्यक्ष और रहस्यमय हैं । 'मुशरिक' (अनेकेश्वरवादी) अधिकतर उन्हीं पर अनुरक्त हैं, उन्हीं को देवता और ईश और ईश्वर की संतान समझते हैं, उन्हीं की काल्पनिक प्रतिमाएं बनाकर भेंट और पूजा चढ़ाते हैं, अतएव एकेश्वरवाद को 'शिर्क' (अनेकेश्वरवाद) की इस दूसरी शाखा से बचाने के लिए एक स्थायी धारणा का वर्णन किया गया है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने हमें बताया है कि ये छिपी हुई सूक्ष्म सत्ताएं (Spiritual beings), जिनको देवता और ईश और ईश्वर की संतान कहते हो वास्तव में ये ईश्वर के 'फ़रिश्ते' हैं । इनका ईश्वरत्व में कोई अधिकार और भाग नहीं है । ये सब ईश्वर के आज्ञाकारी हैं और इतने अनुवर्ती हैं कि ईश्वरीय आदेश का तनिक भी उल्लंघन नहीं कर सकते ।

अल्लाह की किताबों पर ईमान

तीसरी चीज़ जिस पर 'ईमान' लाने की शिक्षा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के द्वारा हमको दी गयी है, वे अल्लाह की किताबें हैं जो उसने अपने 'नबियों' (पैग़म्बरों) पर उतारीं ।

ईश्वर ने जिस तरह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर क़ुरआन उतारा है, उसी तरह आपसे पहले जो रसूल (पैग़म्बर) हुए हैं, उनके पास भी किताबें भेजी थीं । उनमें से कुछ किताबों के नाम हमको बता दिये गये हैं, जैसे इबराहीम के 'सहीफ़े' जो हज़रत इबराहीम (अलैहि०) पर अवतीर्ण हुए, तौरात (Torah) जो हज़रत मूसा (अलैहि०) पर उतरी । ज़बूर (Psalms) जो हज़रत दाऊद के पास भेजी गयी और इंजील (Gospel) जो हज़रत ईसा (अलैहि०) को दी गयी । इनके अतिरिक्त दूसरी किताबें जो दूसरे रसूलों (पैग़म्बरों) के पास आयी थीं उनके नाम हमें नहीं बताये गये । इसलिए किसी और धार्मिक ग्रंथ के बारे में हम निश्चित रूप से न यह कह सकते हैं कि वह ईश्वर की ओर से है और न यह कह सकते हैं कि वह ईश्वर की ओर से नहीं । हां, हम 'ईमान' लाते हैं कि जो ग्रंथ भी ईश्वर की

ओर से अवतीर्ण हुए थे वे सब सत्य थे ।

कुरआन सबसे अंतिम ग्रंथ है । इसमें और पिछले ग्रंथों में कई हैसियत के अंतर हैं–

1. पहले जो ग्रंथ आये थे उनमें से अधिकतर की मूल प्रतियां संसार से लुप्त हो गयीं और उनके केवल अनुवाद रह गये, परंतु कुरआन जिन शब्दों में अवतीर्ण हुआ था ठीक-ठीक उन्हीं शब्दों में मौजूद है । उसके एक अक्षर एक मात्रा में भी परिवर्तन नहीं हुआ ।

2. पिछले ग्रंथों में लोगों ने ईश्वरीय वाणी में अपना 'कलाम' मिला दिया है । एक ही ग्रंथ में ईश्वरीय वाणी भी है, जातीय इतिहास भी है, महापुरुषों के वृत्तांत भी हैं, टीका और व्याख्या भी है और धर्मशास्त्रियों के निकाले हुए धार्मिक मसले भी हैं । और ये सब चीज़ें इस तरह गड्मड् हैं कि ईशवाणी को इनमें से अलग छांट लेना संभव नहीं है, परंतु कुरआन में विशुद्ध ईश्वरीय वाणी (Words of God) हमें मिलती है और उसमें किसी दूसरे का कलाम का लेशमात्र भी सम्मिश्रण नहीं है ।

अल्लाह के रसूलों पर ईमान

ग्रंथों के पश्चात हम को ईश्वर के समस्त रसूलों (पैग़म्बरों) पर भी 'ईमान' लाने का आदेश दिया गया है । ईश्वर के रसूल संसार की समस्त जातियों के पास आये थे और उन सब ने उसी इस्लाम की शिक्षा दी थी जिसकी शिक्षा देने के लिए अंत में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) आये । इस दृष्टि से ईश्वर के सब रसूल एक ही गिरोह के लोग थे । यदि कोई व्यक्ति उनमें से किसी एक को भी झूठा ठहराये तो मानो उसने सबको झुठला दिया और किसी एक की भी तस्दीक़ करे तो आप-से-आप उसके लिए आवश्यक हो जाता है कि सबकी तस्दीक़ करे ।

यही कारण है कि इस्लाम में सभी रसूलों पर 'ईमान' लाना आवश्यक है, जो व्यक्ति किसी रसूल (पैग़म्बर) पर 'ईमान' न लाएगा वह 'काफ़िर' (अविश्वासी) होगा भले ही यह अन्य सभी 'रसूलों' को मानता हो ।

कुछ उल्लेखों के अनुसार संसार की विभिन्न जातियों में जो नबी (पैग़म्बर) भेजे गये हैं उनकी संख्या एक लाख चौबीस हज़ार है । यदि आप विचार करें कि दुनिया कब से आबाद है और उसमें कितनी जातियां गुज़र चुकी हैं तो यह संख्या कुछ भी ज़्यादा मालूम न होगी ।

आख़िरत पर ईमान

पांचवीं चीज़ जिस पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने हमें ईमान लाने की शिक्षा दी है वह 'आख़िरत' है । आख़िरत के बारे में जिन चीज़ों पर 'ईमान' लाना आवश्यक है वे ये हैं–

1. एक दिन ईश्वर संपूर्ण विश्व और सृष्टि के जीव आदि को मिटा देगा । उस दिन का नाम 'क़ियामत' है ।

2. फिर वह सबको दूसरा जीवन प्रदान करेगा और सब ईश्वर के सामने उपस्थित होंगे, इसको 'हश्र' कहते हैं ।

3. सब लोगों ने अपने सांसारिक जीवन में जो कुछ किया है उसका पूरा अभिलेख ईश्वरीय अदालत में प्रस्तुत किया जाएगा ।

4. ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति के अच्छे और बुरे कर्म को तौलेगा । जिसकी भलाई ईश्वर की तुला में बुराई से अधिक भारी होगी उसे क्षमा दान करेगा और जिसकी बुराई का पल्ला भारी रहेगा उसे दंड देगा ।

5. जिन लोगों को क्षमा मिल जाएगी, वे 'जन्नत' (स्वर्ग) में जाएंगे और जिनको दंड दिया जाएगा वे 'दोज़ख़' (नरक) में जाएंगे ।

इस्लाम के पांच स्तंभ हैं–(1) तौहीद (एकेश्वरवाद), जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है । (2) नमाज़ (3) रमज़ान (4) ज़कात और (5) हज ।

UNITED ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand

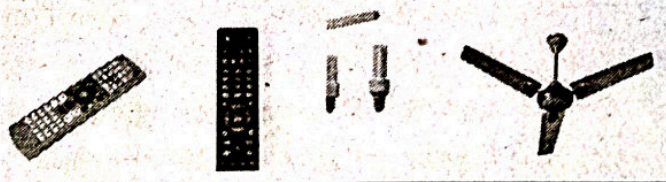

देश को अब नैतिक और सांस्कृतिक क्रांति की ज़रूरत

■ शबाना अली

हम जिस मुल्क में रह रहे हैं, वह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश कहा जाता है । इस लोकतंत्र को पाने के लिए हमारे पूर्वजों ने संघर्ष किया और शहीद हुए तब हमें यह आज़ादी मिली । ज़ाहिर है हमने आज़ादी पाने के लिए योगदान किया । हमें यह आज़ादी बिना किसी मेहनत, क़ुरबानी के विरासत में या कहें कि मुफ़्त में मिल गयी । जो चीज़ मुफ़्त में या आसानी से बिना मेहनत किये मिल जाती है उसकी लोग क़द्र नहीं करते । हम उसका दुरुपयोग करने लगते हैं । आज देश में जिस तरह के हालात हैं, ऊपर से लेकर नीचे तक जो कुछ हो रहा है, क्या वही आज़ादी है ?

हर आदमी लोकतंत्र की अपने ढंग से व्याख्या कर मनमानी कर रहा है । संविधान का सम्मान नहीं हो रहा और अपने स्वार्थों के लिए संसद को अखाड़ा बना देते हैं । आज के हालात को देखते हुए कहा जा सकता है कि लोकतंत्र के नाम पर हमें सिर्फ़ दो चीज़ें ही हासिल हैं । पहली, हमें वोट देने का अधिकार है जिसके तहत हम अपनी पसंद का नेता चुन सकें । यानी हमें अपनी सरकार चुनने का अधिकार है । दूसरा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता । अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर हम अपनी बात नहीं कह रहे, बल्कि दूसरों को गालियां दे रहे हैं । दूसरों को अपमानित कर रहे हैं । विद्वेष फैला रहे हैं । सामाजिक समरसता की जगह समाज में कटुता और विष वमन कर रहे हैं ।

हर आदमी लोकतंत्र की अपने ढंग से व्याख्या कर मनमानी कर रहा है । संविधान का सम्मान नहीं हो रहा और अपने स्वार्थों के लिए संसद को अखाड़ा बना देते हैं । आज के हालात को देखते हुए कहा जा सकता है कि लोकतंत्र के नाम पर हमें सिर्फ़ दो चीज़ें ही हासिल हैं । पहली, हमें वोट देने का अधिकार और दूसरा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ।

सरकार चुनने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अलावा हमारे पास आज़ादी के नाम पर क्या है । ख़बरें पढ़ने को मिल रही हैं गुंडों ने सरेआम सिपाही को गोली मार दी । बदमाश पुलिस से भिड़े । व्यापारी को गोली मारी । पिता को मौत के घाट उतारा । मां को मार डाला । भाई की हत्या कर दी । लोगों को क़ानून और न्याय व्यवस्था का डर ही नहीं है । सरेआम गोलियां चलाना या हत्या कर देना मानों कुछ लोगों का अधिकार बन गया है । क़ानून व्यवस्था को अपने हाथ में लेना जैसे लोगों का शौक़ बन गया है । गुंडे अपनी समानांतर सरकार चलाते सुने गये हैं । जजों पर जूता फेंका जाता है । दबंग लोग, सरकारी, ग़ैर-सरकारी ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं उनकी तरफ़ आंख उठाने वाला कोई नहीं होता । जो आंख उठाता है वह ख़ुद ही उठ जाता है ।

देश में भ्रष्टाचार अपने चरम पर है । बिना भ्रष्टाचार के आप कोई काम नहीं करा सकते । जब राजनीति ही भ्रष्टाचार के दलदल में धंसी है तो मशीनरी का भ्रष्ट होना स्वाभाविक है । जो नेता सरकार उत्सवों या सामाजिक समारोहों में हमें नैतिकता और ईमानदारी का पाठ पढ़ाते हैं वही मंच से उतरकर उसी काम को करने लगते हैं तब जनता उनके

उपदेशों को क्यों मानेगी । नेताओं का यह हाल है कि उनका कोई सिद्धांत नहीं, उनकी कोई विचारधारा नहीं, जहां सत्ता सुख या लालच देखा उसी पार्टी में घुस गये । कल तक जो जिसको गरियाते थे आज उन्हीं के चरणों में पड़े हुए हैं । सरकार चुनने के नाम पर हम सही सरकार भी नहीं चुन सकते । हम तो भ्रष्टों में से कम भ्रष्ट चुनते हैं और कई बार वह भी नहीं । कई बार लालच में तो कई बार अपना स्वार्थ देखते हैं और देशहित को पीछे छोड़ देते हैं ।

गुलाम और आज़ाद देश में सिर्फ़ यही फ़र्क है कि हम स्वतंत्रता के नाम पर किसी को भी गाली दे दें, किसी पर भी आरोप लगा दें । किसी भी समाज को अपमानित कर दें । क्या यही लोकतंत्र के मायने हैं । बलात्कार, लूट, डकैती, हत्या, रंगदारी, हफ़्ता वसूली करने जैसे जुर्म में कई बार जेल जाते हैं और वहां से आने के बाद फिर अपने काम पर लौट आते हैं । ऐसे अपराधियों के लिए ही यह लोकतंत्र है । आज मेरा धर्म, मेरी जाति, मेरा संप्रदाय, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरा परिवार और ज़्यादा हुआ तो स्वार्थ के नाम पर मेरा प्रांत तक मामला सिमटकर रह गया है । कोई भी देश की बात नहीं करता । हां, देश का नाम लेकर राजनीति ज़रूर करते हैं जिससे नाम और दाम कमाते हैं । देश और देश का नाम सिर्फ़ राजनीति करने और सत्ता हासिल करने के लिए किया जाता है । सब लोग ख़ेमों में बंटे हुए हैं । कुछ लोग देश का नाम लेकर नफ़रत, वैमनस्यता, सांप्रदायिकता और विद्वेष फैलाते हैं ।

स्वतंत्रता के नाम पर दस लोग इकट्ठा हो जाते हैं और किसी भी नाम की सेना बनाकर किसी पर भी हमला कर देते हैं । ये कथित सेना के लोग खुद जज बन जाते हैं और तुरंत दंड देने लगते हैं । अगर यही लोकतंत्र है तो जंगलराज क्या है ? क्या इसी लोकतंत्र पर हम गर्व करें जहां के लोगों में नैतिकता, हया, शर्म, छोटे-बड़े का सम्मान ख़त्म हो गया है । हर दबंग जज बन गया है, वह समानांतर चला रहा है । क्या ऐसे ही लोकतंत्र के लिए लाखों लोगों ने क़ुरबानी दी थी । कई बार लगता है कि उनकी शहादत हमने व्यर्थ कर दी है । जिस देश के लोगों के दिलों में क़ानून का डर और न्यायपालिका का सम्मान नहीं होता उस देश में लोकतंत्र का कोई मतलब नहीं । ऐसी हालत में नैतिक क्रांति की ज़रूरत है जो देश में अमन क़ायम कर सके । देश को गांधी, नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, अशफ़ाक़उल्लाह ख़ान, भगत सिंह, राजगुरु जैसे शूरवीरों ने देश को विदेशियों से आज़ाद करा दिया, अब कबीर, तुलसी, रहीम, बिहारी, सूरदास और दूसरे बड़े दार्शनिकों, लेखकों की ज़रूरत है जो देश के लोगों को नैतिकता, भाईचारा, आपसी सद्भाव के लिए संघर्ष करें । लोगों में ईश्वर के प्रति ख़ौफ़ पैदा करें ताकि आदमी बुरा और अनैतिक काम करते हुए डरे ।

दोहे

मानव का अज्ञान ही, दुख का कारण मीत ।
पा लेता है ज्ञान जब, लेता दुख को जीत ।।
दुखिया बहु संसार में, होते दुख से पस्त ।
पहला दुखिया रंक हो, दूजा हो ऋणग्रस्त ।।
दुर्जन से रखना नहीं, मितवा मेल-मिलाप ।
रहना उससे दूर तुम, सुखी रहोगे आप ।।
एक दुष्ट के दोष से, हो जाता नुक़सान ।
ख़ुद का भी करता रहे, नित्य वह अकल्याण ।।
दोष निकालो और में, ख़ुद बनता निर्दोष ।
सब दोषों को मार कर, करो बात तुम ठोस ।।
दान, भोग 'औ' नाश ही, धन की गतियां तीन ।
करता रहता दान जो, मानव बने ज़हीन ।।
होता मीत प्रकाश से, अंधकार का नाश ।
पाकर मानव ज्ञान को, जैसे करे विकास ।।
रखता अपने भाव पर, पूरा वह अधिकार ।
योगी भी रखता नहीं, रखता है मक्कार ।।
बने धूर्तता मीत अब, निर्बल का हथियार ।
ठगती रहती और को, समझ इसे अधिकार ।।
नेता में होती बहुत, मीत धूर्तता ख़ास ।
जनता के सम्मुख करें, इसका वह उपवास ।।

रोहित यादव
सैदपुर, मंडी अटेली-123021 (हरि०)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की न्याय-प्रणाली

■ अब्दुल अज़ीज़

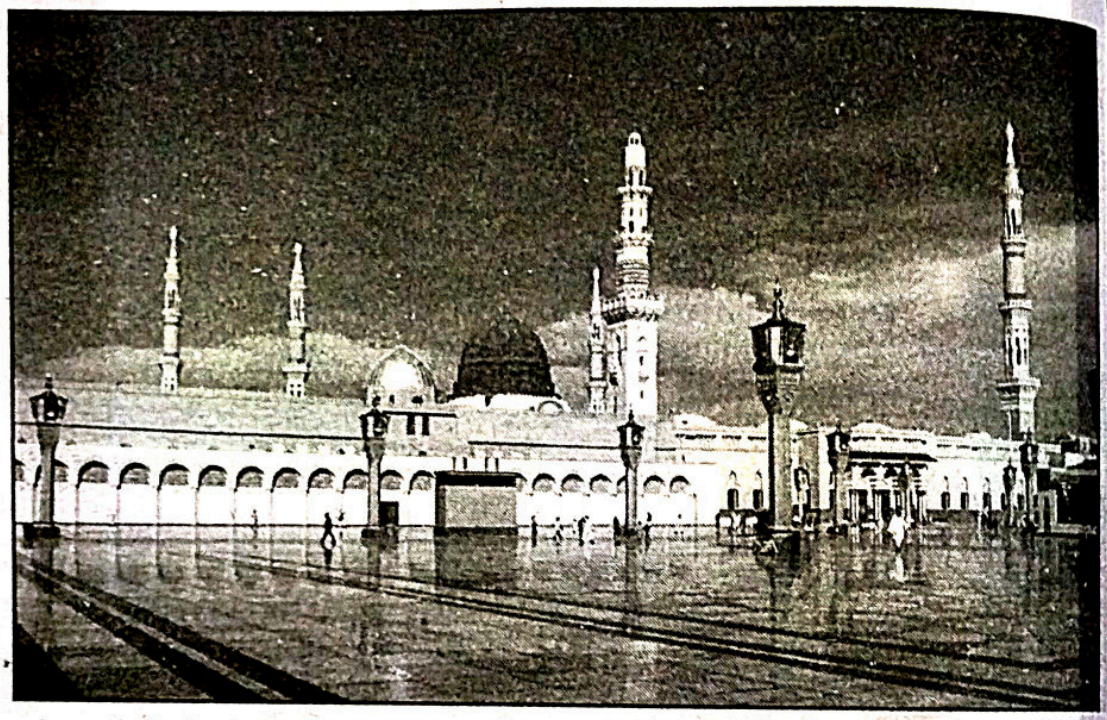

हदीस और इस्लामी धर्मशास्त्र की किताबों में अदालत में न्यायाधीश के व्यवहार से संबंधित विस्तृत नियम-सिद्धांत दिये हुए हैं, जिनका बेहतरीन नमूना हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ख़ुद थे। न्याय करते समय जज को गुस्से की हालत में नहीं होना चाहिए। उसे सख़्ती से अल्लाह की पवित्र किताब 'कुरआन' पर अमल करना चाहिए और हमेशा कुरआन में अवतरित अल्लाह के आदेशों के अनुसार ही निर्णय करना चाहिए।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के आदेशों और फ़ैसले का अनुसरण जजों पर अनिवार्य है। अगर यह संदर्भ कोई रहनुमाई न करे, तो न्यायाधीशों को अपनी राय पर अमल करने की इजाज़त है। दोनों पक्षों को बराबरी से बैठाना चाहिए और बिना किसी भेदभाव के उन्हें अवसर दिया जाना चाहिए। दोनों पक्षों को अनिवार्य रूप से सुना जाए और जब तक दूसरे पक्ष को उसी तरह न सुन लिया जाए, जिस तरह पहले पक्ष को, मुक़दमे के फ़ैसले की घोषणा न की जाए।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने किसी अभियोग में हक़ साबित करने के लिए नियम व सिद्धांत बनाए और वादी व प्रतिवादी की ज़िम्मेदारी के लिए भी नियम बनाए। आप (सल्ल॰) के द्वारा बनाए गये एक बुनियादी नियम व सिद्धांत का उल्लेख सही मुस्लिम की रिवायत में मिलती है–"अगर वादियों के दावों को (बिना सबूत) स्वीकार कर लिया जाए, तो वे लोगों का ख़ून और उनकी जायदादें मांगना शुरू कर देंगे, मगर क़सम का दायित्व प्रतिवादी पर है।"

उपर्युक्त आम नियम के आधार पर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने एक विशेष नियम व सिद्धांत निर्धारित किया है–"सबूत का भार (अलबत्ता) वादी पर है और प्रतिवादी के लिए क़सम (शपथ) है। इस नियम पर आप (सल्ल॰) ने निम्नलिखित फ़ैसले में अमल किया। एक व्यक्ति हज़्रे मौत से और दूसरा कंदा से आप (सल्ल॰) के पास आया। हज़्रमी ने बयान किया, "इस व्यक्ति ने मेरी ज़मीन में हस्तक्षेप किया है" कंदी ने कहा, "वह मेरी ज़मीन है और मेरे क़ब्ज़े में है। उस पर इसका कोई हक़ नहीं" रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने हज़्रमी से पूछा, "तुम्हारे पास कोई सबूत है ? उसने कहा, "नहीं !" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "फिर तुम इसकी क़सम क़बूल करो।"

उसने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! यह व्यक्ति स्वतंत्र विचारों वाला है, यह अपनी क़सम की परवाह नहीं करता और किसी बात से परहेज़ नहीं करता।" आप (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "इसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए सिवाय इसके कुछ नहीं।" दूसरा आदमी क़सम खाने के लिए तैयार हो गया। जब वह चला गया, तो आप (सल्ल॰) ने

न्यायिक आदर्श की स्थापना

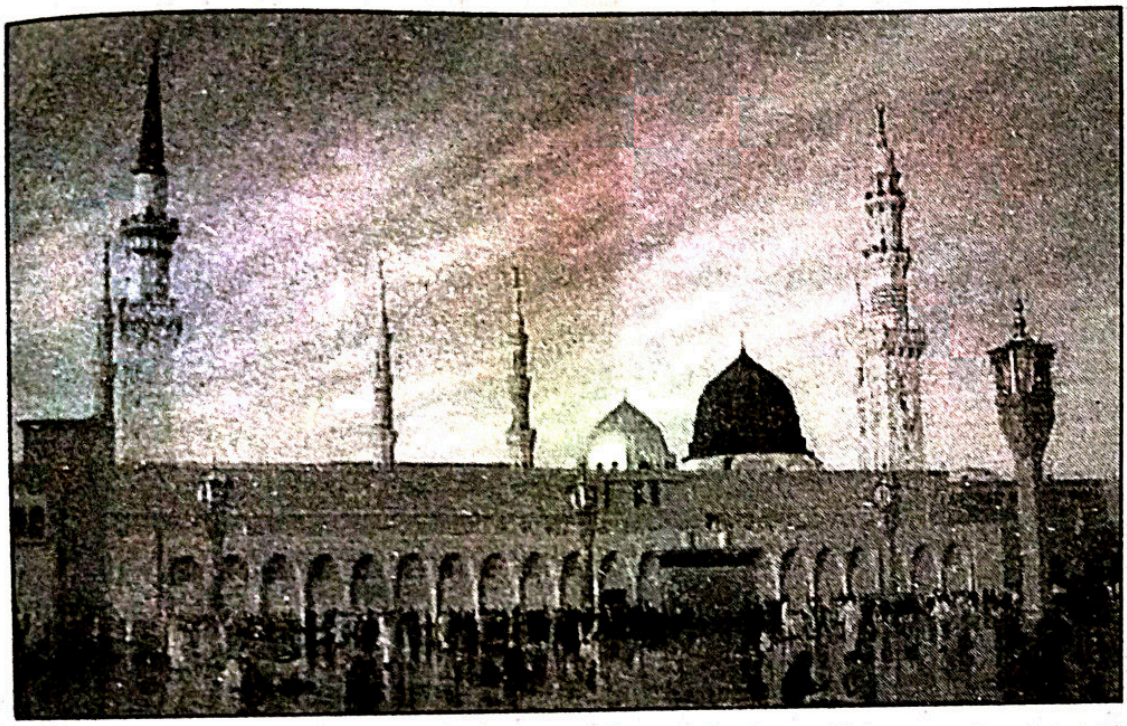

वादी पक्ष से कहा, ''अगर वह अवैध रूप से तुम्हारी जायदाद पर फलने-फूलने के लिए झूठी क़सम खाता है, तो वह अल्लाह से इस तरह मिलेगा कि वह उसकी ओर से मुंह फेरे हुए होगा ।''

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की न्यायप्रणाली में अपराधी का इक़बाले जुर्म, मुक़दमे के फ़ैसले के लिए काफ़ी सबूत समझा गया था । नमूने के तौर पर कुछ अहम मुक़दमे जिनका फ़ैसला अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने इक़बाले जुर्म (अर्थात अभियुक्त का अपराध को स्वीकार कर लेने) के आधार पर किया, जो निम्नलिखित इस तरह हैं–

''माज़ बिन मालिक अल-असलमी (रज़ि०) ने ज़िना (व्यभिचार) का गुनाह किया । उन्होंने अदालत में अपने अपराध को स्वीकार किया और उन्हें इसकी सज़ा दी गयी । हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) ने यह मुक़दमा इस तरह रिवायत किया है–''एक व्यक्ति आप (सल्ल०) के पास आया । आप मस्जिद में थे । उसने आप (सल्ल०) को संबोधित करते हुए कहा, ''हे अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! मैंने व्यभिचार का गुनाह किया है ।'' रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उसकी तरफ़ से अपना मुंह फेर लिया । वह उस तरफ़ गया, जिधर आपका चेहरा मुबारक था और कहा, ''हे अल्लाह के रसूल (सल्ल०)! मैंने व्यभिचार का गुनाह किया है ।'' आपने उसकी तरफ़ से फिर मुंह फेर लिया । वह आप (सल्ल०) की मुंह की तरफ़ चला गया और अपने अपराध को स्वीकार किया। इस तरह उसने चार बार अपने अपराध को स्वीकार कर लिया था । रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उसे जिरह के लिए बुलाया । आप (सल्ल०) ने उससे पूछा–

''क्या तुम विक्षिप्तता में ग्रस्त हो !'' उसने आप (सल्ल०) से कहा, ''नहीं''। आपने उससे पूछा, ''क्या तुम विवाहित हो ? उसने कहा, ''हां'' या रसूलुल्लाह (सल्ल०)! इस पर आप (सल्ल०) ने लोगों को आदेश दिया, ''इसे ले जाओ और संगसार कर दो ।''

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि०) ने जिरह के दौरान कुछ और सवाल व जवाब भी रिवायत किये हैं–''आप (सल्ल०) ने उससे पूछा, ''शायद तुमने केवल उसका बोसा लिया था या उसे छूआ था या उसकी तरफ़ देखा था ?'' उसने कहा ''नहीं'' या रसूलुल्लाह (सल्ल०)। आप (सल्ल०) ने नतीजा निकाला ''कोई संदेह छोड़े बिना तुमने उसे लैंगिक कर्म के लिए लिटा लिया था ।'' इस पर आप (सल्ल०) ने उसे संगसार करने का फ़ैसला सुना दिया था ।

यहां अपराधी का इक़बाले जुर्म इतना असंदिग्ध था कि उसके लिए जुर्म साबित करने को किसी साक्ष्य या गवाह की ज़रूरत न थी, इसलिए अदालत ने उसे सज़ा देने का फ़ैसला सुना दिया । इक़बाले जुर्म के लिए मर्द और औरत

में कोई भेदभाव नहीं किया गया । औरतों का इक़बाले जुर्म भी अपराध करने के लिए काफ़ी सबूत माना गया है और इनके आधार पर बिना साक्ष्य या गवाही, फ़ैसले सुनाए गये थे ।

जुहैना (मदीना के आसपास का एक शहर) की रहने वाली एक औरत ने रसूलुल्लाह हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के सामने अपने व्यभिचार के अपराध को स्वीकार किया । उसने इस बात को भी उजागर किया कि वह गर्भवती हो गयी है । आप (सल्ल॰) ने उसके संरक्षक को बुलाया और निर्देश दिया कि "इसको अच्छी तरह रखो, जब बच्चा पैदा हो जाए, तो मुझे इसकी सूचना दो ।" उसने ऐसा ही किया । आप (सल्ल॰) ने उसको संगसार करने का आदेश दिया ।

चोरी के मुक़दमे में भी इक़बाले जुर्म को काफ़ी सबूत माना गया । इब्ने माजा ने चोरी का एक मुक़दमा दर्ज किया है, जो अबू उमैया (रज़ि॰) ने रिवायत किया है–"अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के समक्ष एक चोर लाया गया । चोरी का माल उसके पास से बरामद नहीं हुआ था । फिर भी उसने अपराध को स्वीकार किया और मुख्य न्यायाधीश के समक्ष उसने दो बार अपने अपराध को स्वीकार किया । इस पर आप (सल्ल॰) ने उसका हाथ काट देने का आदेश पारित किया और उसका हाथ काट दिया गया ।"

आप (सल्ल॰) के पास ऐसे मुक़दमे भी पेश हुए, जिसमें सबूत और दलीलों का वज़न दोनों तरफ़ बराबर था । ऐसा ही एक मुक़दमा हज़रत जाबिर (रज़ि॰) ने रिवायत किया है–"दो आदमी एक ऊंटनी से संबंधित विवाद रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के पास लाए । उनमें से हर एक ने बयान किया, 'यह ऊंटनी उसकी थी और सबूत पेश की ।' इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उस व्यक्ति के हक़ में फ़ैसला सुनाया, जिसके क़ब्ज़े में वास्तव में वह थी ।

ऐसे मुक़दमो में जहां कोई गवाही किसी तरफ़ से भी पेश नहीं की गयी थी, अदालत ने दोनों पक्षों को राज़ी कर लिया और उनके बीच सुलह कर दी । हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि॰) ने निम्नलिखित मुक़दमा रिवायत किया है–दो व्यक्तियों ने रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के पास दावा पेश किया । उनके बीच एक जानवर पर झगड़ा था । दोनों में से किसी के पास भी सबूत न था । आप (सल्ल॰) ने फ़ैसला किया कि दोनों के बीच जानवर बराबर-बराबर बांट दिया जाए । संभवत: जानवर की क़ीमत के आधे हिस्से के दोनों भागी ठहराए गये होंगे ।

दो व्यक्ति मिलकर एक कुएं की खुदाई कर रहे थे । उनमें से एक ने अपनी कुदाल उठायी और उससे अपने साथी के सिर पर चोट पहुंचायी और उसे मार डाला । मक़तूल (मृतक) के भाई ने रसूलुल्लाह (सल्ल॰) की अदालत में दावा पेश किया । वादी के बयान और पेश की गयी गवाही से आप (सल्ल॰) इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि यह एक ग़ैर-इरादतन क़त्ल था । इसलिए आप (सल्ल॰) ने वादी को प्रेरणा दी कि समझौता कर ले । इस पर उसने अपराधी को माफ़ कर दिया और आप (सल्ल॰) ने समझौते की बिना पर मुक़दमे का फ़ैसला कर दिया ।

न्याय-प्रणाली से ही संबंधित एक मुक़दमे के बारे में हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने रिवायत किया है–"क़ुरैश के लोग क़बीला मख़ज़ूम की एक प्रभावशाली औरत के संबंध में बहुत चिंतित थे, जिसने चोरी की थी । उन्होंने आपस में मशविरा किया कि इसके संबंध में अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) से कौन बात करेगा । उन्होंने कहा, "कौन हिम्मत कर सकता है, सिवाय उसामा बिन ज़ैद (रज़ि॰) के जो रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के सबसे ज़्यादा प्रिय हैं ।"

हज़रत उसामा (रज़ि॰) ने इस संबंध में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से बात की । आप (सल्ल॰) ने चेतावनी भरे शब्दों में फ़रमाया, "क्या तुम अल्लाह की निर्धारित की गयी सज़ा में हस्तक्षेप करते हो ?" फिर अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) खड़े हो गये और फ़रमाया, "ऐ लोगो ! तुमसे पहली क़ौमें तबाह कर दी गयीं, क्योंकि जब उनमें से कोई समाज का प्रभावशाली व्यक्ति चोरी करता, तो वे उसे छोड़ देते और जब उनमें से ही कोई कमज़ोर व्यक्ति चोरी करता, तो वे उसे सज़ा देते । ख़ुदा की क़सम ! अगर मेरी बेटी फ़ातिमा (रज़ि॰) भी चोरी करती, तो मैं उसका हाथ काट देता ।"

प्रकाश स्तंभ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

■ विद्या प्रकाश

यूं तो संसार के विभिन्न देशों में समय-समय पर ऐसे अनेकानेक सामाजिक पथ-प्रदर्शकों, समाज सुधारकों तथा धर्म प्रवर्तकों का जन्म हुआ जिन्होंने दिग्भ्रमित मानव समुदाय का मार्गदर्शन किया और मनुष्यों को असत्य से सत्य, अंधकार से प्रकाश तथा कुमार्ग से सन्मार्ग की दिशा में ले जाने में महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन किया मगर इन महापुरुषों तथा मानवता के अग्रदूतों में पैग़म्बरे इस्लाम मोहसिन इन्सानियत तथा सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का विशिष्ट स्थान है।

मानवता के उद्धारक हज़रत मुहम्मद साहब का जन्म उत्तरी अरब के शहर मक्का में 571 ईसवी में क़ुरैश क़बीले के सबसे कुलीन वेश बनू हाशिम में हुआ था। उस समय मक्का न केवल प्रमुख व्यापारिक केन्द्र था, बल्कि प्राचीन पवित्र स्थान क़स्बा के भी यहीं स्थित होने के कारण यह अति महत्वपूर्ण माना जाता था। इस कारण आसपास के सभी देशों के व्यापारी व्यवसाय तथा ज़ायरीन ज़ियारत के सिलसिले में यहां बराबर आया-जाया करते थे।

मुहम्मद साहब के पिता अब्दुल्लाह का देहावसान उनके जन्म से पहले हो गंया था और मां आमिना का निधन उस वक़्त हो गया था जब उनकी उम्र मात्र 6 वर्ष की थी। उनके चाचा अबू तालिब ने उनकी परवरिश की ज़िम्मेदारी निभायी। वे प्रारंभ से ही प्रत्येक कार्य को ज़िम्मेदारी और निष्ठा के साथ करते थे जिसकी वजह से मक्का निवासियों ने उनको 'अल अमीन' की उपाधि दी थी, जिसका शाब्दिक अर्थ है भरोसेमंद इन्सान। लगभग 25 वर्ष की अवस्था में आपका विवाह ख़दीजा से हो गया जो उनके कार्यों से बेहद प्रभावित थीं। दुनियादारी के झमेले से दूर रहने वाले मुहम्मद साहब अपना अधिकतर समय शहर से थोड़ी दूर स्थित हिरा नामक एक गुफ़ा में बिताते थे और वहीं आध्यात्मिक चिंतन करते थे।

610 ई० में आप पर सर्वप्रथम ईश्वरीय प्रकाशना अवतरित हुई। आपकी पत्नी हज़रत ख़दीजा ने सर्वप्रथम उन्हें पैग़म्बर के रूप में पहचाना। वे अपनी ज़िन्दगी में अंतिम समय तक मुहम्मद साहब के मिशन का प्रमुख स्तंभ बनी रहीं।

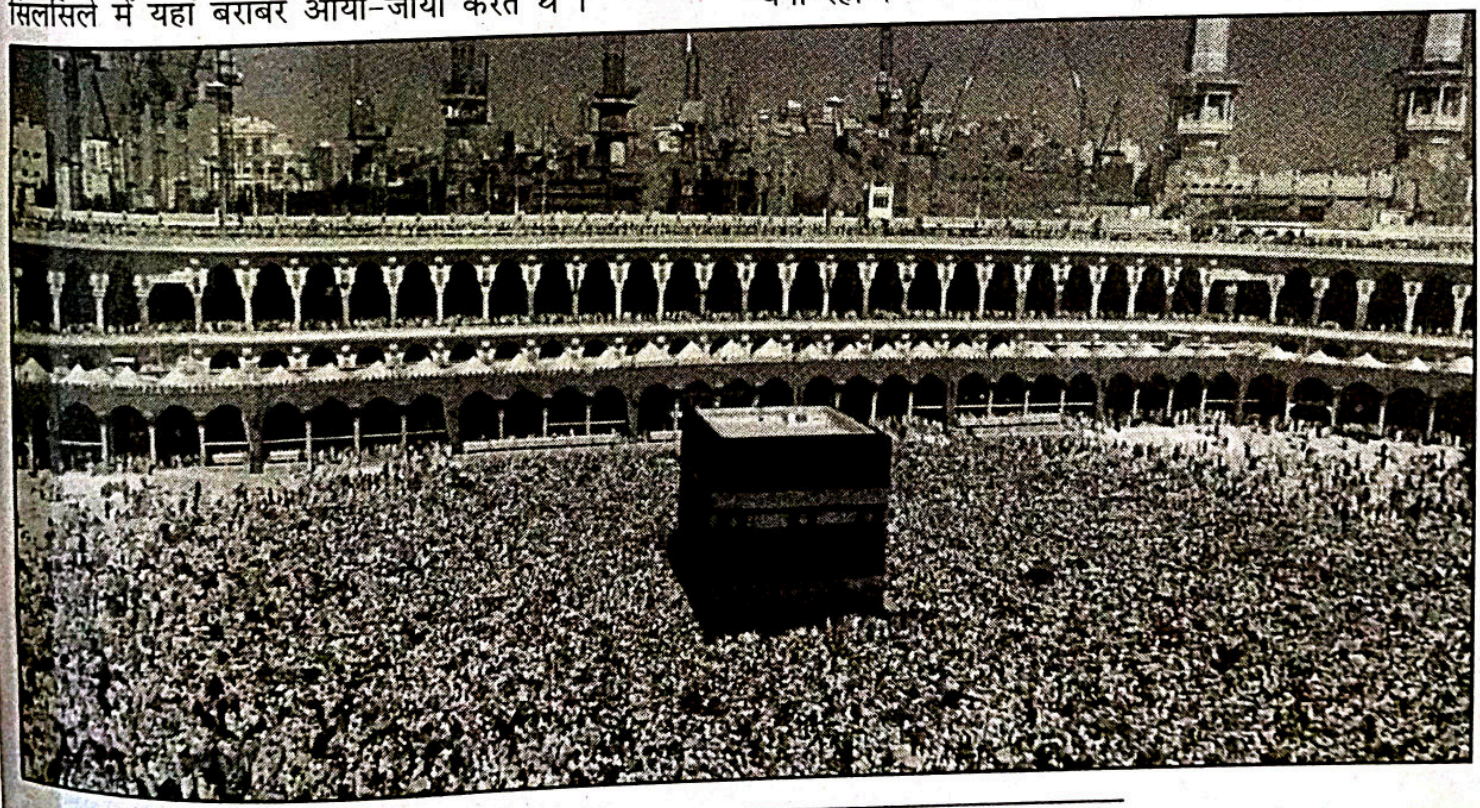

मुहम्मद साहब अपने जीवन की इस अनोखी तथा महान शुरुआत के बाद आजीवन शांतिपूर्वक अपने मानव हितकारी संदेश का प्रचार-प्रसार करते रहे । आपको इस दौरान अनेक कठिनाइयों तथा विषम प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करना पड़ा, मगर आप अपने उद्देश्य से न कभी विचलित हुए । महानता तथा सदाशयता उनके व्यक्तित्व में इतनी कूट-कूटकर भरी थी कि आपने कभी अपने विपक्षियों तथा प्रबल विरोधियों तक का बुरा तक नहीं सोचा । अपने घोर विरोधियों को भी क्षमा कर देने के उनके दृष्टिकोण ने अपार सफलता प्रदान की । सुप्रसिद्ध अमेरिकी लेखक माइकल हार्ट ने अपनी पुस्तक 'द 100' में आपको विश्व के 100 अत्यंत कामयाब लोगों की सूची में प्रथम स्थान पर रखा है ।

जब मक्कावासियों ने मुहम्मद साहब तथा आपके साथियों का जीवन दूभर कर दिया, तब आपने मक्का से 280 मील दूरस्थ मदीना जाने का निर्णय किया । उन दिनों रेगिस्तान में 280 मील का सफ़र आजकल की तरह इतना आसान तथा सुविधाजनक न था । मुश्किलों के बाद जब आप मदीना पहुंचे तो लोगों ने भव्य स्वागत किया । आपने मदीनावासियों को, एकेश्वरवाद, अमन तथा भाईचारे का पैग़ाम दिया । मुहम्मद साहब के एक साथी हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी (रज़ि॰) के मुताबिक़, आपने किसी पर कभी अपमानजनक टिप्पणी न क़रने की नसीहत की थी ।

मुहम्मद साहब नमाज़ पढ़ने से पहले अपने हाथ पानी से धो लेते यानी वुज़ू करते, तो उनके साथी उस पानी की एक बूंद भी धरती पर नहीं गिरने देते थे । लोगों की इतनी श्रद्धा तथा समर्पण किसी भी व्यक्ति को घमंडी बना सकती है । मगर मुहम्मद साहब पर इन सब बातों का ज़रा भी असर न था । आप स्वयं को सिर्फ़ ईश्वर का पैग़म्बर और सेवक मानते थे । आपके जीवन में ऐसे अनेकानेक उदाहरण एवं उद्धरण मिलते हैं जब आपने प्रत्येक व्यक्ति को अपनाया और गले लगाया ।

आपने एक कर्तव्य केन्द्रित समाज के निर्माण की दिशा में सफल प्रयास किया, न कि अधिकार केन्द्रित । एक महामानव का व्यक्तित्व तथा कार्य कैसा होना चाहिए, इसको आपने अपने जीवन में शत-प्रतिशत प्रस्तुत कर दिखाया ।

आज आप हमारे बीच सशरीर विद्यमान नहीं हैं, मगर आपके आदर्श, सिद्धांत तथा उपदेश वर्तमान समय में भी प्रासंगिक, अनुकरणीय, उपयोगी तथा सार्थक हैं जो हमारा पग-पग पर पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं । आपके संदेश पर चलकर ही हम मानव समाज को खुशहाल बना सकने में सफल हो सकते हैं । आप समाज के ऐसे प्रकाश स्तंभ हैं जिसकी रोशनी शताब्दियों तक दिग्भ्रमित मानवता की राह आलोकित करती रहेगी ।

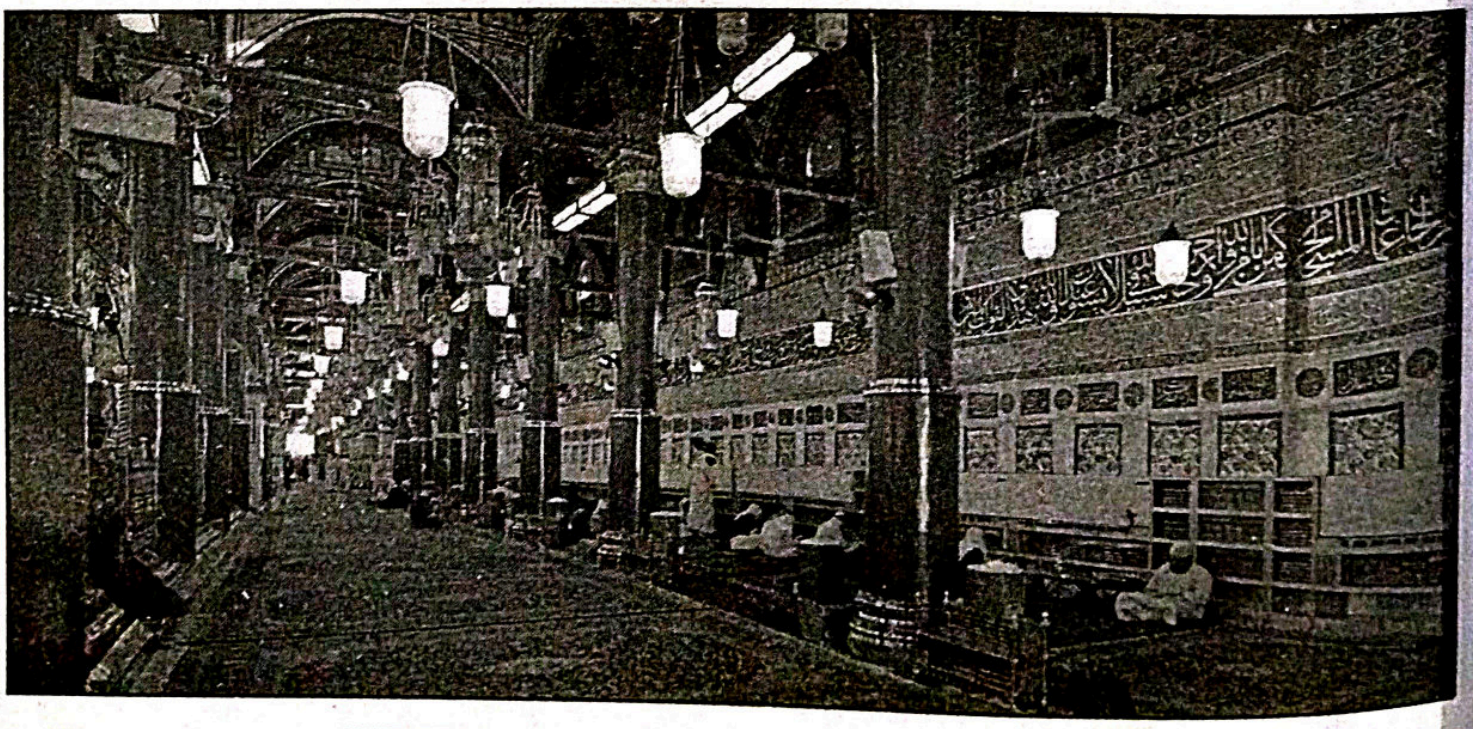

अंतिम निर्णय

■ राजेन्द्र परदेसी
(लखनऊ, उ०प्र०)

मैथानी साहब जब तक सेवा में रहे सब ठीक ही चल रहा था । यह भी कह सकते हैं कि घर-गृहस्थी की गाड़ी उनके अनुकूल सुचारू रूप से चल रही थी, लेकिन सेवानिवृत्त होते ही कुर्सी तो गयी ही उनके अपने भी दूर होने लगे । सबसे पहले उनकी जीवन संगिनी ने ही ज़िन्दगी की गाड़ी अकेले खींचने के लिए उन्हें छोड़कर चली गयी ।

पत्नी के जाते ही मैथानी साहब के बेटों ने रंग दिखाना शुरू कर दिया । मां थी तो टोका-टाकी भी करती थी, पर मैथानी साहब देखकर भी अनदेखा कर देते । शायद यह उनकी विवशता भी थी ।

तभी तो सबसे पहले उनके दो बड़े बेटों ने सोचा कि पिता से अब कोई आर्थिक सहयोग तो मिलेगी नहीं, ऊपर से उनकी स्वतंत्रता में भी खलल पड़ेगा । इससे तो अच्छा है उनसे किनारा ही कर लिया जाए । दोनों ने अलग किराये के मकान में जाकर गृहस्थी बसा ली ।

छोटा बेटा अखिलेश अभी भी उनके साथ था । उसकी पत्नी भी उसके साथ नौकरी करती थी । उनके दो बेटे थे जो अभी पढ़ रहे थे । इसीलिए उनकी मजबूरी थी । अभी तो वे लोग ऑफ़िस जाते हैं और देर रात घर लौटते हैं । ऐसे में मैथानी साहब घर पर ही रहते हैं । बच्चों को कोई कष्ट नहीं होता । अगर वह लोग भी अलग रहने की व्यवस्था करेंगे तो थोड़ी स्वतंत्रता तो अवश्य मिल जाएगी पर उससे अधिक परेशानी भी बढ़ जाएगी, दूसरी बात यह भी है कि पिता के साथ रहने से किराये का भी कोई चक्कर नहीं पिता का मकान है ही । न पानी का, न बिजली का बिल देने की चिंता । बच्चों की भी छोटी-मोटी आवश्यकताएं यथावत दादा जी से पूरी हो जाती रहेगी । बच्चों की देखभाल भी करते ही रहेंगे । फिर भी वह पिता से अलग रहने का मन बनाने लगा ।

चिड़िया का बच्चा भी तभी तक मां-बाप के घोंसले में रहना पसन्द करता है, जब तक उसके पंख नहीं निकलते । लेकिन जैसे ही पंख निकल आते हैं वह आकाश में उड़ने लगता है । इसीलिए समय के साथ जैसे ही मैथानी साहब के छोटे बेटे अखिलेश के अनुकूल परिस्थिति होने लगी । उसकी इच्छाएं भी बलवती होने लगीं । उसे भी अपने बड़े भाइयों की तरह पिता का अधीनस्थ होना खलने लगा । एक दिन पिता के सम्मुख प्रस्ताव रखा–पापा ! बच्चे अब बड़े हो गये हैं ।

वह दिन भर छुट्टी के दिन बेकार में इधर-उधर भागदौड़ करते रहते हैं । आपको ठीक से आराम भी नहीं करने देते...अगर आप कहें तो हम लोग ऊपर शिफ़्ट कर लें और आप नीचे आराम से रहें ।

मैथानी साहब ने सोचा बेटा ठीक ही तो कह रहा है । ऊपर का हिस्सा ख़ाली ही तो पड़ा है । जब यह लोग रहेंगे तो उस हिस्से की भी साफ़-सफ़ाई होती रहेगी । बच्चे भी बड़े हो रहे हैं उनके यार दोस्त तो आएंगे ही । इन्हीं सब पर विस्तार से मनन करने के बाद अपनी स्वीकृति दे दी–'ठीक ही तो...।'

उधर मैथानी साहब के बड़े बेटों को छोटे भाई की योजना का पता चला तो वह पिता के पास आकर प्रतिरोध के स्वर में बोले–'अखिलेश, अपने परिवार के साथ नीचे रह ही रहा था तो फिर आपने उसे ऊपर रहने की स्वीकृति क्यों दी ।' सहानुभूति भी दर्शाया–अगर, ऊपर वाले हिस्से को आप किसी को किराये पर दे देते तो कुछ पैसे ही आपके हाथ आ जाते । अखिलेश से तो आप किराया लेंगे नहीं ।'

'तुम लोगों से तो लेना न था, अखिलेश से क्यों लूंगा' मैथानी साहब ने भी उनके अलग होने की पीड़ा को कम करते हुए उत्तर दिया ।

'तब बात दूसरी थी'

'अब क्या हो गया' मैथानी साहब ने अपने दिल की बात को भी कह दिया–हमने तुम लोगों को अलग जाकर रहने को तो नहीं कहा था । तुम लोग अपने मन से जाकर

किराये के मकान में रह रहे हो ।'

'यहां परेशानी हो रही थी ।'

'तो तुम्हीं लोग ऊपर जाकर रहते, किसी ने रोका तो नहीं था ।'

बड़े बेटों के पास पिता की बात का कोई उत्तर नहीं था । केवल कुंठा रह गयी थी । इसीलिए खीझ में बोले-ठीक है, आपका मकान है, आप जो चाहे सो करें ।' चेतावनी भी दी-लेकिन बाद में हम लोगों से मत कहिएगा कि अखिलेश यह कर रहा, वह कर रहा है ।

'ठीक है, कहने कुछ नहीं आऊंगा' कहकर मैथानी साहब ने बात को समाप्त कर दिया ।

धीरे-धीरे सब कुछ सामान्य हो गया तो, अखिलेश और उसकी पत्नी ने भी ऊपर के हिस्से में ही अपनी अलग गृहस्थी बसाने की प्रक्रिया शुरू कर दी । मैथानी साहब बहू-बेटे को रसोई का नया सामान लाते देख कहते भी कि तुम्हारी मां की रसोई में तो यह था ही फिर बेकार नया क्यों ख़रीदकर लाये । बहू-बेटा ऐसे अवसर पर मौन साध लेते । बिना कुछ उत्तर दिये ऊपर चले जाते । उनके मन में भविष्य की क्या योजना बन रही है । मैथानी साहब इसका अनुमान नहीं लगा पा रहे थे ।

ऊपर शिफ़्ट करने के कुछ माह बाद भी छोटी बहू उसी रसोईघर में खाना पकाती रही जहां उसकी सास पकाया करती थी । परन्तु जब उसने अपने सपनों का किचन सजा लिया तो मैथानी साहब के सम्मुख एक दिन प्रस्ताव रखा-पापा ! ऊपर नीचे चढ़ने उतरने में पैर में दर्द हो रहा है ।

इसीलिए अगर आप कहें तो सभी का खाना ऊपर ही बना लिया करें और आपका खाना नीचे लाकर लगा दिया करेंगे । इस तरह बार-बार उतरना-चढ़ना नहीं पड़ेगा...वैसे आप जैसा कहें ?'

'ठीक ही तो है...उसमें मुझे क्या कहना है ? बहू के कष्ट को समझते हुए मैथानी साहब ने अपनी सहमति जताई ।

ससुर की स्वीकृति से बहू को अपना सपना साकार करने का अवसर मिल गया । अब नीचे की जगह ऊपर के रसोईघर में नया चूल्हा जलने लगा । छोटी बहू अपने पति और बच्चों का खाना ऊपर ही लगाती । मैथानी साहब का थाली नीचे आकर दे जाती । मैथानी साहब जहां पहले परिवार के अन्य लोगों के साथ ही बैठकर भोजन करते । लेकिन नयी व्यवस्था की तरह अकेले खाने को मजबूर हो गये । प्रारंभ में यह उन्हें अच्छा न लगता लेकिन जीने के लिए भोजन करना आवश्यक था । नियति मानकर स्वीकार करना पड़ा । बेटे-बहू के प्रस्तावों के साथ धीरे-धीरे समझौता करने के आदी हो गये ।

अचानक एक दिन छोटी बहू ने उनके सम्मुख नया प्रस्ताव रखा-पापा ! मैं देख रही हूं । आपको अकेले खाना अच्छा नहीं लग रहा । आप भी खाने के समय ऊपर आ जाया करें । हम लोगों को आपके साथ भोजन करने में खुशी होगी ।

इधर मैथानी साहब घुटने के दर्द को लेकर कुछ परेशान थे । अखिलेश से कई बार कह भी चुके थे कि चलकर किसी डॉक्टर से दिखा दो । आजकल में महीनों बीत गये, पर बेटे अखिलेश को छुट्टी ही नहीं मिली । उन्हें ऊपर सीढ़ियां चढ़कर जाना कष्टप्रद था । परन्तु बेटे-पोतों का मोह उन्हें स्वीकृति देने के लिए मजबूर कर दिया-ठीक है बहू, तुम्हारी ही बात सही...मैं ही ऊपर आ जाया करूंगा ।'

समय के साथ हवा का रुख़ बदलने लगा था । छोटे-बेटे और बहू की नज़र में भी मैथानी साहब की उपयोगिता अप्रासंगिक होने लगी थी । वह उनके लिए उपयोगी नहीं, बल्कि बोझ लगने लगे थे ।

परंतु सामाजिकता के भय से वह उनके साथ प्रत्यक्ष ऐसा कोई व्यवहार नहीं करते जिससे पिता की नज़रों में बुरे बने । पर अप्रत्यक्ष रूप से उनका व्यवहा मैथानी साहब के प्रति उपेक्षा का ही था । मैथानी साहब ने भी हवा को देखा था । उन्हें यह तो आभास होने लगा था कि अखिलेश और उसकी पत्नी के व्यवहार में वह अपनापन नहीं है जो अब तक था । फिर भी वह बेटे-बहू को अपने दर्द का आभास होने देना नहीं चाहते थे ।

छोटी बहू के हर कार्य में उसके प्रति अखिलेश की स्वीकृति रहती थी । फिर भी वह पिता के सम्मुख सीधे न आकर अपनी पत्नी के माध्यम से अपनी योजनाओं को मूर्तरूप दे रहा था । तभी तो एक दिन छोटी बहू मैथानी साहब के सम्मुख उपस्थित होकर बोली-'पापा ! मैं देख रही हूं कि आपको ऊपर चढ़ने में कष्ट होता है ।' जैसे वह जानती ही न हो, 'क्या बात है ?'

'बेटी, घुटने में दर्द रहता है ।'

'तो डॉक्टर को दिखाते क्यों नहीं ।'

'अखिलेश से कई बार कह चुका हूं, उसे छुट्टी ही नहीं मिलता ।'

मैं आज ही शाम को कहती हूं । पहले जाकर आपको किसी अच्छे डॉक्टर को दिखा लाये ।'

'ठीक है...लेकिन बहू तुम कुछ कहने आयी थी ।'

'मैं कह रही थी कि आपके घुटने में दर्द रहता है तो आप सीढ़ियां न चढ़े । मैं ही आपको थाली नीचे लगा दिया करूंगी ।' घड़ियाली आंसू भी बहाया । 'आपके बिना खाने का टेबुल सुना तो लगेगा...पर आपका कष्ट भी तो देखा नहीं जाएगा ।'

बेटे-बहू के मन में क्या पक रहा है । मैथानी साहब समझ नहीं सकते थे । नया प्रस्ताव आया तो अपने घुटने के दर्द को महसूस कर बुझे मन से स्वीकृति दे दी । सोचा आदमी को सभी कुछ एक साथ तो मिल नहीं सकता । उसे तो अपनी प्राथमिकता तय करना ही पड़ता है ।

नये प्रस्ताव के अनुरूप मैथानी साहब के लिए भोजन की थाली नीचे आने लगी । परंतु उसमें सभी व्यंजन नहीं रहते थे, जो ऊपर की रसोई में पकते । धीरे-धीरे थाली का समय भी अनियंत्रित होने लगा ।

बहू अपने पति-बेटे को भोजन करा लेती । तब ख़ाली होने पर ससुर के लिए थाली लाकर दे जाती । थाली में रखी सामग्री तब तक ठंडी हो जाती थी । कभी-कभी वह बेटों के हाथ ही थाली भेजवा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ बैठती थी ।

मैथानी साहब परिवार के अपनों का व्यवहार देखकर धीरे-धीरे टूटने लगे थे । उनके अन्दर प्रतिरोध करने की क्षमता भी क्षीण हो गयी थी । परिणाम यह हुआ कि छोटी बहू कभी-कभार भोजन की थाली बिना नीचे रखे ही अपने आफ़िस चली जाती । कार्यालय से वापस आने पर बहू को मैथानी साहब बताते तो वह ढोंगी का रूप धारण कर रुआंसी आवाज़ में सफ़ाई देती–

'पापा मुझसे ग़लती हो गयी, आफ़िस जाने की देर हो रही थी । इस कारण यह भूल हो गयी' सहानुभूति बटोरने के लहजे में पूछती-आपने तो आज अभी तक कुछ नहीं खाया...मैं अभी बनाकर लाती हूं ।'

'रहने दो, मैंने ओंकार से पूड़ी मंगवाकर खा लिया है ।'

'आज मुझसे बहुत बड़ी ग़लती हो गयी । भविष्य में ध्यान रखूंगी ।' सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते छोटी बहू बोली ।

कुछ दिनों तक व्यवस्था ठीक-ठीक पुनः चलने लगती, पर अधिक समय तक नहीं, मैथानी साहब शुरू में यही समझते थे कि बहू काम की व्यवस्था के कारण यह भूल कर देती है ।

पर जब भूल के कारण क्रम बढ़ने लगा तो उन्होंने बहू से शिकायत करने की अपेक्षा अपनी स्वयं की व्यवस्था करने का निर्णय कर लिया । स्थानीय टिफ़िन वाले से अपने लिए दोनों समय खाना मंगाने लगे ।

प्रारंभ में बेटे-बहू व्यवस्था की जानकारी होने के बाद भी अंजान बने रहे । ऊपर से नीचे थाली रखना भी छोड़ दिया । दुनिया की यह रीति है कि वह अपने घर में नहीं देखता ।

परंतु दूसरे के घर में ताक-झांक कर कमियां निकालने के लिए चिंतित रहता है । ऐसे में मैथानी साहब के घर की बात बाहर कैसे न आती । मैथानी साहब अपने लिए टिफ़िन मंगाते हैं । मुहल्ले के घरों में चर्चा का विषय बन गया था । सभी उनके बहू-बेटे को घूरती नज़र से देखने लगे । आरंभ में उन लोगों ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया, परंतु जब मुहल्ले के ही अग्रवाल साहब ने एक दिन उनके बेटे से पूछा-'क्या बात है ?' आपके पापा खाना टिफिन वाले से मंगाते हैं ?'

'पापा, टिफ़िन वाले से खाना मंगाते हैं, मुझे तो मालूम नहीं ।' इतना बोलकर वह अग्रवाल साहब से पीछा छुड़ाकर पिता के पास आया और अपना गुस्सा प्रकट किया-'पापा ! क्या बात है ? आप घर की जगह बाहर से खाना मंगाते हैं ?'

बेटे की बातों को सुनकर मैथानी साहब मौन होकर सोचने लगे-यह कैसे मान ले कि घर में पत्नी क्या कर रही है, उसके पति को न मालूम हो वह भी उसके पिता के साथ । अगर मान भी लिया जाए कि बेटे को नहीं मालूम कि उसकी पत्नी उनके साथ कैसा व्यवहार कर रही है तो भी जब उसे मालूम हुआ । तो पहले उसे अपनी पत्नी से कारण जानना चाहिए था-फिर मुझसे पूछता । यही सोचकर वह मौन ही रहे । पिता का न बोलना बेटे को अच्छा न लगा । उसने खीझकर ऊंची आवाज़ में कहा-'पापा ! मैंने आपसे कुछ पूछा, पर आपने बताया नहीं...।'

'क्या बताऊं ?'

'टिफ़िन वाले से खाना क्यों मंगाते हैं ?'

'क्यों मंगाता हूं...जाकर अपनी पत्नी से पूछो ।'

अखिलेश अपनी पत्नी के ऊपर लगे आक्षेप पर पिता को उसकी ओर से कोई सफ़ाई देने की स्थिति में स्वयं को नहीं पा रहा था । इसलिए यह कहते हुए कि आप लोगों के मन में क्या चल रहा है । मेरी समझ में नहीं आता ।' वह ऊपर चला गया ।

अखिलेश, टिफ़िन की बात जानकर भी अनजान रहा और पिता के खाने की व्यवस्था में परिवर्तन नहीं आया । तो मैथानी साहब ने भी समय के साथ समझौता स्वयं ही कर लिया । टिफ़िन नियमित आने लगा । पर अपने से अधिक दूसरों को घाव देने में लोगों को सुख जो मिलता है । तभी तो अखिलेश से मुहल्ले के एक अन्य सज्जन कटियार साहब ने फिर सवाल किया कि 'मैथानी साहब टिफ़िन वाले के यहां से खाना क्यों मंगाते हैं ?' उनका सवाल सुनकर अखिलेश असहज हो गया । आधे रास्ते से घर लौट आया और पिता के पास जाकर बोला–'आप अपने लिए जो टिफ़िन मंगाते हैं...जानते हैं, मुहल्ले के लोग क्या कहते हैं ?'

'हमें क्या मालूम लोग क्या कहते हैं ?' अपना गुस्सा भी प्रकट किया–'मैं तो किसी के पास मुहल्ले में जाता भी नहीं हूं ।'

'आपको मालूम नहीं है तो जानने की कोशिश करनी चाहिए ।' 'क्या जानने की कोशिश करना चाहिए ?'

'मुहल्ले के लोग आपके परिवार के बारे में क्या सोचते हैं ?'

'सोचने का सारा काम क्या मेरा ही है–तुम लोगों का भी नहीं है ?'

'तो ठीक है...कल से टिफ़िन वाले को मना कर दें कि अब खाना न पहुंचाएं ।'

'तो क्या भूखा रहूं ?'

'भूखे क्यों रहेंगे, जैसे ऊपर से थाली आती थी, वैसे ही आया करेगी ।'

'अगर ऐसा होता ही तो टिफिन क्यों मंगाता' साथी ही मैथानी साहब ने अपना अंतिम निर्णय भी सुनाया । 'अगर तुम्हें मुहल्ले वालों की इतनी ही चिंता है तो अपने बड़े भाइयों की तरह तुम भी कहीं किराये के मकान में चले जाओ । मैं अब से वही करूंगा तो मुझे सही लगेगा ।'

कहानी

रिक्शा वाला

■ मुहम्मद शमशाद

वह रिक्शा चालक था । लोग उसे रिक्शा वाला के नाम से पुकारते थे । वह वृद्ध था लेकिन उसका शरीर चुस्त और गठीला था। उसके बाल कुछ काले थे कुछ सफ़ेद हो गये थे । वह एक फटी पुरानी धोती लपेटे, सर में अंगोछा बांध और प्लास्टिक का जूता पहने जमशेदपुर की ऊंची-नीची सड़कों पर इस तरह रिक्शा चला रहा था जैसे सूर्य पूर्व से पश्चिम की ओर चढ़ता और उतरता है ।

जैसे-जैसे कालेज में छुट्टी का समय निकट आता रिक्शा की गति तेज़ होती जाती । गति तेज़ होने से उसके चेहरे पर कुछ भाव उभरते । धंसी-धंसी आंखें में एक दुनिया दिखाई देती, माथे पर बल पड़ते और कुर्ता पसीने से भीग जाता, लेकिन वह अपने काम में मग्न और अपनी दुनिया में खुश रहता ।

जमशेदपुर की सड़कें स्वच्छ और बल खाती दिखाई पड़तीं । वहां सब लोग उस रिक्शे वाले की तरह अपने काम में व्यस्त होते । आज भी वह अपना ख़ाली रिक्शा लिए कालेज की ओर जा रहा था, ताकि सीता को कॉलेज से वापस ले आए । उसे बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी सौंपी गयी थी, जिसे वह बड़ी सुन्दरता से निभा रहा था ।

रिक्शा वाले ने अपने जीवन के 40 वर्ष जमशेदपुर में ही बिताये थे, यह उसकी जन्म भूमि थी । उसने अपनी इच्छाओं को इसी नगर में दफ़्न किया था और अपनी जवानी को यहीं की सड़कों पर गंवाया था ।

आज सुबह सीता की मां ने देर से आने पर उसे बहुत जली-कटी सुनायी थी और यह चेतावनी भी दी थी कि अगर कल उसने देर की तो सीता के लिए दूसरा रिक्शा तय कर लिया जाएगा । रिक्शा वाले ने सीता की मां की बातों का बुरा नहीं माना । सीता की मां अच्छी महिला थी, कभी-कभी उसे चाय के पैसे भी दे दिया करती थी ।

कॉलेज सामने दिखायी पड़ने लगा । सड़क के उतार-चढ़ाव ने रिक्शा वाले का दम फुला दिया और वह हांपते-हांपते खांसने लगा । अभी वह कॉलेज के गेट पर रिक्शा लगाकर खड़ा ही हुआ था कि सामने से शंभू आता

दिखाई किया । शंभू सीता के भाई केदार का बचपन का साथी था और अक्सर उसके घर आता रहता था । दोनों अक्सर साथ ही दिखाई पड़ते, लेकिन आज शंभू अकेला ही था ।

आदाब शंभू जी आज आप इधर और वह भी अकेले ?

शंभू उसे साथ वाली दुकान में ले गया और मना करने के बावजूद उसे कोल्ड ड्रिंक पिलायी और मिठाइयां खियीं । शंभू ने उसे सौ रुपये का एक नोट भी दिया । रिक्शा वाला रधुवीर शंभू के बर्ताव से चकित था, क्योंकि वह उसे को कोई भला आदमी नहीं समझता था । इस समय भी शंभू के मुंह से शराब की दुर्गंध आ रही थी । रघुवीर कोल्ड ड्रिंक ख़त्म करके जल्दी जल्दी बाहर आ गया, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि सीता को कॉलेज के फाटक पर प्रतीक्षा करनी पड़े। शंभू भी उसके साथ ही बाहर आ गया । वह उसके कान में कह रहा था कि आज तुम सीता को उसके घर ले जाने के बजाय मेरे होटल पहुंचा दो , मैं तुम्हें मालामाल कर दूंगा ।

अब रघूवीर को सारी बात समझा में आ गयी, उसे शंभू से घृणा होने लगी । उसके मुंह से आती दुर्गंध भी अधिक महसूस हो रही थी, बल्कि उसे शंभू के पूरे अस्तित्व से दुर्गंध आने लगी । रघूवीर का जी चाह रहा था कि वह अपने मुंह में मुर्ग़ी का पंख डाल कर वह सब कुछ बाहर कर दे जो शंभू ने उसे खिलाया था । वह इतना विचलित हो उठा कि शंभू की बातों का उत्तर दिये बिना ही अपने रिक्शे की ओर बढ़ गया ।

रघुवीर को याद आया, उसने कभी उड़ती-उड़ती ख़बर सुनी थी कि एक दिन जब केदार और उसके पिता घर पर नहीं थे, शंभू सीता के कमरे में पहुंच गया था । उसने सीता के साथ ज़बरदस्ती करने की कोशिश की थी, लेकिन ठीक समय पर मां पहुंच गयी ।

रघुवीर के पीछे-पीछे शंभू भी उसे गालियां और ध मकियां देता आ रहा था, मगर रघुवीर ने उसकी कोई परवाह नहीं की । सीता भी कालेज के फाटक से निकल कर रिक्शे की ओर बढ़ रही थी । रघुवीर ने जब शंभू की सारी बातें अनसुनी कर दीं तो उसका क्रोध और बढ़ गया । उसने पीछे से हाथ बढ़ाकर रघवीर की गर्दन पकड़ ली। वह बचाव की मुद्रा में आ गया और स्वयं को छुड़ाने के प्रयास करने लगा । शंभू ने उसपर घूंसों और लातों से प्रहार शुरू कर दिया । वह बार बार यही कह रहा था कि अगर तू सीता को मेरे होटल लेकर नहीं आया तो मैं तुझे जान से मार डालूंगा ।

सीता बहुत पास आ चुकी थी और वह रिक्शा वाले को बचाने के लिए शोर भी मचाने लगी थी । रघुवीर ने जब सीता को इतने पास देखा तो घबरा गया, वह नहीं चाहता था कि शंभू की बातें सीता के कानों में पड़ें । उसने अपने शरीर का पूरा ज़ोर लगाकर स्वयं को उसकी पकड़ से मुक्त कर लिया । शंभू फिर उसपर झपटा, मगर इस बार रघुवीर ने उसे ज़ोर का धक्का दे दिया । वह पीछ की ओर गिर पड़ा, उसके सिर से ख़ून बहने लगा ।

रघुवीर तेज़ी से रिक्शे तक पहुंच गया उसे देख कर सीता भी रिक्शे पर आ बैठी । रिक्शा वाला तेज़-तेज़ पैडल चलाने लगा ।

रास्ते में सीता ने उससे बहुत पूछा कि शंभू से तम्हारा झगड़ा किस बात पर हो रहा था, मगर वह टालता रहा । कुछ नहीं बिटया ! शंभू जी नशे में थे और यों ही आकर मुझसे उलझ गये थे ।

सीता ने सहानुभूति जताते हुए कहा, तुम्हारे कपड़े फट गये हैं, शरीर पर खोंच भी लगी है । कहीं रुक कर आराम कर लो । रघुवीर ने उत्तर दिया, पहले तुम्हें घर पहुंचा दूं फिर आराम करूंगा ।

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में योगदान

■ डॉ॰ मुहम्मद अहमद

इब्न अल-हातिम (965-1039 ई॰) नेत्र चिकित्सा जगत की उभरी हुई शख़्सियत हैं । लैटिन भाषा में इनका नाम Alhazen अथवा Alhacen पाया जाता है । इन्होंने नेत्र-दृष्टि की जो व्याख्या पेश की, वह नेत्र चिकित्सा विज्ञान और लेंस (दर्पण) के इतिहास में अतीव क्रांतिकारी समझा जाता है । यह व्याख्या ऐसी है, जिसने तत्कालीन अवैज्ञानिक उसूलों और सिद्धांतों को उलट दिया । साथ ही नेत्र की संरचना और दशा का नया वैज्ञानिक रूप पेश करके चिकित्सकों को चौंका दिया ।

उल्लेखनीय है कि अरस्तू (384-322 ई॰पू॰) पहले नेत्र दृष्टि के संबंध में पूर्ण और क्रमबद्ध उल्लेख उपलब्ध नहीं था । सुकरात के पूर्व के कुछ दार्शनिकों ने, जिनमें Acragas (मृत्यु 433 ई॰ पूर्व) भी शामिल हैं, नेत्र दृष्टि के संबंध में एक वैकल्पिक सिद्धांत ज़रूर पेश किया । उनके नज़दीक दृष्टि केवल नेत्र की गतिविधि और क्रिया-कलाप ही नहीं है बल्कि नेत्रों से किरणें भी निकलती हैं । अत: समझा गया कि नेत्र प्रकाश की किरणें निकालता है । नेत्र दृष्टि के इस वैकल्पिक सिद्धांत को परलक्ष्य सिद्धांत (Extra mission Theory) का नाम दिया गया । इब्न अल-हातिम के पूर्व तक इस वैकल्पिक सिद्धांत और इसके विरोधी सिद्धांतों में परस्पर विरोधाभास क़ायम रहा । विरोधी सिद्धांत को अग्रलक्ष्य सिद्धांत (Intro mission Theory) कहा गया । इस सिद्धांत को प्रतिपादित करने वालों में अरस्तू के अतिरिक्त Euclid, Stoics, Ptoleny और Galen के नाम प्रमुख रूप से लिए जाते हैं ।

नवीं सदी के आरंभिक काल में मुसलमानों की नेत्र चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में दिलचस्पी बढ़ी । उन्होंने नेत्र दृष्टि और चिकित्सा के उक्त दोनों सिद्धांतों से हटकर नया सिद्धांत बनाया । यद्यपि मुस्लिम दार्शनिक और वैज्ञानिक अल-किन्दी (786-866 ई॰) ने अग्रलक्ष्य सिद्धांत की आलोचना की, लेकिन इन्होंने Euclid और और Galen के सिद्धांतों के प्रति बाद में समझौता करते नज़र आये । अल-किन्दी ने इस संबंध में एक किताब लिखी, जिसका

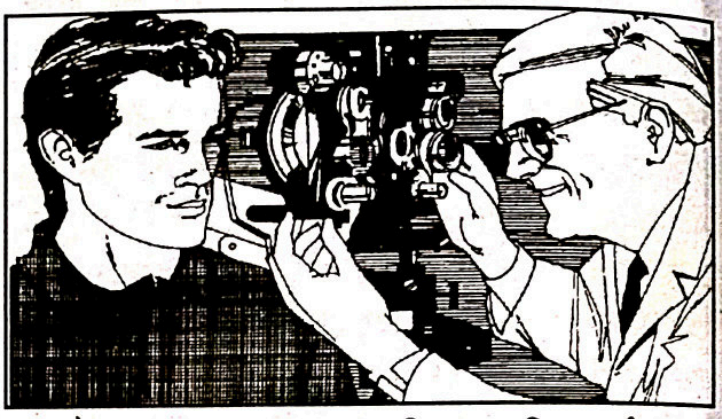

नाम है De Aspectibus । यह किताब प्रसिद्ध हुई । इस प्रकार अल-किन्दी ने अपना सिद्धांत ख़ुद गढ़ा । इनके सिद्धांत को परलक्ष्य सिद्धांत (Extra mission Theory) का आधुनातन रूप माना गया ।

अल-किन्दी के इस सिद्धांत को स्पष्ट रूप से स्वीकार करने वाले में जो प्रमुख विद्वान थे, उनके नाम हैं—अल-फ़राबी (मृत्यु 950 ई॰), उबैदुल्लाह बिन बिजरील बिन बख़्तयाशु (मृत्यु 1058 ई॰), इब्न हज़्म (मृत्यु 1064 ई॰), सलाहुद्दीन बिन युसूफ़ (1296), अहमद इब्न अबी याक़ूब (14वीं सदी), आर॰ ग्रोसटेस्टी (1170-1253), रोजट बेकन (1214-1292), जॉन पेचम और कुछ अन्य लोग ।

दोनों सिद्धांतों के लोग इस बात पर सहमत हैं कि नेत्र से दृश्यमान शक्ति निकलती है, जो दिखायी पड़ने वाली वस्तु पर पड़ती है । इतिहास पर दृष्टिपात करने से यह भी मालूम होता है कि अल-राज़ी (मृत्यु 925 ई॰) ने परलक्ष्य सिद्धांतों का खंडन किया था, लेकिन वह खंडन क्या था, इसकी जानकारी नहीं मिल सकी है, क्योंकि उनका कोई दस्तावेज़ सुरक्षित नहीं रहा ।

नेत्र चिकित्सा और दृष्टि के क्षेत्र में इब्न सीना (980-1037 ई॰) और इब्न रुश्द का भी योगदान रहा है, लेकिन ये नेत्र-दृष्टि के संबंध में किसी संतोषजनक परिणाम तक पहुंचने में असफल रहे । इब्न सीना ने जो कोशिशें कीं, उनकी अहमियत कम नहीं है, लेकिन वे जीवन भर संतोषजनक उपलब्धि की तलाश में रहे । उन्हें यह पता नहीं था कि उनके समकालीन इब्न अल-हातिम में उनकी आकांक्षा की पूर्ति कर दी है ।

मूल्य आधारित राजनीति की आवश्यकता

■ अबू नस्र फ़ारूक़

राजनीति की बातें ज़्यादा होती हैं और इस विषय पर लिखा भी बहुत कुछ गया है, लेकिन राजनीति किस चिड़िया का नाम है इसके संबंध में बहुत कम लोग जानते हैं। सबसे पहले तो यह जानना है कि राजनीति कहते किसे हैं ? राजनीति एक व्यवसाय है, जिसमें कोई इन्सान या कोई पार्टी या तो खुद हुकूमत और सत्ता प्राप्त करने की कोशिश करती है या अपनी पसंद के लोगों को सरकार और सत्ता में लाने का तिकड़म करती है और उनके माध्यम से परदे में बैठकर खुद सरकार चलाती रहती है, या किसी व्यक्ति या पार्टी को सरकार और सत्ता में आने से रोकने की कोशिश करती है । यह व्यापार वास्तव में उन लोगों की दिलचस्पी का सामान है, जो समाज में ऊंची हैसियत रखते हैं, जिनके पास धन-दौलत अधिक है और साथ ही साथ जन-शक्ति की कोई कमी नहीं होती ।

समाज के कमज़ोर वर्गों पर तो ऐसी पार्टियों के ऐसे उपकार होते हैं कि यह कमज़ोर वर्ग जो आमतौर पर अधिक संख्या में होते हैं, उनका समर्थन करते हैं या वे इन वर्गों को लालच देकर या उनके अंदर भय पैदा करके अपने समर्थन पर तैयार करते हैं। इन चीज़ों के बिना राजनीति हो ही नहीं सकती ।

प्राचीनकाल में बादशाह, राजा-महाराजा, धनाढ्य, ज़मींदार और जागीरदार आम लोगों पर हुकूमत किया करते थे। जब दुनिया में तथाकथित लोकतंत्र का दौर आया, तो बज़ाहिर जनता की हुकूमत जनता के द्वारा जनता के हाथों में आयी, लेकिन शुरू से लेकर आज तक यह कटु सच्चाई सामने आयी है कि जनता जब एक बार अपने प्रतिनिधि का चुनाव एक ख़ास मुद्दत के लिए कर लेती है, तो ये प्रतिनिधि कहने के लिए तो जन-प्रतिनिधि होते हैं, लेकिन वास्तव में ये वक़्त के शहंशाह होते हैं। क़ानून भी यही बनाते हैं और क़ानून को लागू भी यही करते हैं ।

क़ानून को लागू करने में ये हमेशा क़ानून से बहुत ऊपर रहते हैं। ये प्रशासन, पुलिस और अन्य विभागों की सहायता से जिसको चाहते हैं अपराधी बना देते हैं और जिसको चाहते हैं विर्दोष ठहरा देते हैं। क़ानून के लंबे हाथ इनको गिरफ़्तार करने में हमेशा छोटे पड़ जाते हैं। इनके ज़ुल्म को जनता सहती रहती है, लेकिन इनके ख़िलाफ़ कुछ करना उसके बस से बाहर होती है। वे अधिक से अधिक यह करते हैं कि आइंदा जब चुनाव होते हैं, तो मौजूदा शासकों को बदलकर दूसरे शासक चुन लेते हैं, लेकिन ये दूसरे लोग भी आकर वही कुछ करते हैं, जो पिछले लोग करते रहे थे । राजा का महल भी वही रहता है और महल की कुर्सियां भी वही रहती हैं और जनता की क़िस्मत भी वही रहती है, केवल राज करने वाले बदलते रहते हैं ।



राजनीति के लिए बुद्धि-विवेक और समझदारी का होना अत्यंत आवश्यक है । समझदारी के बिना राजनीति हो ही नहीं सकती है । जहां तक समझदारी का संबंध है तो इसके भी कई रंग हैं । पहले ज़माने में कहानी की जो किताबें लिखी जाती थीं, उनमें ज्ञान और तत्वदर्शिता की बहुत-सी बातें होती थीं ।

कौआ एक बहुत ही समझदार और चालाक पक्षी है । वह अपने व्यक्तित्व के लिए किसी तरह का ख़तरा मोल लेना गवारा नहीं करता । ख़तरे का मामूली अंदाज़ा होने पर भी भागकर अपनी जान बचाता है, इसलिए उसे डरपोक कहा जाता है । उसकी समझदारी का क़िस्सा इस तरह बयान किया गया है कि उसको प्यास लगी । उसने बर्तन में पानी देखा और पीना चाहा । पानी का स्तर नीचे था और उसकी चोंच पानी तक नहीं पहुंच रही थी । अत: उसने पानी में पत्थर के टुकड़े डालने शुरू किये, इसके कारण पानी का स्तर ऊपर आ गया और उसने पानी पीकर अपनी प्यास बुझा ली ।

किताबों में मुस्लिम बादशाहों के जो क़िस्से हैं, उनमें यह देखने को मिलता है कि कुछ बादशाह ज़ालिम और अवाम दुश्मन हुए हैं और कुछ बादशाह जनप्रिय, न्यायप्रिय और जनता के सेवक हुए हैं ।

देश में जिस राजनीति का बाज़ार गर्म है, उसका एक लंबा इतिहास है । इस इतिहास की अनदेखी करके यहां की राजनीति को समझा ही नहीं जा सकता । इतिहास के पन्ने यह बताते हैं कि भारत के प्राचीन और मूल निवासी द्रविड़ लोग थे । जब सीमा पार से आर्य यहां आये, तो उन्होंने द्रविड़ों के साथ युद्ध किया और उन्हें उपजाऊ क्षेत्रों से निकाल बाहर कर दिया ।

द्रविड़ अपनी जान बचाने के लिए जंगलों और पहाड़ों में चले गये । आर्यों के समाज को दो भागों में विभाजित कर दिया । एक भाग ऊंची जाति वालों का और दूसरा भाग नीची जाति वालों का । हुकूमत और सरदारी ऊंची जाति वालों का अधिकार था और नीची जाति वालों का काम ऊंची जाति वालों की सेवा करना था । समाज में समानता व बराबरी का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था । जब मुसलमान इस देश में आये और सत्ता उनके हाथ में आयी, तो उन्होंने न्याय व इन्साफ़ का वातावरण पैदा किया और नीची जाति वाले जो ज़ुल्मोसितम का शिकार हो रहे थे, उनको इस अत्याचार से मुक्ति दिलायी ।

फिर समय बदला और ईसाई धर्म के मानने वाले अंग्रेज़ इस देश में आये और सदियों तक यहां हुकूमत करते रहे । फिर स्वतंत्रता आन्दोलन की लहर चली और भारत फिर अंग्रेज़ों के हाथों से निकलकर अपने देशवासियों के अधिकारी में आ गया । अब हुकूमत को बादशाहत की जगह लोकतंत्र का लिबास पहनाया गया ।

देश की आज़ादी के बाद जब संविधान बनाया जाने लगा, तो अति पिछड़े वर्गों की उन्नति व विकास के लिए आरक्षण की नीति अपनायी गयी । सवाल यह भी पैदा हुआ कि संविधान की भूमिका क्या हो? एक वर्ग चाहता था कि इसे हिन्दू राष्ट्र बनाया जाए, लेकिन संविधान बनाने वाले बहुत दूरदर्शी और बुद्धिमान लोग थे ।

उन्होंने देखा कि हिन्दू क़ौम मुसलमानों की तरह न तो एक ख़ुदा को मानती है और न ही ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की तरह उसका एक धार्मिक पेशवा है । उसके देवी-देवताओं की संख्या तो लाखों और करोड़ों में है । हिन्दू समाज में जाति-बिरादरी का भेदभाव इतना गहरा है कि ऊंची जाति वाले नीची जाति वालों के साथ बैठना पसंद नहीं करते ।

रीति-रिवाज में इतना अंतर है कि एक क्षेत्र का दूसरे क्षेत्र में मेल-जोल लगभग असंभव है । बंगाली, आसामी, बिहारी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, उड़िया और दक्षिणी इलाक़ों के रहने वाले हिन्दू होने के बावजूद एक-दूसरे से इतने अलग हैं कि उनको एक करना कठिन है ।

हिन्दू राष्ट्र अगर बनेगा, तो इसकी आधारशिला क्या होगी ? अत: उन्होंने भलाई इसी में समझी कि संविधान की भूमिका धर्मनिरपेक्षता पर रखी जाए और यह संविधान सारे धर्मों और रस्मो-रिवाज को एक ही नज़रिए से देखेगा और सबको बराबरी का दर्जा देगा । तमाशा यह हुआ कि अति पिछड़े वर्गों के लिए जब आरक्षण की नीति बनायी गयी, तो मुसलमानों को इससे अलग रखा गया । अति यह हुई कि अगर कोई अति पिछड़ी जाति हिन्दू से मुसलमान बन जाए, तो वह उन सारी रियायतों से वंचित कर दिया जाएगा, जो हिन्दू अति पिछड़े वर्गों का हक़ है । ज़ाहिरी तौर पर लोकतंत्र में हर नागरिक के अधिकार समान थे, लेकिन व्यावहारिक रूप से फिर वही प्रभुत्वशाली वर्ग हुकूमत पर अधिकार जमा

लिया और अति पिछड़ा वर्ग दोबारा कंगाली और तंगदस्ती का शिकार बन गया ।

अर्थात भारत की प्राचीन पूंजीवादी व्यवस्था फिर से वापस आ गयी, लेकिन एक दूसरे अंदाज़ से । राजनीति में शैतानियत शामिल हो गयी । शैतान इन्सान का दुश्मन है । वह हमेशा इन्सानों को ऐसा मार्ग दिखाता है, जिस पर चलकर इन्सान तबाही और बरबादी की घाटी में पहुंचेगा । वह कभी इन्सानों का दोस्त हो ही नहीं सकता । इस वक़्त जो लोग राजनीति के मैदान में हैं, झूठ बोलना, वादा ख़िलाफ़ी करना, मतदाताओं को बेवक़ूफ़ बनाना, अवसरवादी बनना, अपनी वफ़ादारी को बेचना, एक नांव को छोड़कर दूसरी नांव पर सवार होना, धौंस-धांधली, अय्यारी और मक्कारी से चुनाव जीतने का हर उपाय करना, धन-बल से चुनाव लड़ने का टिकट ख़रीदना इत्यादि इनकी नुमाया विशेषताएं हैं ।

अर्थात समाज के बड़े लोगों के जो गुण होते हैं, वे सब इनके अंदर मौजूद हैं । क्या ऐसे लोगों से न्याय व इन्साफ़, सत्यवादिता, भाईचारगी, मानव-सेवा, देश और क़ौम की तरक़्क़ी और जनता की हमदर्दी की कोई आशा की जा सकती है ?

मुसलमान और मोमिन, दुनिया में वह गिरोह है, जो अल्लाह को एक और हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अंतिम ईशदूत मानकर, उनकी दी गयी शिक्षाओं के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है । उसका अक़ीदा है कि ज़िन्दगी पूरी की पूरी पवित्र क़ुरआन के मार्गदर्शन के अनुसार ही गुज़ारनी है ।

क़ुरआन के आदेश के अनुसार ज़मीन पर हुकूमत इन्सान की नहीं रहमान की होगी । संविधान और क़ानून भी इन्सान नहीं बनाएगा, बल्कि अल्लाह का वही क़ानून और संविधान लागू होगा, जिसे नबी करीम हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने मदीना में लागू किया था और जिसकी पासदारी ख़ुलफ़ा-ए- राशिदीन तीस सालों तक करते रहे और उसी के अधीन शासन-प्रबंध चलाते रहे । ज़मीन पर अल्लाह के ख़लीफ़ा की हैसियत से शासक कौन बनेगा इसका फ़ैसला भी इन्सान नहीं अल्लाह तआला ही करेगा । अल्लाह क़ुरआन में फ़रमाता है–

"कहो, ऐ अल्लाह, राज्य के स्वामी, तू जिसे चाहे राज्य दे और जिससे चाहे छीन ले । जिसे चाहे सम्मान प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित कर दे । भलाई तेरे अधिकार में है । यक़ीनन तुझे हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है ।"

(क़ुरआन, 3:26)

"अगर इस तरह अल्लाह इन्सानों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के द्वारा हटाता न रहता, तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती, लेकिन दुनिया के लोगों पर अल्लाह की बड़ी उदार कृपा है (कि वह इस तरह बिगाड़ दूर करने का प्रबंध करता है)।" (क़ुरआन, 2:251)

एक-दूसरी जगह अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है–"अल्लाह ने वादा किया है तुममें से उन लोगों के साथ जो ईमान लाएं और अच्छे कर्म करें कि वह उनको उसी तरह ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा जिस तरह उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों को बना चुका है, उनके लिए उनके उस धर्म को मज़बूत बुनियादों पर स्थापित कर देगा जिसे अल्लाह ने उनके हक़ में पसंद किया है, और उनकी (वर्तमान) भय की दशा को निश्चिंतता से बदल देगा, बस वे मेरी बंदगी करें और मेरे साथ किसी को साझी न करें । और जो इसके बाद कुफ़्र करे तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं ।"

(क़ुरआन, 24:55)

ग़ज़ल

मित्र को भी मार दूंगा भाई को भी मार दूंगा
देश बचता है तो अपने वंश को भी वार दूंगा

निष्ठ के हथियार से ही भ्रष्ट की गरदन कटी है
झूठ को जो काट डाले सत्य की वह धार दूंगा

हों घृणा की आंधियां या द्वेष की घनघोर बरखा
पेड़ कोई भी न उखड़े ठोस वह आधार दूंगा

लोक शासन की सफलता लोक सेवक पर है निर्भर
लोक जनता के हितों में लोक पथ विस्तार दूंगा

छेड़ दो आकाश को तुम खोलकर अपनी हथेली
बाज़ुओं में शक्ति दूंगा मुट्ठियों का सार दूंगा

हिल नहीं सकता कोई घर मित्रमय हो नींव तो फिर
छत किसी की गिर न पाए नेह की दीवार दूंगा ।

● भानुमित्र

टीपू का तोपख़ाना क्यों हटाया जा रहा है ?

■ इमरान क़ुरैशी

ये एक ऐसा अभियान है जिसे भारत में पहले कभी अंजाम नहीं दिया गया । 220 साल पुराने एक ऐतिहासिक ढांचे को 150 मीटर दूर खिसकाया जा रहा है । इसका वज़न 850 टन है । दरअस्ल ये ढांचा एक रेल लाइन के रास्ते में आ रहा था और इसे बचाने के लिए ऐसा किया जा रहा है । इस ढांचे की अहमियत का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि ये मैसूर के शेर कहे जाने वाले टीपू सुल्तान का शस्त्रागार था । 1799 के ब्रिटिश-मैसूर युद्ध में टीपू ने हथियारों के इसी जख़ीरे की मदद से अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ जंग लड़ी थी । विज्ञान के विकास में टीपू का योगदान इतिहास का हिस्सा है ।

दक्षिण पश्चिमी रेलवे के डिप्टी चीफ़ इंजीनियर रवि चंद्रन ने बी॰बी॰सी॰ हिंदी को बताया, "ढांचे की बुनियाद पत्थर से बनी है । हम इसे नहीं उठा सकते थे । इसलिए हमने इसके नीचे जगह बनाकर इसमें बीम डाल दिया ताकि एक फ्रेम जैसी आकृति बन जाए । बिल्डिंग के नीचे इस फ्रेम को तैयार करने के लिए पांच प्रमुख बीम और 11 क्रॉस बीम डाली गयी है । फ्रेम के नीचे जैक्स फिट किये गये हैं ताकि बिल्डिंग को उठाकर खिसकाया जा सके ।"

रेलवे का रोल

वे टीपू ही थे जिन्होंने युद्ध में पहली बार रॉकेट का इस्तेमाल किया था, लेकिन ये बात बहुत कम लोगों को पता है कि टीपू ने मैसूर से 18 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में हथियारों के आठ भंडार बनवाए थे ।

गोला बारूद

टीपू की इस निशानी को एक अमेरिकी और एक भारतीय कंपनी मिलकर 30 फुट लंबी और 40 फुट चौड़ी इमारत को खिसका रही हैं । ये ढांचा ज़मीन में 12 फुट गहरा है । इसका मक़बरे जैसा एक हिस्सा ज़मीन के ऊपर दिखता है । ज़मीन में गहरे धंसे होने की इसकी वजह भी कम दिलचस्प नहीं है ।

इसका मक़सद गोला-बारूद को ठंडा रखना था ताकि इसे कभी भी इस्तेमाल में लाया जा सके । पिछले तीन दिनों में इस ढांचे को 37 लिफ्टिंग जैक्स के ज़रिए 100 मीटर खिसकाया गया है । इस इमारत को बनाने में चूना-पत्थर, अंडे, गुड़ और रीठे का इस्तेमाल किया गया है । ढांचे के नीचे बीम फिट करने की प्रक्रिया कुछ हफ़्ते पहले ही शुरू कर दी गयी थी ।

रेलवे अधिकारियों ने ये स्वीकार किया कि बिल्डिंग के आस-पास की जगह को ख़ाली करने में थोड़ा वक़्त लग गया । बिल्डिंग को खिसकाने के लिए लगाए गये जैक्स उसके 14 फुट नीचे फिट किये गये हैं । इसका हाइड्रॉलिक सिस्टम इसे एक घंटे में तीन फुट तक खिसका सकता है।

टीपू की निशानी

ये काम संभाल रही अमेरिकी कंपनी के प्रोजेक्ट डायरेक्टर जैमिन बकिंघम ने कहा, "इस परियोजना की अपनी चुनौतियां हैं । इमारत की दीवारें एक मीटर मोटी हैं और ये ज़मीन में गहरे तक धंसी हुई हैं । हमें इसके आस-पास काफ़ी खुदाई करनी पड़ी । हमें इस बात का पूरा ख़याल रखना था कि हम क्या कर रहे थे । हमें इससे बहुत कुछ सीखने को मिला ।"

100 मीटर तक सीधे खिसकाये जाने के बाद अब इसे 30 मीटर दाहिनी ओर खिसकाया जा रहा है । वहां पर इसे रखने के लिए पहले से एक प्लेटफॉर्म तैयार किया गया है। रवि चंद्रन ने बताया कि हम शुक्रवार तक पूरी प्रक्रिया ख़त्म कर लेंगे । रेलवे बेंगलुरू-मैसूर रेलवे ट्रैक के दोहरीकरण की प्रक्रिया को जल्दी पूरा करना चाहती है और टीपू की निशानी को बचाने के लिए उसने 13.5 करोड़ रुपये ख़र्च किये हैं ।

प्रोजेक्ट से जुड़ी भारतीय कंपनी पी॰एस॰एल॰ इंजीनियरिंग के डायरेक्टर मुकुट शर्मा कहते हैं, "इस इमारत को खिसकाने के लिए ज़रूरी मंज़ूरी मिलने में काफ़ी वक़्त लगा । हमारी टेक्नॉलॉजी को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस ने मंज़ूरी दी ।" लेकिन इतिहासकार और रिटायर शिक्षाविद प्रोफ़ेसर शेख़ अली टीपू की इस इमारत को खिसकाए जाने को अलग नज़रिये से देखते हैं ।

वे कहते हैं कि श्रीरंगपट्टनम में टीपू के ऐसे सात शस्त्रागार और हैं । सभी की हालत ख़राब है और इसके अलावा भी ऐतिहासिक महत्व की दूसरी इमारतें है जिन्हें कोई देखने वाला नहीं है ।

हलब-सीरिया का बदनसीब शहर

■ समीउल्लाह मालिक

हज़ारों वर्ष प्राचीन, मानव-सभ्यता व संस्कृति और ऐतिहासिक घटनाओं का अमीन सीरिया का बदनसीब शहर हलब, इस दौर के फ़िरऔन बशारुल असद की फ़ौजों और शिया मिलीशिया के घेरे में आ चुका है । सीरिया पर मुसल्लत बशारुल असद और उसके संरक्षकों ने इस शहर वालों से बदला लेने के लिए जंगी कार्रवाइयों की शुरुआत नवम्बर के महीने से किया था, जिसे दिसम्बर के मध्य में काफ़ी हद तक पूरा कर लिया है । इन छह देशीय सहयोग और कील-कांटे से लैस होने वाली मुहिम के नतीजे में हलब के सैकड़ों नागरिकों की तड़प-तड़पकर जान देने और हज़ारों के हताहत होने की प्रमाणित सूचनाएं हैं । लगभग छह साल से हलब शहर के निवासी बशारुल सरकार के ज़ुल्मो-सितम की वजह से बाग़ी हो चुके हैं ।

दुनिया का प्राचीन शहर होने के कारण हलब वालों को अपने शानदार इतिहास और परंपराओं पर गर्वान्वित होने का पूरा हक़ है । सदियों से इस शहर का इस्लाम के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध भी रहा है, यही कारण है कि लगभग 32 लाख की आबादी वाले इस शहर की 90 प्रतिशत सुन्नी मुसलमानों की आबादी बशारुल असद के पक्षपाती शासन पद्धति के लिए असहनशील हो गयी और अब वे उन्हें सज़ा देने के लिए बेचैन थी । बार-बार हिज़्बुल्लाह और ईरानी मिलीशिया के सहयोग से हलब पर क़ब्ज़े की कोशिश की गयी, लेकिन हर बार असफलता ही मिलती रही, लेकिन बशारुल असद की अत्याचारी सरकार ने अपने विदेशी सहायकों की मदद से धीरे-धीरे शहर में पांव जमाने की कूटनीति जारी रखी ।

इस दौरान हलब वालों के ख़िलाफ़ हर तरह का जंगी उन्माद पूरी ताक़त और बेदारी के साथ इस्तेमाल करते हुए उन पर कभी मौत और कभी सख़्त भूख व प्यास थोपी गयी और न केवल उनकी खाद्य-सामग्री की आपूर्ति पूर्णतया बंद कर दी गयी, बल्कि पानी-बिजली और चिकित्सा जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित करके उन्हें शहर छोड़ने पर विवश किया गया । नवम्बर महीने के अंत में बशारुल असद ने अपने विदेशी आक़ाओं की हर तरह की मदद से एक भरपूर और भयानक जंग शुरू की और पिछले तीन-चार सप्ताह से रूसी और सीरियाई बमवर्धक युद्धक विमानों ने प्रत्यक्ष रूप से मस्जिद की मीनारों, अस्पतालों, शैक्षिक संस्थानों और निहत्थे नागरिकों के घरों को ताक-ताककर निशाना बनाकर मौत बांटी ।

सच्ची बात यह है कि सीरिया वालों की लाशों पर हुकूमत करने के आदी हो जाने वाले बशारुल असद के लिए यह देश सबसे बड़ा चैलेंज है, जिसका दूसरा बड़ा शहर इसके ज़ुल्म के ख़िलाफ़ उठ खड़ा हुआ है । दूसरे शहरों की तरह इस शहर में भी एक ही समय में विभिन्न विद्रोही ग्रुप सक्रिय रहे हैं । परिणाम स्वरूप पिछले छह सालों के दौरान कहीं सीरिया की हुकूमत को आलमी हिमायत याफ़्ता आज़ाद सीरियाई फ़ौज और कहीं अल-नुसरा फ्रंट, कहीं अल-क़ायदा और कहीं आई॰एस॰आई॰एस से पाला है । हलब के आसपास के क्षेत्र शेख़ सईद या पूर्वी हलब में भी सरकारी विमानों ने रूसी युद्धक विमानों की मदद से आई॰एस॰आई॰एस॰ पर बमबारी के आड़ में अपने ही बेगुनाह नागरिकों पर बमबारी की बरसात की है ।

बशारुल असद पिछले कई साल से अपनी हुकूमत को स्थापित रखने की कोशिश में दूसरे शहरों और क़स्बों में भी बमबारी और गोलाबारी से अब तक लाखों सीरियावासियों के ख़ून से होली खेल चुके हैं । इस सारे ख़ूनी खेल में अपने पड़ोसी और क़रीबी सहायक ईरान के अलावा रूस की भी लगातार पृष्ठ-पोषण और हर तरह की सहायता भी प्राप्त है । लेबनान से संबंध रखने वाली ईरानी मिलीशिया भी इस पूरी अवधि में बशारुल असद के साथ सीरिया वालों के ख़ून से होली खेल रही है । शायद यह पहली मिसाल हो कि अपने ही लोगों को दमिश्क से कुछ किलोमीटर की दूरी पर अल-फ़ौता के निवासियों को 21 अगस्त 2013 ईसवी में रासायनिक हथियारों से लगभग 1500 की संख्या में मौत के घाट उतार दिया गया और इस दुर्घटना के बाद ही सीरियाई हुकूमत को अपने सारे संरक्षकों के बावजूद रसायनिक हथियारों से हाथ धोने पड़े थे ।

रासायनिक हथियारों के प्रयोग का इससे पहले विभिन्न देशों पर आरोप लगता रहा, लेकिन यह अपनी ही जनता के

ख़िलाफ़ इस्तेमाल करने का हरगिज़ नहीं था । अब तीन साल का समय गुज़रने के बाद हलब के नागरिकों को भी अल-फ़ौता के नागरिकों की तरह सैकड़ों की संख्या में मौत की नींद सुलाने के जंगी मंसूबे में अपने ही एक शहर पर विजय प्राप्त करने की घोषणा की गयी । कुछ सूचनाओं के अनुसार बशारी, ईरानी और रूसी जंगी कूटनीतिज्ञों ने जुलाई के महीने में ही हलब का घेराव करना शुरू कर दिया था, ताकि शहर वालों पर खाद्य-सामग्री, पानी और चिकित्सा प्राप्त करने के सारे रास्ते बंद करके उन्हें आत्म समर्पण करने पर विवश किया जा सके ।

लेकिन पिछले छह साल से अंतराल-अंतराल से इस ख़ूनी त्रयवाद का मुक़ाबला करने वाले हलबवासियों ने इस बार भी कमाल सब्र व हिम्मत का प्रदर्शन किया, यद्यपि नज़र आ रहा था कि जंगी उन्माद में ग्रस्त ये त्रीवाद हवाई और ज़मीनी जंग की अंधाधुंध तैयारी के साथ आ रहे थे । इसके बावजूद नवम्बर महीने के आख़िरी अशरे से दिसम्बर के मध्य तक हलब के निवासियों ने भूख और प्यास का डटकर मुक़ाबला किया । इन नागरिकों के भूख और प्यास के साथ अपने घरों में शांति के साथ रहने की एक वजह यह भी थी कि जंगी त्रयवादों ने शहर का बुरी तरह घेराव कर रखा था और शहर से निकलने की कोशिश करने वाले परिवारों को ने केवल लूटमार का निशाना बनाया जाता था, बल्कि उन्हें शहीद भी कर दिया जाता था ।

दिसम्बर महीने के दूसरे सप्ताह के शुरुआत के साथ ही शहर पर भयानक बमबारी तेज़ कर दी गयी और शहर में चारों तरफ़ से टैंकों और भारी-भरकम हथियारों के साथ लैस कुशल निशानेबाज़ों को शहर के निहत्थे नागरिकों को निशाना बनाने के लिए खुला छोड़ दिया गया । निहत्थे नागरिक युद्धक विमानों और टैंकों का मुक़ाबला करने की स्थिति में हरगिज़ न थे । इस ख़तरनाक हालत में घरों में ही वृद्ध, बच्चे, औरतें और जवान अकारण ही शहीद कर दिये गये और जिन्होंने अपनी जान बचाने की कोशिश की उन्हें थल सेना ने निशाना बनाना शुरू कर दिया, जिससे अनगिनत हताहतों ने खुलेआम सड़कों पर तड़प-तड़पकर जान दे दी।

हज़ारों की संख्या में पराजित होने वालों को उनके घरों ने अपने अन्दर ही हमेशा के लिए छुपा लिया । ज़ख़्मों से चूर मां-बाप अपने कलेजे के टुकड़ों को बेबसी की मूर्ति बने उनके परखच्चे उड़ते हुए चीख़ व चिल्ला रहे थे, लेकिन कोई उनकी फ़रियाद पर कान धरने और उनको ऐसे हृदय विदारक दृश्यों से बचाने के लिए मौजूद नहीं था । अजीब क़यामत का मंज़र था कि मां-बाप अपने बच्चों, भाई अपने भाई और मां-बाप को अपनी आंखों के सामने तड़पते हुए मरता देख रहे थे । हां यह अंतर ज़रूर रहा कि कुछ मर कर तहे ख़ाक हो रहे थे और कुछ ज़िंदा ही अंधी बमबारी और सेनाओं की ज़ालिमाना फ़ायरिंग के कारण गलियों, बाज़ारों और घरों के मलवे के ढेर बन रहे थे और मौत से बच निकलने की कोशिश करने वालों के लिए सैन्य मिलीशिया के कुशल निशानेबाज़ रास्ता रोककर प्रत्यक्ष रूप से उनके सिरों का निशाना लेकर गोली दाग़ देते थे ।

अंतिम सूचना तक हलब शहर का 90 प्रतिशत हिस्सा ख़ाली हो चुका है, लेकिन अपने घरों के मलवे में अपने प्यारों की लाशों को दबी छोड़कर जाने वाले हलब वालों को ख़ाली हाथ भी शहर से निकलने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है । वे शहर में रुकें तो घरों, गलियों और बाज़ारों में पड़ी लाशें और उनसे पैदा होने वाली बीमारियों और समस्याओं से सामना है और बचे-खुचे परिवार को लेकर निकालें, तो जंगी उन्माद में ग्रस्त सीरियाई फ़ौज और उसकी सहायक सेना ईरानी मिलीशिया उनको निशाना बनाने के लिए मौजूद ।

इन हालात में रूस और ईरान को वैश्विक स्तर से जिस जनाक्रोश का सामना करना पड़ रहा है वह सबके सामने है । इस ग़म व ग़ुस्से के वातावरण से वैश्विक साम्राज्यवादी शक्तियां ग़लत फ़ायदा उठाने की भी पूरी कोशिश कर सकती हैं, जैसा कि तुर्की में रूसी राजनयिक के क़त्ल की घटना इसकी तरफ़ इशारा करती है । ख़ुद रूस की तरफ़ से भी नाटो देशों का ही नाम लिया गया है । इस सूरतेहाल में ईरान ने भी अपने राजनयिकों को तुर्की से निकालने की घोषणा कर दी है, लेकिन प्रश्न यह है कि रूस और ईरान की सीरिया की जनता के ख़िलाफ़ युद्ध नीतियों के सुधार के लिए यह काफ़ी है ?

होना तो यह चाहिए कि मुस्लिम दुनिया के मार्गदर्शक अपनी नीतियों को नये सिरे से देखे, दूसरे देशों में मौत बांटने की कोशिश करने वाला, अमेरिका, रूस या ईरान हो, इसको कोई भी प्रशंसनीय नहीं कह सकता, लेकिन मुस्लिम दुनिया की आपसी फूट ही ऐसी ख़ता है, जिसकी यह सज़ा है कि इन देशों के सरबराह अपनी सत्ता के स्थायित्व के लिए उन्हीं साम्राज्यवादी शक्तियों के प्रमुख बने हुए हैं ।

इस्लाम के सुखद अनुभव

■ सारा जोज़फ़

श्रीमती सारा जोज़फ़ इंग्लैंड की एक प्रसिद्ध पत्रकार महिला हैं और मुस्लिम यूथ मैगज़ीन 'ट्रेंड्स' की हैं । इस्लाम को अपनाने के बाद उनकी विचारोत्तेजक प्रतिक्रियाएं लंदन की प्रसिद्ध पत्रिका इम्पैक्ट (Impact) में प्रकाशित हुईं । जहां से उसे मुहम्मद हनीफ़ शाहिद ने अपनी किताब में शामिल किया । नीचे उनका अनुवाद दिया जा रहा है ।

यूं तो मैं इस्लाम से कुल मिलाकर बहुत प्रभावित हूं और यही चीज़ मुझे इस्लाम के साये में लायी है । लेकिन एक औरत की हैसियत से मैं हज़रत ख़दीजा, आइशा, सुमैय्या और नोसेबा (रज़ि॰) जैसी औरतों को ख़िराजे-अक़ीदत (श्रद्धांजलि) पेश करती हूं जो एक पाकीज़ा सोसायटी बनाने और न्याय पर आधारित एक क्रान्ति लाने के लिए अपने मुसलमान भाइयों के साथ मिलकर असत्य की शक्तियों से संघर्ष करती रहीं । इस प्रकार मदीना के पुरुष एवं महिलाओं ने अल्लाह के दीन के विकास और उसकी मज़बूती के लिए एकजुट होकर प्रयास किया...और आज इस ज़माने में हमें भी एक बेहतर, शान्तिप्रिय समाज की स्थापना के लिए मिल-जुलकर कोशिश करनी होगी । मर्दों को भी और औरतों को भी ।

मैं ऐसी ब्रिटिश मुसलमान औरत की हैसियत से अपने अनुभव लिख रही हूं, जो अपने परिवार, माता-पिता के हवाले से इस्लाम से परिचित नहीं हुई, बल्कि जिसका संबंध बिल्कुल दूसरी दुनिया से है, बल्कि सही शब्दों में आप कह सकते हैं कि मेरा संबंध फ़िरऔन के घर से है, जिस प्रकार फ़िरऔन के घर में एक ख़ुदा को पहचानने वाली ख़ातून भी थी और एक बच्चा भी जो बाद में मूसा (अलैहि॰) के नाम से अल्लाह का सन्देशवाहक बना, जिन्होंने फ़िरऔन की सज़ा और उसके क्रोध का मुक़ाबला किया, लेकिन सत्य को त्यागने से इन्कार कर दिया ।

इसी प्रकार आज यूरोप के महलों में मेरी तरह बहुत-से लोग हैं जो वर्तमान काल में 'नयी फ़िरऔनियत' का इन्कार कर रहे हैं, सख़्तियां झेल रहे हैं, लेकिन सत्य की राह पर दृढ़ता से डटे हुए हैं...यहां अनगिनत लोग ऐसे भी हैं जिन तक अगर हिक्मत और सलीक़े के साथ इस्लाम की दावत पहुंचाई जाए तो वे उसे अपनाने में संकोच नहीं करेंगे, लेकिन अफ़सोस कि सत्य को उनसे छिपाया गया है...और यह अफ़सोसनाक हरकत यूरोप के मीडिया ने नहीं, बल्कि ख़ुद मुसलमानों ने अंजाम दी है । काश वे इसका एहसास करें ।

मैं अपने दृष्टिकोण की व्याख्या यूं करूंगी कि नस्ली मुसलमानों ने अपने व्यवहार, रहन-सहन और अपने क्रोध पूर्ण मिज़ाज के कारण अपने और ग़ैर-मुस्लिम दुनिया के बीच ऐसी दीवार खड़ी कर दी है जो दावत और प्रचार-प्रसार के रास्ते की बहुत बड़ी रुकावट बन गयी है ।

मैं यह नहीं कहती कि गुस्सा न किया जाए, गुस्सा एक स्वाभाविक चीज़ है और जब मांओं, बहनों, बेटियों, वृद्धों और बच्चों और युवकों से क्रूरता का व्यवहार किया जा रहा हो, ज़ुल्म-ज़्यादती का बाज़ार गर्म हो और दुराग्रह तथा तंगनज़री व पक्षपात का रवैया जारी हो तो गुस्सा अवश्य आएगा, लेकिन मैं कहना चाहूंगी कि गुस्सा दावत और प्रचार-प्रसार के रास्ते की बहुत बड़ी रुकावट है ।

इस्लाम का प्रचार हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है और क़ुरआन में जगह- जगह इसका बयान है और पैग़म्बरे-इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इसकी बहुत ताकीद फ़रमायी है । क़ुरआन में है, "लोगों को अल्लाह के रास्ते की ओर बुलाओ हिक्मत और अच्छे तरीक़े के साथ ।" (क़ुरआन, 16:125) और मुहम्मद (सल्ल॰) ने फ़रमाया : "हर मुसलमान के लिए एक सीमा है, जिसकी उसे अवश्य ही रक्षा करनी है ।" और मेरे नज़दीक दावत और तब्लीग़ यूरोप में रहने वाले हर मुसलमान के लिए मानो एक सीमा है, जिसकी सुरक्षा करना उसके लिए आवश्यक है । यह हमारा मौलिक कर्तव्य है जिसे पूरा करने में हमसे कोताही कदापि नहीं होनी चाहिए ।

अत: मेरे नज़दीक जो लोग उठते-बैठते यूरोप को बुरा-भला कहते हैं और 'इस्लाम बनाम पश्चिम' का नारा

लगाते हैं, वे यूरोप में इस्लाम की मंज़िल को क्षतिग्रस्त करते हैं । वे बिना किसी फ़र्क़ व अपवाद के सारे यूरोप को इस्लाम का दुश्मन साबित करते हैं और ये नारे यूरोपवासियों के दिलों में नफ़रत और दुश्मनी पैदा करते हैं । वे ठीक ही जवाब देते हैं कि जब हमसे खुली नफ़रत की जाती है तो हम इस्लाम को क्यों अपनाएं ? उनका धर्म क्यों ग्रहण करें, जो हमसे विमुख और नफ़रत करने वाले हैं ?

अत: विश्वास कीजिए कि अगर इस्लाम स्वीकार करने से पूर्व मैंने उपर्युक्त प्रकार के नारे सुने होते, इस प्रकार के लेखों से परिचित हुई होती तो कभी मुसलमान न होती । लेकिन अल्लाह का शुक्र है कि मैंने नस्ली मुसलमानों के व्यवहार को नहीं देखा, बल्कि सीधे क़ुरआन और सुन्नत का अध्ययन किया और इस्लाम के चमत्कार ने मुझे अपना ग़ुलाम बना लिया...और यह केवल मेरा ही एहसास नहीं, मुझे बहुत-से नवमुस्लिमों से मिलने का अवसर मिला है और उन सबकी यही राय है कि हम मुसलमानों की वजह से नहीं, बल्कि इस्लाम को देखकर मुसलमान हुए हैं ।

यह दर्दनाक दृश्य इस्लाम के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के चरित्र और आचरण से कितना भिन्न है कि अनगिनत लोग आप (सल्ल०) के पाकीज़ा और आदर्श चरित्र से प्रभावित होकर मुसलमान हो गये । आप (सल्ल०) के सब्र, दयानतदारी और बहुत सख़्त मुख़ालफ़त में भी आप (सल्ल०) की न्यायप्रियता और संतुलित नीति विरोधियों को प्रभावित किये बिना नहीं रहती थी ।

अंदाज़ा कीजिये कि एक मुख़ालिफ़ बुढ़िया पैग़म्बर (सल्ल०) के रास्ते में कांटे बिछा दिया करती थी और जब वे उधर से गुज़रते तो उन पर कूड़ा फेंक देती, लेकिन पैग़म्बर (सल्ल०) उससे उलझे बग़ैर चुपचाप और सब्र से आगे बढ़ जाते थे । यह बुढ़िया का रोज़ाना का काम था । लेकिन फिर यूं हुआ कि एक-दो दिन इस मामूल में फ़र्क़ आ गया । बुढ़िया घर से बाहर न निकली तो आप (सल्ल०) ने उसके बारे में मालूम किया । पता चला कि वह बीमार है तो आप (सल्ल०) उसके घर गये । उसकी ख़ैरियत पूछी और कुछ सहायता भी की । इस पर बुढ़िया का व्यवहार बिल्कुल बदल गया । उसकी नफ़रत मुहब्बत में बदल गयी और वह मुसलमान हो गयी ।

लेकिन आह ! आज मुसलमानों का अपने पड़ोसियों और आम मुसलमानों के साथ कैसा व्यवहार है ? कोई मामूली से विरोध को व्यक्त कर दे तो हम क्रोधित होकर उससे संबंध तोड़ लेते हैं । हम यह कहते हुए कि "अपना बचाव करना अत्याचार नहीं है" दूसरों की मुख़ालफ़त में और अधिक मुख़ालफ़त के जवाब का प्रदर्शन करते हैं और भूल जाते हैं कि पैग़म्बर (सल्ल०) का तरीक़ा ऐसे हालात में क्या था ? यह सच है कि आत्मरक्षा अत्याचार नहीं होता, लेकिन फिर सब्र, बर्दाश्त, हिक्मत और इन्तिज़ार किस चीड़ का नाम है और आख़िर विरोधियों को हम किस प्रकार और क्योंकर इस्लाम के क़रीब लाएंगे ? आप (सल्ल०) की जीवनी में तो सब्र...लगातार सब्र...प्रमुख विशेषता के रूप में नज़र आता है । क्षमा कर देना आपका सबसे बड़ा हथियार था । हम ये विशेषताएं क्यों छोड़ बैठे हैं ? हमने इस हथियार को क्यों कुन्द कर दिया है ?

याद रखिये हमने पश्चिम को सामूहिक रूप से अपना दुश्मन क़रार दे दिया है । यह बिल्कुल नकारात्मक रवैया है । हमारी नज़र केवल ख़राबियों पर है और ख़ूबियों को नज़रअंदाज़ करके बहुत बड़ी ग़लती कर रहे हैं.....हमें यह हक़ीक़त सामने रखनी चाहिए कि इस्लाम पूरी मानव-जाति की पूंजी है । इस पर किसी ख़ास क़ौम का अधिकार नहीं और हमें यह पूंजी दूसरों तक स्थानान्तरित करने की अपनी हद तक कोशिश करनी है और यह कोशिश मुहब्बत, सब्र, हिक्मत, मेहनत और इन्तिज़ार ही से पूरी होगी...नारेबाज़ी, नफ़रत की मुहिम और विरोधपूर्ण प्रोपगैंडा उसके रास्ते में ख़तरनाक रुकावट बन जाएगा और हम नुक़सान के लिए जवाबदेह होंगे ।



महाबचत और छूट की लूट बनाम लूट

■ चांद ख़ां रहमानी

यह रुपहले परदे पर विज्ञापनों का सुनहरा संसार है, जहां से आप सामान और छूट लेने को आतुर दिखायी पड़ते हैं। लेकिन आपको समझना ज़रूरी है कि छूट में ही छूट निहित है। दरअस्ल विज्ञापनों का अलग मनोविज्ञान है। सबसे अच्छे विज्ञापन की परिभाषा क्या है ? जो विज्ञापन बिना ज़रूरत के कोई सामान ख़रीदने के लिए ललचाने लगे या ख़रीद करा ले वही सबसे सफल विज्ञापन माना जाता है। विज्ञापन में हमेशा डर ज़्यादा बिकता है। उसके बाद आपकी प्रतिष्ठा का नंबर आता है।

आज के आपाधापी, भागदौड़ और स्वार्थी ज़माने में जहां लोग एक-दूसरे को लूट रहे हैं, धोखा दे रहे हैं, माल मार रहे हैं, अपनों तक को नहीं बख़्श रहे ऐसे समय में कुछ कंपनियां चैनलों और विज्ञापनों के माध्यम से आपको हर हालत में लाभ पहुंचाना चाहती हैं। आप लें या न लें लेकिन वे आपको हर हालत में छूट देने पर आमादा हैं। वे खुद घाटा उठाकर आपको 70 प्रतिशत तक की छूट देने के लिए छटपटा रही हैं। ये उत्पादक कंपनियां अपने उत्पादों के ज़रिये महिलाओं को गुलामी की बेड़ियों और उन पर हो रहे 'अत्याचार से आज़ादी दिलाना चाहती हैं।

महिलाओं को हर हालत में ज़माने के ज़ुल्मों से मुक्ति दिलाना ही उनका लक्ष्य है ? वे उन्हें सुंदर बनाना चाहती हैं। वे उन्हें मोटापे से छुटकारा दिलाने के लिए हाथ-पैर मार रही हैं। वे उन्हें बिना मेहनत के पतला करना चाहती हैं। उनमें आत्मविश्वास भर देना चाहती हैं। वे उन्हें हर-हाल में समाज में सिर उठाकर चलने का मौक़ा देना चाहती हैं ? वे महिलाओं का जीवन आसान करने के लिए तमाम तरह के मशीनें और यंत्र ले आयी हैं। वे आपके घर को सुंदर बनाने के लिए मारामारी कर रही हैं। आपको कुछ नहीं करना है जो कुछ करेगी वह मशीनें करेंगी। इतना ही नहीं युवकों और पुरुषों के लिए भी उनके पास बहुत कुछ है। वह आपको और आपके पेट को मात्र दस सेकेंड में चार इंच पतला कर देंगे। है न जादू !

उन्हें आपके बच्चों की चिंता है इसलिए वे आपके बच्चों के लिए हाई जैनिक बर्तन ले आये हैं। वह ऐसा फ़ोन भी ले आये हैं, जिस पर रखकर सब्ज़ी, आलू, गाजर कुछ भी काटिए। उस पर छुरी, कांटा, चापड़, हथौड़ा, कुल्हाड़ी तक कुछ भी चलाइए फ़ोन पर खरोंच तक नहीं आएगी और तो और उस पर आप कार चढ़ा दीजिए उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। वे आपके घर के चूहे और कीड़े-मकोड़े आदि भगा रहे हैं। उनके पास आपके लिए साड़ियां हैं, कंबल हैं, रजाइयां हैं, गहने हैं। आपके घर में जो कुछ पहले से वह सब कूड़ा है या आउट डेटेट है उसका कुछ मतलब नहीं। सबसे ख़ास बात है कि यह सब चीज़ें महाबचत के तहत दी जा रही हैं जिसमें वह आपको 70 प्रतिशत की छूट देने को छटपटा रहे हैं। इसके लिए आपको कुछ हज़ार 9 सौ 99 रुपये अदा करने हैं।

हां, एक बात और ! आप जो कुछ परदे पर देख रहे हैं वह सब कुछ सुंदर काम करने में बेहद आसान और जादू के समान दिखायी देता है, लेकिन वही सामान आपके पास पहुंचकर उस तरह काम न करे जिस तरह आप परदे पर देख चुके हैं तो इसके लिए आप ही ज़िम्मेदार हैं। यह रुपहले परदे पर विज्ञापनों का सुनहरा संसार है जहां से आप सामान और छूट लेने को आतुर दिखायी पड़ते हैं, लेकिन आपको समझना ज़रूरी है कि छूट में ही लूट निहित है।

दरअस्ल विज्ञापनों का अलग मनोविज्ञान है। सबसे अच्छे विज्ञापन की परिभाषा क्या है ? जो विज्ञापन बिना ज़रूरत के कोई सामान ख़रीदने के लिए ललचाने लगे या ख़रीद करा ले वही सबसे सफल विज्ञापन माना जाता है। विज्ञापन में हमेशा डर ज़्यादा बिकता है। उसके बाद आपकी प्रतिष्ठा का नंबर आता है। कुछ सीन देखिए। एक महिला आटा गूंथ रही है वह पसीने-पसीने हो रही है और चेहरे पर बेबसी साफ़ दिखायी दे रही है। ऐसा लग रहा है कि यह महिला शायद पहली बार इतना बड़ा और कठिन काम कर रही है।

यहां उसकी बेबसी और लाचारी के सामने एक आटा गूंथने की मशीन आती है, जिससे दूसरी महिला मुस्कराते हुए आटा गूंथ रही है। अब बताइए वह मशीन क्यों नहीं

बिकेगी । इस विज्ञापन में इसके पीछे के साइड इफेक्ट की ज़िक्र नहीं किया जाता । इसी तरह एक महिला गैस चूल्हे पर रोटी बना रही है उसके चेहरे पर भी वही बेबसी और परेशानी तभी एक रोटी मेकर सामने आता है जिसमें एंकर कितनी ख़ूबसूरत रोटियां बनाते हुए दिखाते हैं और ख़ुशी से चिल्लाते हैं वाह ! साथ-साथ एंकर बताते जाते हैं कि हम अब इसे आधी से भी कम क़ीमत पर दे रहे हैं । उनसे महिलाओं की यह 'दुर्दशा' नहीं देखी जा रही इसलिए वह अपना सामान कुछ हज़ार 9 सौ 99 रुपये में बेच रहे हैं ।

हमने भी कुछ साल पहले रोटी मेकर मंगवा लिया था मगर हमारी बीवी से एक रोटी भी नहीं बन सकी आख़िर हमने वह रोटी मेकर किसी रिश्तेदार की बेटी की शादी में दिया तो हम वहां उपहास के पात्र बन गये । दरअस्ल है यह कि टी॰वी॰ पर जो काम करके दिखाते हैं वे सभी प्रशिक्षित एंकर होते हैं जो बड़े सफ़ाई से काम को अंजाम दे देते हैं । सदियों से महिलाएं अपने पति, बच्चों और घर वालों का खाना बड़े आसानी से बनाती आ रही हैं लेकिन अब बताया जा रहा है कि बिना स्लाइस कटर के आपका जीवन बेकार है ।

आपको लुभाने के लिए उनका कैमरा आपको उस जगह ले जाता है जहां उन उत्पादों का निर्माण किया जाता है । मसलन राजस्थानी रजाई या फिर राजस्थानी साड़ियां किस तरह कहां और कैसे बनायी जाती हैं इसके पीछे आपके अंदर विश्वास पैदा करने की सोच होती है ताकि ख़रीदारी करने में आप संकोच न करें ।

हालांकि केंद्रीय मंत्री इस बात को कई बार दोहरा चुके हैं कि अतिश्योक्ति वाले विज्ञापनों पर लगाम लगाएंगे लेकिन इस पर कब अमल होगा इस बारे में कुछ पता नहीं है । यह भी हो सकता है कि मंत्री जी जनता को थोड़ी देर के लिए ख़ुश करने के लिए बयान जारी कर देते हों । हम विज्ञापनों का विरोध नहीं करते लेकिन उसमें सत्यता का पुट ज़्यादा होना चाहिए लेकिन हो इसके ठीक उलटा रहा है । आज विज्ञापनों की दुनिया इतनी भ्रामक है कि उस पर विश्वास करना कठिन हो रहा है । हम उसी विज्ञापन पर भरोसा करने लगते हैं जिसका विज्ञापन करने वाला ज़्यादा लोकप्रिय हो । हमारे देश की जनता का यह दुर्भाग्य है कि हमारे यहां उत्पाद को सरकारी स्तर पर उसकी तारीफ़ की कसौटी पर परखा नहीं जाता । अगर ऐसा होता है तो देश की जनता भ्रामक विज्ञापनों के झांसे में आने से बच सकती है ।

हिन्दी ग़ज़ल के हीरे

थोड़ी आंच बची रहने दो थोड़ा धुआं निकलने दो
कल देखोगे कई मुसाफ़िर इसी बहाने आएंगे ।

–दुष्यंत कुमार

कौन खोलेगा इन्हें कौन पढ़ेगा इनको
हम किताबों में हैं सूखे हुए फूलों की तरह ।

–डॉ॰ अजय जनमेजय

चुभ कर कहीं बना ही न दे घाव पांव में
पैरों तले की घास को ज़्यादा न दाबिए ।

–डॉ॰ कुंवर बेचैन

तू कहां समझेगा ये आंसू तेरी सौग़ात है
जब तू समझेगा तो इस आंधी में हम उड़ जाएंगे ।

–डॉ॰ गिरिराज शरण अग्रवाल

मेरे घर कोई ख़ुशी आती तो कैसे आती
उम्र भर साथ रहा दर्द महाजन की तरह ।

–गोपालदास 'नीरज'

आप जिस की धीरता गंभीरता पर मुग्ध हैं
उस समन्दर ने जहाज़ों को डुबाया है बहुत ।

–ज़हीर कुरैशी

लाख जूझे किन्तु अमृत हाथ में आया न विष
देवता सूखे हुए सागर का मंथन कर गये ।

–निश्तर ख़ानकाही

मोह के वृक्ष मत उगा ये तुझे
छांव देंगे न मीठे फल देंगे ।

–राजगोपाल सिंह

ऐसे सन्नाटे में भी नींद जिन्हें आती हो
उनसे कह दो कि ज़रा दूर टहल कर सोएं ।

–रामावतार त्यागी

हाथों में जिसके उम्र ने कोरी किताब दी
प्रश्नों से किस तरह मिले अभ्यास क्या करे ।

–हनुमंत नायडू

शर्त ये रक्खी गयी कोई करिश्मा चाहिए
और पानी रख दिया है छलनियों के वास्ते ।

–हस्तीमल हस्ती

वायु प्रदूषण की भेंट चढ़ती ज़िन्दगी

■ रीता सिंह

यह चिंता का विषय है कि वायु प्रदूषण की वजह से भारत में हर मिनट दो लोगों की मौत हो रही है । यह खुलासा दुनिया की जानी-मानी चिकित्सा पत्रिका लांसेट ने किया है । इसमें अड़तालीस प्रमुख वैज्ञानिकों का अध्ययन शामिल है । इस अध्ययन में कहा गया है कि पी॰एम॰ 2.5 के स्तर के लिहाज से भारत की राजधानी दिल्ली और पटना शहर विश्व के सर्वाधिक प्रदूषित शहरों में हैं । वायु प्रदूषण के कारण हर वर्ष तक़रीबन दस लाख भारतीय मौत के मुंह में समा रहे हैं । दक्षिण एशिया में यह आंकड़ा सोलह लाख है । अमेरिका के प्रतिष्ठित हेल्थ इफेक्ट इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट में भी कहा गया है कि भारत की हवा में पी॰एम॰ 2.5 कणों की हद से ज़्यादा मौजूदगी के कारण वर्ष 2015 में ग्यारह लाख समय पूर्व मौतें हुईं ।

पिछले साल विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी खुलासा किया कि दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र में वायु प्रदूषण की वजह से हर साल आठ लाख जानें जा रही हैं जिसमें पचहत्तर फ़ीसद से ज़्यादा मौतें भारत में हो रही हैं । रिपोर्ट के मुताबिक़ यह संपूर्ण क्षेत्र आपात स्थिति में है । हर दस में से नौ लोग ऐसी हवा में सांस ले रहे हैं, जो उनकी सेहत के लिए बेहद ख़तरनाक है । पत्रिका के मुताबिक़ भारत के कई शहरों में प्रदूषक तत्व विश्व स्वास्थ्य संगठन के तय मापदंड दस माइक्रोग्राम प्रति घनमीटर से अधिक हैं । भारत की बानवे फ़ीसद जनसंख्या सर्वाधिक वायु प्रदूषित इलाक़ों में रह रही है ।

भारत में वायु प्रदूषण किस तरह जान-लेवा साबित हो रहा है यह पिछले साल पहले यूनीवर्सिटी ऑफ़ शिकागो, हार्वर्ड और येल के अर्थशास्त्रियों की उस रिपोर्ट से उद्घाटित हुआ, जिसमें कहा गया था कि भारत दुनिया के उन देशों में शुमार है, जहां सबसे अधिक वायु प्रदूषण है और जिसकी वजह से यहां के लोगों को समय से तीन साल पहले काल का ग्रास बनना पड़ रहा है ।

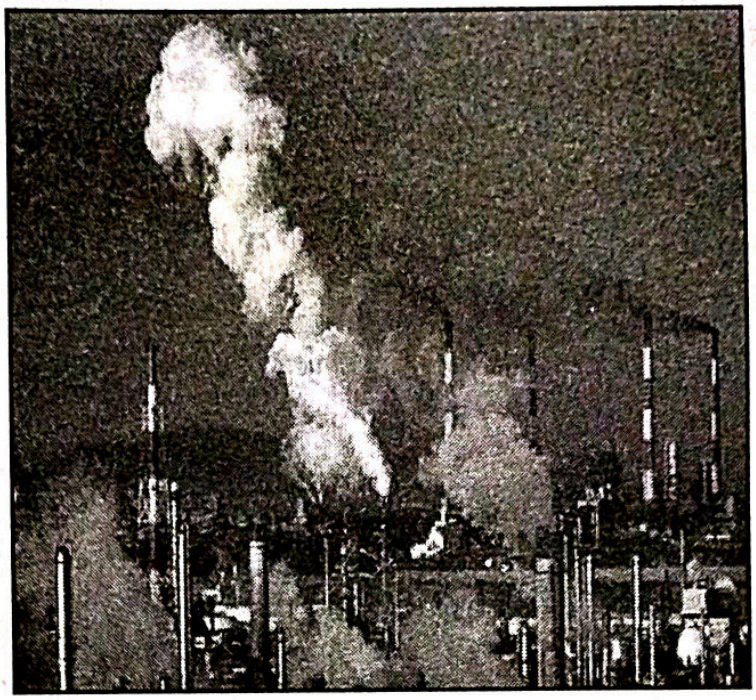

रिपोर्ट के मुताबिक़ अगर भारत अपने वायु मानकों को पूरा करने के लिए इस आंकड़े को उलट देता है तो इससे छियासठ करोड़ लोगों के जीवन के 3.2 वर्ष बढ़ जाएंगे । रिपोर्ट के मुताबिक़ अगर भारत वायु प्रदूषण पर शीघ्र नियंत्रण नहीं करता, तो 2025 तक अकेले राजधानी दिल्ली में वायु प्रदूषण से हर वर्ष 26,600 लोगों की मौत होगी ।

पिछले साल दुनिया की जानी-मानी पत्रिका 'नेचर' ने भी खुलासा किया कि अगर शीघ्र ही वायु की गुणवत्ता में सुधार नहीं हुआ, तो वर्ष 2050 तक प्रत्येक वर्ष छियासठ लाख लोगों की जानें जा सकती हैं । ग़ौरतलब है कि यह रिपोर्ट जर्मनी के मैक्स प्लेंक इंस्टीट्यूट ऑफ़ केमेस्ट्री के प्रोफ़ेसर जोहान लेलिवेल्ड और उनके शोध दल ने तैयार किया था, जिसमें प्रदूषण फैलने के दो प्रमुख कारण गिनाए गये । एक, पी॰एम॰ 2.5-एस विषाक्त कण और दूसरा वाहनों से निकलने वाली गैस नाइट्रोजन आक्साइड । रिपोर्ट में आशंका ज़ाहिर की गयी कि भारत और चीन में वायु प्रदूषण की समस्या विशेष तौर पर गहरा सकती है । क्योंकि इन देशों में खाना पकाने के लिए कच्चे ईंधन का इस्तेमाल होता है, जो प्रदूषण का बड़ा स्रोत है ।

अच्छी बात है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वायु प्रदूषण से होने वाले स्वास्थ्य जोखिमों के बारे में जागरूकता बढ़ाने की अपील की है । लेकिन विडंबना है कि इस पर अमल नहीं हो रहा । भारत में चार साल पहले 'क्लीन एयर एक्शन प्लान' के ज़रिए वायु प्रदूषण से निबटने का संकल्प लिया गया । लेकिन उस पर कोई काम नहीं हो रहा है । नतीजा सामने है ।

भारत के विभिन्न शहर वायु प्रदूषण की चपेट में हैं । उपग्रहों से लिए गये आंकड़ों के आधार पर तैयार रिपोर्ट के मुताबिक़ विश्व के 189 शहरों में सर्वाधिक प्रदूषण स्तर भारतीय शहरों में है । मसलन, भारत का सिलिकॉन वैली बंगलुरू वायु प्रदूषण स्तर में वृद्धि के मामले में अमेरिका के पोर्टलैंड शहर के बाद दूसरे स्थान पर है ।

कुछ ऐसे ही बदतर हालात देश के अन्य बड़े शहरों के भी हैं । ख़तरनाक बात यह कि देश के शहरों के वायुमंडल में गैसों का अनुपात बिगड़ता जा रहा है और उसे लेकर किसी तरह की सतर्कता नहीं बरती जा रही । हाल के वर्षों में वायुमंडल में कार्बन डाई ऑक्साइड की मात्रा तक़रीबन पच्चीस फ़ीसद वृद्धि हुई है । इसका मुख्य कारण बड़े कल-कारख़ानें और उद्योगधंधों में कोयले और खनिज तेल का उपयोग है ।

ग़ौरतलब है कि इनके जलने से सल्फर डाई ऑक्साइड निकलती है, जो मानव जीवन के लिए बेहद ख़तरनाक है । शहरों का बढ़ता दायरा, कारख़ानों से निकलने वाला धुंआ, वाहनों की बढ़ती तादाद और मेट्रो का विस्तार तमाम ऐसे कारण हैं, जिनकी वजह से प्रदूषण बढ़ रहा है । वाहनों के धुएं के साथ सीसा, कार्बन मोनोक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड के कण निकलते हैं । ये दूषित कण मानव शरीर में कई तरह की बीमारियां पैदा करते हैं । मसलन, सल्फर डाई ऑक्साइड से फेफड़े के रोग, कैडमियम से हृदय रोग, और कार्बन मोनोक्साइड से कैंसर और श्वास संबंधी रोग होते हैं । कारख़ाने और विद्युत गृह की चिमनियों और स्वचालित मोटरगाड़ियों में विभिन्न ईंधनों के पूर्ण और अपूर्ण दहन भी प्रदूषण को बढ़ावा देते हैं ।

वायु प्रदूषण से न केवल मानव समाज, बल्कि प्रकृति को भी भारी नुक़सान पहुंच रहा है । जब भी वर्षा होती है प्रदूषक तत्व वर्षा जल के साथ मिलकर नदियों, तालाबों और मृदा को प्रदूषित कर देते हैं । अम्लीय वर्षा का जलीय तंत्र समष्टि पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है । नार्वे, स्वीडन, कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका की महान झीलें अम्लीय वर्षा से प्रभावित हैं । अम्लीय वर्षा वनों को भी बड़े पैमाने पर नष्ट कर रही है ।

यूरोप महाद्वीप में अम्लीय वर्षा के कारण साठ लाख हेक्टेयर वन क्षेत्र नष्ट हो चुके हैं । ओज़ोन गैस की परत में दूषित गैसों के कारण एक बड़ा छिद्र हो गया है, जिससे सूर्य की ख़तरनाक पराबैगनीं किरणें भूपृष्ठ पर पहुंच कर ताप में वृद्धि कर रही है । इससे न केवल कैंसर जैसे असाध्य रोगों में वृद्धि हो रही है, बल्कि पेड़ों से कार्बनिक यौगिकों के उत्सर्जन में बढ़ोत्तरी हुई है ।

नये शोधों से जानकारी मिली है कि गर्भवती महिलाएं, जो वायु प्रदूषण क्षेत्र में रहती है, उनसे जन्म लेने वाले शिशु का वज़न सामान्य शिशुओं की तुलना में कम होता है । शोध के मुताबिक़ जन्म के समय कम वज़न के शिशुओं को आगे चलकर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है । यानी इनमें मधुमेह और हृदय रोग का ख़तरा बढ़ जाता है ।

वायु प्रदूषण का दुष्प्रभाव ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासतों पर भी पड़ रहा है । पिछले साल देश के उनतालीस शहरों के एक सौ अड़तीस स्मारकों पर वायु प्रदूषण के घातक दुष्प्रभाव का अध्ययन किया गया । पाया गया कि शिमला, हसन, मंगलौर, मैसूर, कोट्टयम और मदुरै में पार्टिकुलेट मैटर पॉल्यूशन राष्ट्रीय मानक साठ माइक्रोग्राम क्यूबिक मीटर से भी अधिक है ।

विश्व बैंक के मुताबिक़ वायु प्रदूषण से भारत में श्रमबल की दृष्टि से क़रीब 2.55 लाख करोड़ रुपये का नुक़सान होगा । इसी तरह विश्व अर्थव्यवस्था में एक साल में श्रम संबंधी आय में 2.25 अरब डॉलर का नुक़सान होता है । विश्व बैंक ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि 2013 में बाहरी और घर के अंदर वायु प्रदूषण जनित बीमारियों के चलते तक़रीबन पचपन लाख लोगों की मौत हुई ।

लांसेट पत्रिका का कहना है कि कोयला से चलने वाले बिजली संयंत्र भी वायु प्रदूषण को बढ़ावा दे रहे हैं । वायु प्रदूषण में उसका अनुपात पचास फ़ीसद है । उचित होगा कि भारत सरकार वायु प्रदूषण की रोकथाम के लिए प्रभावकारी राष्ट्रीय योजना बनाए और उसका कड़ाई से पालन कराए ।

(सा० : जनसत्ता)

आश्चर्यजनक किन्तु सत्य

■ जागृति श्रीवास्तव

ईश्वर की बनायी हुई इतनी बड़ी दुनिया में कभी-कभी ऐसी चीज़ें दिखलायी पड़ती है जो आश्चर्यजनक लगती हैं, मगर होती हैं सत्य । प्रस्तुत है इस संबंध में रोचक जानकारी।

केकड़ों का जमावड़ा

रातों-रात यदि पूरा आइलैंड केकड़ों से भर जाए तो आप सहसा विश्वास नहीं करेंगे । मगर यह हक़ीक़त है । आस्ट्रेलिया में एक द्वीप है क्रिसमस द्वीप जिसके एक छोर पर विशाल जंगल है, जबकि दूसरे छोर पर भारतीय महासागर स्थित है । इस द्वीप का क्षेत्रफल 52 वर्गमील तथा जनसंख्या लगभग 2000 है । प्रतिवर्ष प्रजनन काल में इस द्वीप पर बेशुमार केकड़ों का जमावड़ा होता है तथा उनकी संख्या 12 करोड़ तक पहुंच जाया करती है ।



मनुष्यों के आवास, होटल, रेस्तरां, बस स्टॉप, वृक्ष आदि कोई भी स्थान इनसे नहीं बचता । सड़कों पर भी ये इतनी संख्या में रेंगते हुए चलते हैं कि वाहन के पहिये से दब जाने से पूरा मार्ग ख़ून से लाल हो जाता है । कुदरत का यह नज़ारा देखने के लिए हर साल काफ़ी संख्या में दूर-दूर से पर्यटक यहां आना नहीं भूलते ।

बदबूदार फूल

संसार में विभिन्न आकार-प्रकार के सुन्दर तथा सुगंधित फूल पाये जाते हैं, मगर इनमें सबसे बड़े तथा सबसे छोटे फूल के संबंध में क्या आप जानते हैं ?

रेफ्लेसिया दुनिया का सबसे बड़ा और वाल्फिया कोलंबियाना सबसे छोटा फूल माना जाता है । इनमें मुख्य रूप से मलेशिया, इंडोनेशिया तथा भारतवर्ष के चेरापूंजी जैसे पूर्वोत्तरी भूभाग में बहुतायत से पाया जाने वाला रेफ्लोसिया फूलों में आकार की दृष्टि से सबसे विशाल तथा दुर्गंधयुक्त पुष्प है । दलदली इलाक़ों में उत्पन्न होने वाला यह एक परजीवी पौधा है जिसका फूल वनस्पति जगत के सभी पौधों के फूलों से बड़ा लगभग एक मीटर व्यास का होता है ।

इसका वज़न लगभग 10 किलोग्राम होता है । इसकी त्वचा छूने में मांस की तरह लगती है जिससे सड़े हुए मांस की तरह बदबू आती है । इसकी उत्पत्ति किसी संक्रमित पेड़ की जड़ से होती है तथा इसे पूरी तरह खिलने में नौ से इक्कीस महीने लगते हैं हालांकि इसका जीवनकाल सिर्फ़ पांच से सात दिनों का होता है । वे दूसरे पौधों की जड़ों से अपना भोजन चूसते हैं ।

दूसरी तरफ़ वाल्फिया कोलंबियाना नामक दुनिया का सबसे छोटा फूल आकार में इतना सूक्ष्म होता है कि इसे माइक्रोस्कोप (खुर्दबीन) की सहायता से देखा जा सकता है । इसके एक फूल का वज़न नमक के कण के बराबर होता है । इसमें जड़, टहनी अथवा पत्ती नहीं पायी जाती तथा यह शांत एवं स्वच्छ तालाब में पाया जाता है ।

सैनिक चींटी

साधारण चींटियों की लंबी क़तार हम घरों में सामान्यत: देखते हैं । ये किसी को नुक़सान नहीं पहुंचाती लेकिन सैनिक चींटियां (आर्मी एंट्स) को विश्व के सबसे ख़तरनाक इंसेक्ट्स में गिना जाता है । ये सदैव झुंड में रहती हैं तथा मिलकर शिकार करती हैं । इनके जबड़े धारदार कैंची की तरह होते हैं जिससे ये मोटी चमड़ी वाले जीवों को आसानी से काट खाती हैं । घर में मौजूद साधारण चींटियां अपना आवास बनाती हैं जहां वे खाद्य सामग्री एकत्र करने तथा अंडा देने का काम करती है लेकिन सैनिक चींटियां कभी भी एक स्थान पर नहीं ठहरती।

एक स्थान पर खाद्य पदार्थ इकट्ठा करने के बजाय ये रास्ते में जो कुछ भी मिलता है, उसे ही फितरतन खाती चलती हैं । अफ़्रीका में पायी जाने वाली ये चींटियां सबसे ख़तरनाक होती है तथा उनके एक झुंड में दो से पांच करोड़ चींटियां सम्मिलित होती हैं ।

तूफ़ान क्यों आते हैं ?

जब नमी से भरी हुई ढेर-सी गर्म हवा तेज़ी से ऊपर की ओर उठती है तब तूफ़ान आते हैं । तुमने तूफ़ान की शुरुआत से पहले हवा को तेज़ होते हुए देखा होगा । जब बादल बड़े होते जाते हैं और गहरे होते हुए आसमान में अंधेरा छाने लगता है । ये तूफ़ान के लक्षण हैं ।

बादलों के अंदर पानी के कण तेज़ी से घूमते हैं और आपस में टकराते हैं, जिससे बिजली पैदा होती है । बिजली पैदा होने का काम तब-तक चलता रहता है जब तक वह बड़ी-सी चिंगारी बनकर एक बादल से दूसरे बादल तक होती हुई धरती तक ज़ोरदार चमक बनकर कौंध नहीं जाती ।

बिजली में गरज और चमक एक साथ होती है । चमक पहले दिखायी देती है और गरज बाद में सुनाई पड़ती है । ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्रकाश की गति ध्वनि की गति से तेज़ होती है और चमक हमारे पास तक आवाज़ से पहले पहुंच जाती है । बिजली, पानी और तूफ़ान से बचने के लिए किसी ऊंचे पेड़ के नीचे खड़े हो जाना उचित नहीं है, क्यों कि बिजली धरती पर गिरते समय अक्सर किसी ऊंचे वृक्ष का सहारा ले लेती है । आसमान से गिरती हुई बिजली हमें



नुकुसान पहुंचा सकती है । बिजली चमकते समय जब आकाश में इधर-उधर गुज़रती है तो आस-पास की हवा गर्म हो जाती है । यह गर्म हवा तेज़ी से फैलती है तो गड़गड़ाहट की तेज़ आवाज़ सुनाई देती है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

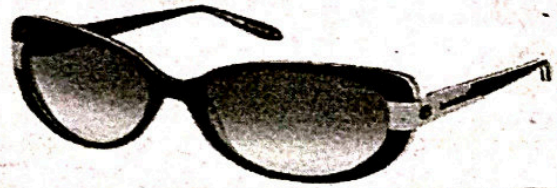



Asian Optics

a multibrand showroom

SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184

Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

अक़ायद व इबादात पर हमारी अहम पुस्तकें

आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	50.00
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	70.00
एकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	35.00
एक ईश्वर की धारणा	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	40.00
परलोक की छाया में	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	90.00
पहेली जीवन की	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	12.00
रिसालत	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	45.00
लोगो: हिसाब का समय निकट आ चुका है	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	14.00
ख़ुदा की गुलामी इंसान की बुलन्दी	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
जीवन मृत्यु के पश्चात्	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
बनाव और बिगाड़	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
शान्ति-मार्ग	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	15.00
सोचने की बातें	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
प्यारी माँ के नाम इस्लामी संदेश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	07.00
मानव जीवन और परलोक	शोबा-ए-दावत	22.00
मुक्ति-मार्ग	इनामुर्रहमान ख़ाँ	10.00
मौत के बाद क्या?	डॉ० शाहिद अली	10.00
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल इस्लाम	60.00
सत्य की खोज	मौलाना वहीदुद्दीन खाँ	16.00
नबी करीम (सल्ल०) की दुआएँ (पाकेट साइज़)	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	64.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	खुर्रम मुराद	22.00
रोज़ा और उसका असली मक़्सद	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
इबादत	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम में पाकी और सफाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	20.00
नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इमान की कसौटी	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
खुतबाते हरम	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	12.00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

Posted on 20-21 March 2017
April 2017
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.03.2017
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी साप्ताहिक की राष्ट्रीय पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017
Posted in the P.S.O. (Periodical Channel, New Delhi-

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

कान्ति

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

पढ़िए और पढ़ाइए

जो केवल समाचार ही न दे

- बल्कि बताए समाचारों का मर्म और आगे-पीछे का हाल
- देश व समाज की उन्नति के लिए प्रस्तुत करे ठोस उपाय
- प्रस्तुत करे इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ होने वाले दुष्प्रचार का तोड़
- सामने लाए सही स्थिति और अवगत कराये वास्तविकताओं से
- रखे ध्यान नैतिक मूल्यों का और मार्गदर्शन करे भलाई व कल्याण की ओर

सहयोग राशि :-

✧ प्रति कॉपी 5/= ✧ छहमाही 125/= ✧ वार्षिक 250/=

एजेंसी और ग्राहक बनने के लिए सम्पर्क करें ।

KANTI WEEKLY

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-25
Phone : 09818799223, 011-26949430
E-mail : kantiweekly@hotmail.com